मेरा नाम रावण है

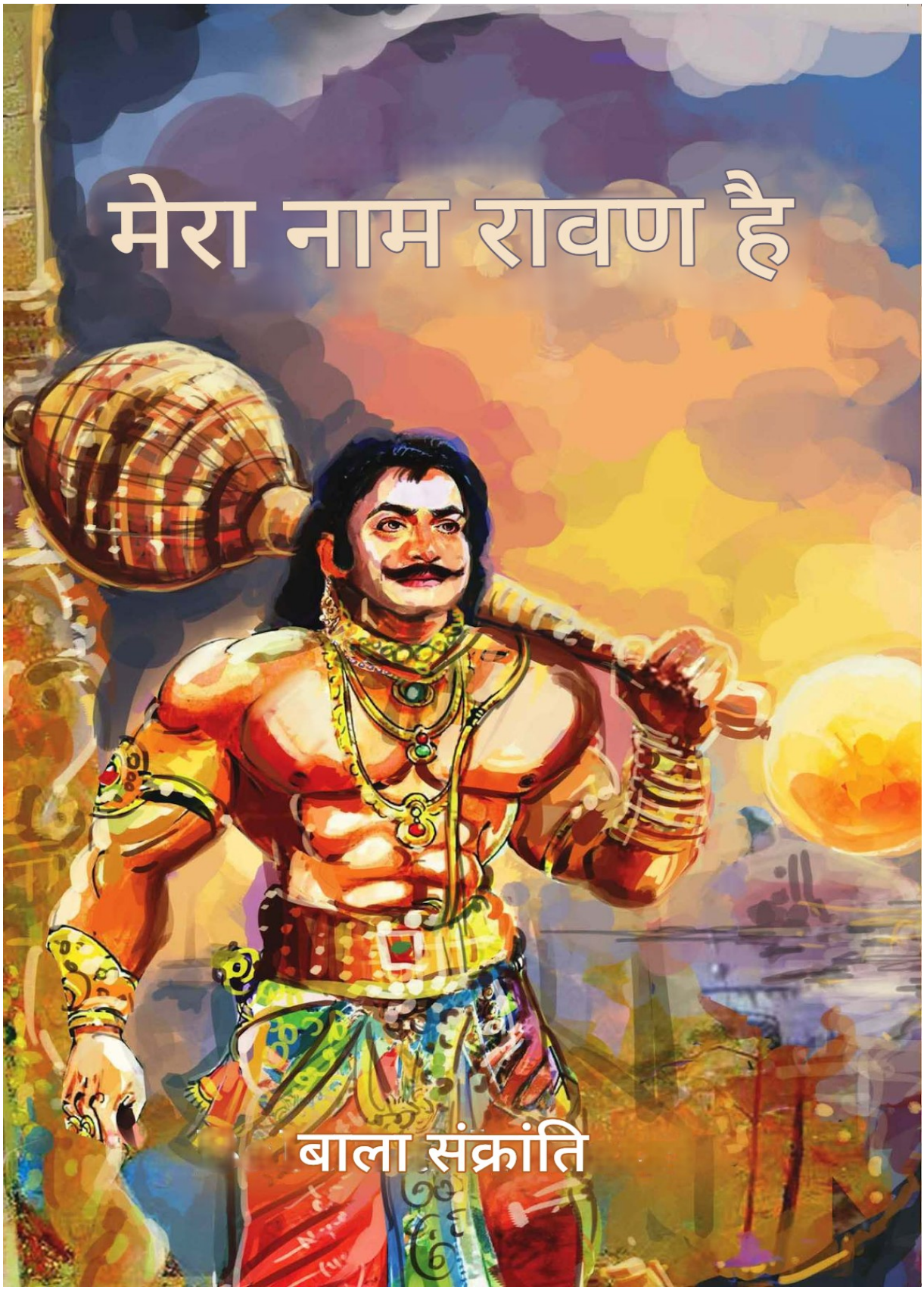

बाला संक्रांति

प्रशंसा के लिए मेरा नाम रावण है

रावण कथा सुनाता है और ऐसे रहस्य उजागर करता है जो वाल्मीकि को भी नहीं पता थे... इसी अवसर पर, हम बाला वेंकटेश्वर राव संकुरात्रिजी के प्रयासों के लिए उन्हें मंगलाशासनम अर्पित करते हैं!
- श्री श्री श्री चिन्ना जीयर स्वामीजी

मुझे यह पुस्तक पढ़कर बहुत आनंद आया और मेरी कामना है कि भक्ति का यह ग्रंथ दूर-दूर तक पहुंचे। मैं सभी से आग्रह करता हूं कि वे श्री बाला वेंकटेश्वर राव संकुरात्री द्वारा अपने शब्दों में प्रस्तुत किए गए त्रेता युग के इस समृद्ध वर्णन का आनंद लें।

– Sri Sri Sri Vidyaranya Bharathi Swamiji

किसी व्यक्ति के लिए प्राचीन ग्रंथ को इस नए दृष्टिकोण से पुनर्लेखन करना तब तक संभव नहीं है जब तक कि उसके पास विषय के प्रति सर्वोच्च स्तर की रुचि, शोध और गहन अध्ययन के साथ-साथ असाधारण समर्पण न हो। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह रामायण रावणब्रह्मा के दृष्टिकोण से लिखी गई है और इस पुस्तक को पढ़ते समय मैं कई बार आश्चर्यचकित हुआ।
- श्री तनिकेला भरणी, भारतीय फिल्म अभिनेता, लेखक और निर्देशक

यह साहित्यिक कृति उत्कृष्ट है और निःसंदेह इस पुस्तक में अपार संभावनाएं हैं। रावण द्वारा इस पुस्तक का वर्णन करने का विचार कल्पना से परे है और इसे पढ़ते समय मैं प्राचीन काल में खो गया।
मैं पूरी दुनिया को इस पुस्तक को पढ़ने और सबसे प्राचीन दस्तावेजी इतिहास की यादों को जानने के लिए रामायण मार्ग पर श्रीलंका की यात्रा करने की सलाह देता हूं।
– माननीय. इसुरा देवप्रिया, मुख्यमंत्री, पश्चिमी प्रांत, श्रीलंका

“मेरा नाम रावण है” नामक रचना में रावण के शासनकाल के दौरान और उससे पहले भी श्रीलंका की महानता का स्पष्ट वर्णन है। रावण के इस धरती पर आने और श्रीलंका को ईश्वर द्वारा सौंपे गए अपने कार्य को पूरा करने के लिए पवित्र भूमि के रूप में चुनने का कारण बखूबी लिखा गया है।

– माननीय. उदय नानायक्कारा, अध्यक्ष श्रीलंका पर्यटन संवर्धन ब्यूरो, श्रीलंका

प्रस्तावना

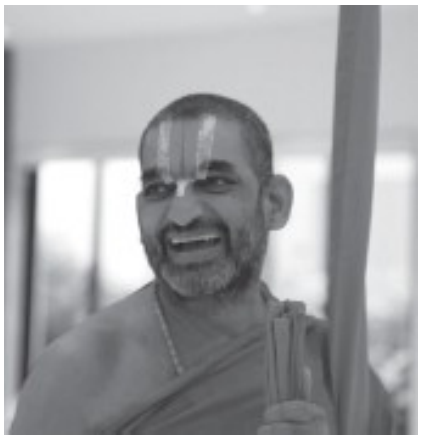

श्री श्री चिन्ना जीयर स्वामीजी

श्री रामायण महाकाव्य के अनेक संस्करण हैं। इस कहानी ने अनगिनत कलाकारों को प्रेरित किया है और आज भी करती आ रही है। महाकाव्य के पात्रों या लेखकों के अलग-अलग दृष्टिकोणों को समय-समय पर विभिन्न संस्करणों में उजागर किया गया है। इस पुस्तक में रावण के दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

रावण कथा सुनाता है और ऐसे रहस्य उजागर करता है जो वाल्मीकि को भी नहीं पता थे। रावण कहता है कि उसने जानबूझकर "बुराई" का रूप धारण किया है ताकि "यह शाश्वत पाठ पढ़ा सके कि बुराई हमेशा अच्छाई से पराजित होगी।" हम मनुष्यों के लिए अच्छी बात यह है कि रावण ने अपने वरदानों में मनुष्यों से सुरक्षा का उल्लेख करना नहीं भूला, बल्कि भगवान को मानव रूप धारण करवाकर हमारी प्रजाति के प्रति हमारे "अभिमान" को और मजबूत किया। कथा इसी भाव से आगे बढ़ती है।

यदि इस पुस्तक का रावण हमें समस्त कल्याण के लिए अपनी मानवीय क्षमता का उपयोग करना सिखा सकता है, तो यह निःसंदेह स्वागत योग्य होगा। हम अपने मन का उपयोग कैसे करते हैं, यह बहुत कुछ हम पर निर्भर करता है। हम भगवान में भी दोष देख सकते हैं और रावण में भी गुण देख सकते हैं। सभी में अच्छाई देखना, सभी की अच्छाई का जश्न मनाना और सभी से अच्छाई सीखना निःसंदेह स्वागत योग्य है। केवल सावधानी यह है कि हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अच्छे और बुरे के बीच का नैतिक मापदंड न टूटे। इसी के साथ, हम बाला वेंकटेश्वर राव संकुरात्रिजी के इस प्रयास के लिए मंगलाशासनम अर्पित करते हैं!

श्रीमननारायण की जय हो!

ASHIRVAADAM

Sri Sri Sri Vidyaranya Bharathi Swamiji

श्री विद्या शंकर

दिनांक: 12.10.2017

श्री बाला वेंकटेश्वर राव संकुरात्रि को नारायण स्मरण पूर्वक आशीर्वादम्।

यदि वैकुंठ का द्वारपाल इतना महान और समर्थ है, तो स्वामी श्री राम की समर्थता तो निश्चित ही होगी, यह सोचना ही पड़ता है। किसी भक्त का गुणगान करना स्वयं भगवान का गुणगान करने के समान है। रावण और उसके विशाल कारनामे भगवान श्री राम और उनकी समर्थता का प्रमाण मात्र हैं।

कोई व्यक्ति वास्तव में आर्थिक (अर्थशास्त्र), राजकीय (राजनीति), वास्तु शास्त्र (सिविल इंजीनियरिंग), विमान (विमानन), ज्योतिष (खगोल विज्ञान और ज्योतिष), आयुर्वेद (चिकित्सा विज्ञान), चतुर्वेद (चार वेद) का ज्ञाता होने के साथ-साथ संगीत और शतरंज का रचयिता कैसे हो सकता है? रावण अत्यंत अनुशासित था और उसने घोर तपस्या से भगवान ब्रह्मा और भगवान शिव दोनों को प्रसन्न किया था, जिससे उसे दोनों से अनेक वरदान प्राप्त हुए थे। रावण इतना बहुमुखी था कि उसका वर्णन करना और उस पर विश्वास करना भी असंभव था। उसकी क्षमता इतनी विशाल थी कि ऐसा लगता था मानो उसके एक शरीर पर दस सिर हों, या क्या सिर पुन: उगाने की उसकी क्षमता ने उसे यह उपाधि दिलाई थी?

मुझे यह पुस्तक पढ़कर बहुत आनंद आया और मेरी कामना है कि भक्ति का यह ग्रंथ दूर-दूर तक पहुंचे। मैं सभी से आग्रह करता हूं कि वे श्री बाला वेंकटेश्वर राव संकुरात्री द्वारा अपने शब्दों में प्रस्तुत किए गए त्रेता युग के इस समृद्ध वर्णन का आनंद लें।

इस पुस्तक में रामायण के ऐतिहासिक पात्रों से संबंधित 50 से अधिक स्थानों का सुंदर वर्णन किया गया है और ये निश्चित रूप से श्रीलंका की तीर्थयात्रा करने वाले किसी भी हिंदू श्रद्धालु के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

हम्पी क्षेत्राधिपति श्री विरुपाक्ष स्वामी, देवी श्री पम्पा देवी और श्री भुवनेश्वरी देवी की ओर से आपको और इस रचना में योगदान देने वाले सभी लोगों को आशीर्वाद और शुभकामनाएं।

एति नारायण स्मरणम्

श्री श्री श्री जगद्गुरु शंकराचार्य

श्री हम्पी विरुपाक्ष विद्यारण्यम

महा संस्थानम

SRI VIDYARANYA BHARATHI SWAMIJI

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना

Ashirvaadam

1 परिचय

2. जया और विजया पर श्राप

3. मेरा जन्म

4. मेरी कार्य योजना

5. लंकाधीश्वर के रूप में रूपांतरित होना

6. मेरा राज्य

7. राम और सीता की पहचान करना

8. बुराई की राह पर चलने का समय

9. मेरी ओर से उनकी अफवाहों की पुष्टि

10. मैं चाहता था कि सीता खुश रहे।

11. रामा सुराग सुलझा रहा है

12. संदेशवाहक से मिलने का समय

13. अगले राजा की पहचान करना

14. Tuning Vibhishana

15. मेरा प्यारा दुश्मन

16. पौराणिक संरचना

17. समझौते का आह्वान

18. इसके विपरीत

19. मेरी माँ का फैसला और मेरा फैसला

20. अंतिम आह्वान और युद्ध सायरन

21. अंतिम युद्ध भाग 1

22. अंतिम युद्ध भाग 2

23. अंतिम युद्ध भाग 3

24. मेरी समीक्षा

25. अंतिम युद्ध भाग 4

26. अंतिम युद्ध भाग 5

27. अंतिम युद्ध भाग 6

28. अंतिम युद्ध भाग 7
29. अंतिम युद्ध भाग 8
30. मेरी अंतिम समीक्षा
31. अंतिम युद्ध भाग 9
32. अंतिम युद्ध भाग 10
33. मिशन सफल हुआ
34. श्रीलंका में रामायण मार्ग
35. पुस्तक में नामों की सूची
स्वीकृतियाँ
कॉपीराइट

परिचय

मेरा नाम रावण है

हाँ मैं हूँ*the* रावण।

सीता का अपहरण मैंने ही किया था, अंजनेय की पूंछ में आग मैंने ही लगाई थी और राम से युद्ध मैंने ही किया था। आप सोच सकते हैं कि मैं पागल हूँ। मुझे परवाह नहीं। आप सोच सकते हैं कि मेरा होना बुरा है। फिर भी मुझे परवाह नहीं... सच तो यह है कि मैं महान हूँ और मेरा होना लगभग असंभव है।

चदरंगम (शतरंज) का खेल मैंने बनाया था। यूं ही। मैंने इसे एक दिन मनोरंजन के लिए, अपनी प्यारी पत्नी मंदोदरी के साथ खेलने के लिए बनाया था और यह आज भी इस ग्रह पर सबसे बौद्धिक खेल है।

संगीत की धुनें मैंने ही गढ़ी थीं। आप इसे चाहे जो नाम दें, चाहे कर्नाटक संगीत की धुनें हों, हिंदुस्तानी धुनें हों या पश्चिमी धुनें। आधुनिक युग के लोग चाहे जो नाम दें, इन धुनों को दुनिया से परिचित कराने वाला मैं ही था। आपमें से कुछ लोग 'सा रे गा मा' गुनगुनाते हैं और कुछ लोग 'दो रे मी'। खैर, अगर आप संगीत के इतिहास में गहराई से उतरेंगे, तो पाएंगे कि इन सबका मूल मुझसे ही जुड़ा है।

मैं विमान शास्त्र का स्वामी हूँ। मैंने ही इस मानवजाति को उड़ना सिखाया है। यकीन मानिए, यह आपके राइट बंधुओं ने नहीं सिखाया। मैंने ही इस दुनिया को खगोल विज्ञान और ज्योतिष से परिचित कराया है।

मैं इस दुनिया का सबसे महान प्रशासक हूँ। क्या आप जानते हैं कि मेरे राज्य, लंका में कोई भिखारी नहीं था? राज्य के सबसे गरीब व्यक्ति को भी सोने की थाली में भोजन मिलता था। विश्व स्तरीय शहर, जो पृथ्वी पर किसी अन्य राज्य में नहीं थे, मेरे देश, लंका में थे। लंका हरियाली, नदियों, मानव निर्मित जलमार्गों, कुओं और झीलों से भरपूर था। मेरे राज्य में हर दिन एक उत्सव जैसा होता था। नागरिक हर शाम गीत गाते, नाचते, सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते, नाटक और नुक्कड़ नाटक करते थे। वे हर दिन खुशी और सुकून से काम पर जाते थे, कष्ट से नहीं। मेरे राज्य में समानता का अधिकार था। कोई मुझसे नफरत नहीं करता था और मैं अपने नागरिकों के लिए सबसे सम्मानित और प्रिय राजा था। अन्य राज्य मेरे लंका को श्रीलंका कहने लगे, जिसका अर्थ था समृद्धि का द्वीप और खजाने का द्वीप।

जब हनुमान पहली बार मेरे राज्य में आए, तो वे चकित रह गए। वे अपनी हैरानी से जूझ रहे थे, उनकी आँखें फटी रह गईं, वे समझ नहीं पा रहे थे कि कहाँ देखें; क्योंकि वहाँ सब कुछ अत्यंत सुंदर और भव्य था। लंका नगर इतना अद्भुत था कि उन्हें एक बच्चे की तरह, अपने आप से बार-बार उस कार्य का स्मरण करना पड़ा, जो उन्हें कर्तव्य और उत्तरदायित्व के रूप में सौंपा गया था: सीता को खोजना और पाना।

कवि और कलाकार मेरी बहुमुखी प्रतिभा का वर्णन नहीं कर सके, इसलिए उन्होंने मुझे दस अलग-अलग भावों वाले दस सिरों के साथ चित्रित किया... यही रावण है।

मैं आपसे—जी हां, आपसे, जो इस पाठ को पढ़ रहे हैं या सुन रहे हैं—एक सरल और छोटा सा प्रश्न पूछना चाहता हूं: क्या आपको लगता है कि उन महान गुणों वाला राजा केवल अपनी वासना को संतुष्ट करने के लिए किसी महिला का अपहरण करेगा?

आंखें बंद करके सोचिए। क्या सीता को लंका लाने का यही एकमात्र कारण था? आगे पढ़ने से पहले कुछ देर सोचिए। अगर आप ऐसा करेंगे, तो आपको एहसास होगा कि ऐसा करने के पीछे कुछ गुप्त कारण जरूर होंगे।

मुझे वह कहानी सुनाने दीजिए जिससे आपमें से कई लोग परिचित नहीं हैं। मैं यह कहानी आपको इसलिए सुना रहा हूँ ताकि आप वास्तविकता को समझ सकें। मुझे किसी को कोई स्पष्टीकरण या औचित्य देने की आवश्यकता नहीं है और यदि मैं इसे आपके साथ साझा करना चुनता हूँ तो इसका कारण यह है कि मैं रावण हूँ। मैं श्री राम का सबसे बड़ा भक्त हूँ।

जी हाँ। आपने जो पढ़ा वह सही है। मैं श्री राम का परम भक्त हूँ। वही श्री राम, श्री हरि, श्री महा विष्णु, वैकुंठधीश हैं जिन्होंने मुझे रावण के रूप में इस पृथ्वी पर भेजा। मेरा मूल नाम जया है और मेरे भाई का नाम विजया है। हम दोनों महा विष्णु के निवास स्थान वैकुंठम के द्वारपाल थे। यदि हम दोनों रावण-कुंभकर्ण के रूप में पृथ्वी पर आए, तो यह महा विष्णु के निर्देशानुसार अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने के लिए था।

संपूर्ण रामायण श्री महा विष्णु का जादुई सत्य है जो इस पृथ्वी पर प्रकट हुआ ताकि आप सभी मनुष्यों को सही दिशा में निर्देशित किया जा सके।

जया और विजया पर श्राप!

श्री महा विष्णु परम सत्ता हैं। उन्हें समझना, उन्हें गूढ़ करना अत्यंत कठिन है। उनके प्रत्येक कार्य के अनेक कारण होते हैं। श्रीदेवी और नागतलपा के बाद, मैं और मेरा भाई ही परम सत्ता के सबसे निकट थे, वैकुंठ के द्वारपालों के रूप में द्वारपालों के ठीक बाहर निवास करते हुए।

वह दिन आज भी मुझे ताजा है। भगवान कभी किसी आगंतुक को मना नहीं करते। उनके द्वार, जहाँ मैं उनका राजरक्षक था, उनके भक्तों और शिष्यों के लिए हमेशा खुले रहते हैं। यह पहली बार था, और वास्तव में एकमात्र बार था, जब भगवान ने हमें अंदर बुलाया और कहा कि वे विश्राम करना चाहते हैं और कोई व्यवधान नहीं चाहते। मैंने उनका आदेश स्वीकार किया और अपने पद पर वापस चला गया। फिर भी एक बात मुझे परेशान कर रही थी: मैंने भगवान को कभी विश्राम करते नहीं देखा था। यदि ब्रह्मांड के नायक विश्राम करेंगे, तो ब्रह्मांड कैसे चलेगा? मैं उनके कहे के पीछे का कारण नहीं समझ पाया और बस आदेश का पालन किया।

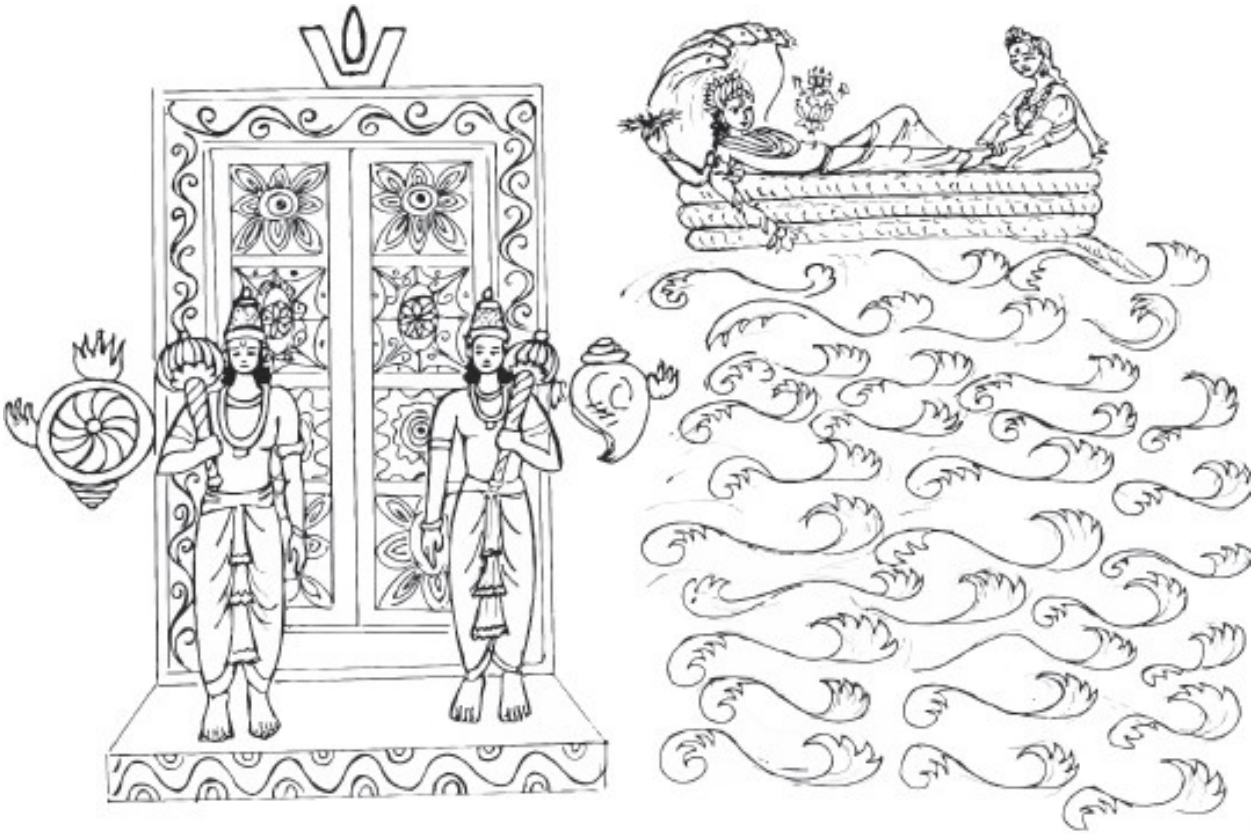

फिर अप्रत्याशित अतिथि आए - सनका, सनत-कुमार, सनंदना और सनतना, जिन्हें कुमार या सनकनंदन कुमार के नाम से जाना जाता है। मुझे और मेरे भाई विजय को इन महान मुनियों को देखकर बहुत

प्रसन्नता हुई। उन्हें ब्रह्मा से वरदान प्राप्त था - कि उनकी आयु पाँच वर्ष से अधिक नहीं होगी। इस प्रकार, अपार ज्ञान के बावजूद, उनमें हमेशा बच्चों जैसी चमक थी और कोई द्वेष नहीं था। उनमें लोभ, वासना, स्वार्थ नहीं था। वे हमेशा पाँच वर्ष के बच्चों की तरह पवित्र थे। इन अद्वितीय गुणों के कारण वे बिना किसी बाधा के जहाँ चाहें जा सकते थे और ब्रह्मांड में जिससे चाहें मिल सकते थे। जब वे इतने पवित्र थे, तो भगवान भी उन्हें क्यों रोकते?

लेकिन अफसोस, इस बार हम दुविधा में थे। मेरे स्वामी ने कहा था कि वे विश्राम कर रहे हैं और इन कुमारों को रोका नहीं जाना चाहिए। अब मैं क्या करूँ? उन्हें रोकना उनका अपमान होता और उन्हें अंदर आने देना मेरे कर्तव्य के विरुद्ध होता। निर्णय लेने का समय आ गया था। मैंने अपने कर्तव्यों और नौकरी पर बने रहने का निर्णय लिया।

लेकिन, जैसा कि अनुमान था, यह मेरे लिए एक असंभव स्थिति थी। कुमार मुझसे और मेरे भाई से बहुत क्रोधित थे क्योंकि बार-बार अनुरोध करने के बावजूद हमने उन्हें अंदर नहीं आने दिया था। परिणामस्वरूप, उन्होंने हमें श्राप दिया कि हम अपने प्रिय भगवान से अलग हो जाएँगे। न तो मुझे और न ही विजया को इतने बड़े श्राप की उम्मीद थी। हम स्तब्ध और निराश थे। तभी भगवान श्री हरि मुस्कुराते हुए प्रकट हुए, मानो उन्हें सब कुछ पता हो। उन्होंने कुछ समय कुमारों के साथ बिताया और कहा, “जब कोई कर्मचारी गलती करता है, तो गलती मालिक की भी होती है। उन्हें जो भी दंड मिलता है, वह मालिक को भी भुगतना पड़ता है। उसी प्रकार, जया-विजयों का मुझसे दूर रहना न केवल उनके लिए बल्कि मेरे लिए भी श्राप है।” महा विष्णु की बात सुनकर कुमारों ने कहा, “हम जानते थे, यह सब आपकी ही चाल थी जिसके कारण हमने इन प्रिय भक्तों को श्राप दिया। हम समझ गए कि यह लोक कल्याण के लिए था।” हमारी ओर मुड़ते हुए, कुमारों ने आगे कहा, “प्रिय जया और विजया, श्राप वापस नहीं लिया जा सकता, हालांकि आप दोनों मिलकर द्वारपालक (द्वार रक्षक) के अपने मूल पद पर वापस जाने से पहले निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक को चुनकर पूरा कर सकते हैं।”

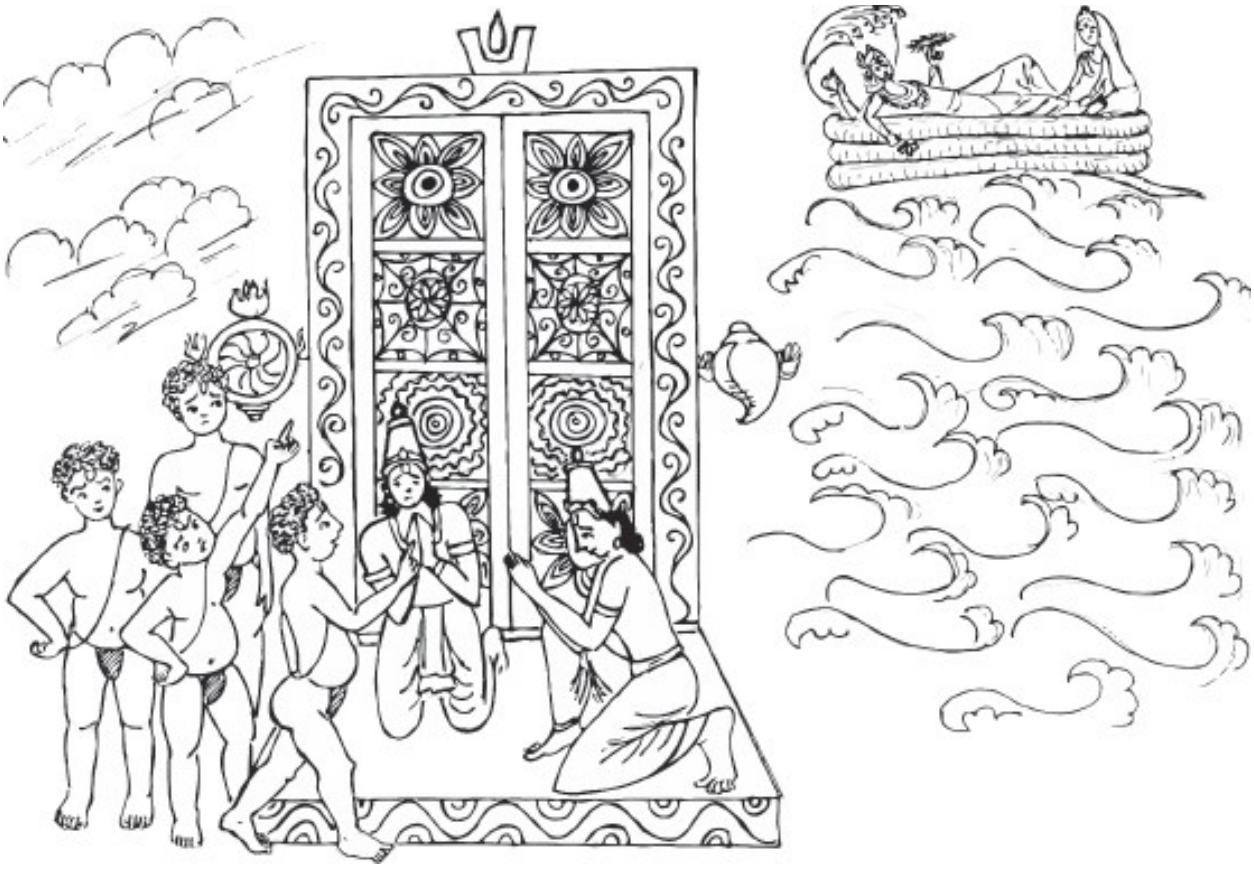

सात जन्मों तक अच्छे पुरुषों के रूप में पृथ्वी पर महा विष्णु से दूर रहें और समय-समय पर मानव जाति को उपदेश दें कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है।

या

तीन जन्मों तक पृथ्वी पर महा विष्णु के शत्रु बनकर रहो और महा विष्णु द्वारा मारे जाओ। तुम्हारे और श्री महा विष्णु के बीच घटित होने वाले घटनाक्रम मानव जाति के इतिहास में दर्ज हो जाएंगे और इस प्रकार मनुष्य तुम्हारे संदर्भों का उपयोग ज्ञान प्राप्त करने में करेंगे।

क्या अच्छा है और क्या बुरा है?

दोनों ही मामलों में आप मानवजाति को एक अच्छा जीवन जीने का तरीका सिखाएंगे। आपकी कहानियां मनुष्यों के मन में हमेशा के लिए बसी रहेंगी और उनके अच्छे जीवन स्तर और नैतिकता को निर्धारित करने में मार्गदर्शक का काम करेंगी। और इतना कहकर कुमार परिवार गायब हो गया।

अब विजया और मैं समझ गए थे कि महा विष्णु ने विश्राम करने का बहाना बनाकर हमें दुविधा में क्यों रखा था। हमें इस बात की अत्यंत प्रसन्नता हुई कि भगवान ने हम दोनों को इस नेक कार्य के लिए चुना। हमने महा विष्णु के पास शीघ्र लौटने के इरादे से दूसरा विकल्प चुना।

समय के साथ हम पृथ्वी पर मानव जाति से मिलने आए और इस प्रकार आप कृत युग में हिरण्यकश्यप और हिरण्याक्ष के बारे में जानते हैं; त्रेता युग में रावण और कुंभकर्ण, द्वापर युग में शिशुपाल और दंतवक्त्र।

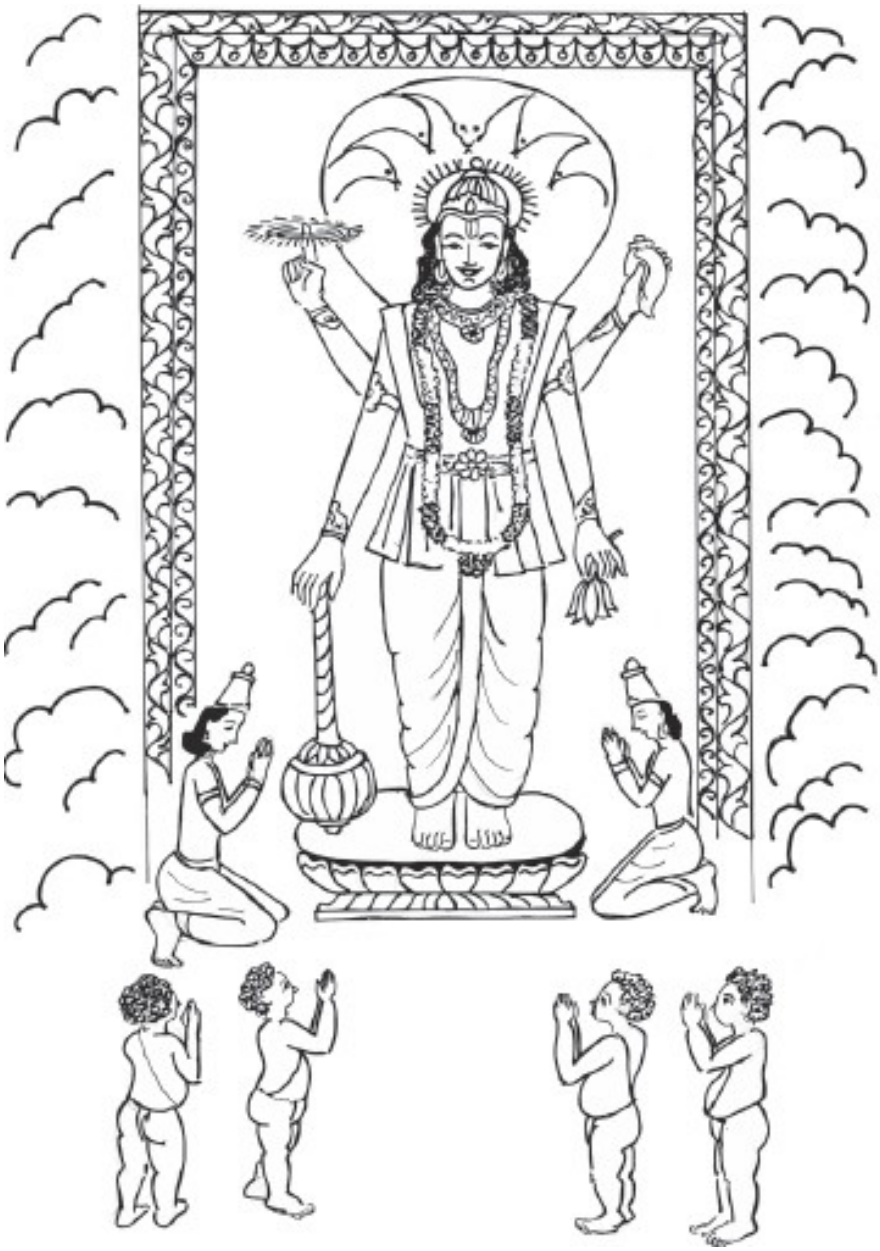

अगली बार जब आप तिरुमाला मंदिर या किसी अन्य विष्णु मंदिर में जाएँ, तो गर्भगृह (मुख्य मंदिर कक्ष) के प्रवेश द्वार पर स्थित हमारी मूर्तियों या चित्रों को देखना न भूलें। हम जय-विजय हैं। हम रावण-कुंभकर्ण हैं।

मेरा जन्म

त्रेता युग में मेरा जन्म श्री विश्वराव महर्षि और श्रीमती कैकसी के सबसे बड़े पुत्र के रूप में हुआ था। मेरे भाई-बहन कुंभकर्ण (विजय), विभीषण और सूर्पनखा थे। मेरी सौतेली माँ मंदाकिनी और मुझसे बड़े सौतेले भाई कुबेर भी थे, जो धन के देवता के रूप में मनुष्यों में बहुत लोकप्रिय थे और आज भी हैं।

इस प्रकार रावण के रूप में मेरे दादा पुलस्त्य महामुनि थे और मेरे परदादा भगवान ब्रह्मा थे।

जन्म के पहले दिन से ही मुझे अपने जन्म का उद्देश्य पता था। लेकिन उस समय मुझे यह नहीं पता था कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए। हालांकि, मैं इस बारे में अपने परिवार के सदस्यों और शिक्षकों सहित किसी से भी बात नहीं कर सका। मेरा दैवीय उद्देश्य मेरे भीतर ही निहित था; और इसे मुझे ही साकार करना था।

दिन और साल तेज़ी से बीतते गए। मुझे अभी भी इस बात का कोई अंदाजा या योजना नहीं थी कि अपना काम कहाँ और कैसे शुरू करना है।

मैं अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था और मेरी मां काइकासी मेरी असफलता से परेशान थीं।

मेरी कार्य योजना

वह दिन मेरे बाकी दिनों की तरह ही था, बिल्कुल सामान्य, जब मेरे आस-पास के सभी लोग कुबेर नाम के एक व्यक्ति के बारे में फुसफुसाने लगे, जो मेरे पिता विश्वरावा महामुनि से आशीर्वाद लेने आया था। मैंने अपनी माँ से उसके बारे में पूछा और तब मुझे पहली बार अपनी सौतेली माँ और उसके बेटे, मेरे सौतेले भाई, कुबेर के बारे में पता चला।

दरबार में कुबेरा की खूब चर्चा हो रही थी, उनकी उपलब्धियों और कमाई की जमकर तारीफ हो रही थी। जाहिर तौर पर, वे सबसे बड़े व्यापारी थे। उनका अपना एक द्वीप था जिसका नाम लंका था।

तभी मेरे मन में एक विचार आया। कुबेरा अपनी उद्यमशीलता के माध्यम से जो कुछ उन्होंने बनाया था, उसी के कारण लोकप्रिय हुए थे। अगर मुझे उनसे भी अधिक प्रसिद्धि प्राप्त करनी है, तो मुझे और अधिक हासिल करना होगा। फिर भी, मुझे सहज रूप से यह एहसास था कि अगर मैं केवल उन्हीं की तरह धन कमाता रहूँ, तो मैं बस एक अच्छा व्यवसायी बनकर रह जाऊँगा और शायद किसी जगह का राजा बन जाऊँगा, और यह मेरे लिए पर्याप्त नहीं होगा, है ना? मैंने तय किया कि मैं जिस भी क्षेत्र में काम करना चुनूँ, वह विशिष्ट होना चाहिए—एक ऐसा क्षेत्र जो उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करे और उसमें चमक बिखेरे।

उस दिन की बदौलत, कुबेर की प्रेरणा से, मैंने अर्थशास्त्र और राजनीति का अध्ययन शुरू किया। मैंने कई किताबें पढ़ीं और उपलब्ध हर साहित्य का अध्ययन किया। मैंने कई संतों और गुरुओं से संपर्क किया, कई साल उनके शिष्य के रूप में बिताए और दुनिया भर में यात्रा करके जितना हो सके उतना ज्ञान प्राप्त किया। इस दौरान, मैंने विभिन्न विज्ञानों का भी अध्ययन किया।

कई वर्षों तक विभिन्न विषयों का निरंतर अध्ययन करने के बाद, मैंने आर्थिक (अर्थशास्त्र), राजकिया (राजनीति), व्यवहार (प्रशासन), वास्तु (सिविल इंजीनियरिंग), विमान (विमानन) और चतुर्वेदों (चारों वेदों) में महारत हासिल की। मैंने ब्रह्मा और शिव की श्रद्धापूर्वक तपस्या की। अपने खाली समय में, मैं ध्वनियों के साथ प्रयोग करता था और संगीत तथा आयुर्वेद का आविष्कार किया।

ब्रह्मा को मेरी तपस्या:

मैंने वर्षों तक अपने परदादा और मानवजाति के सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की तपस्या की। जिस दिन ब्रह्मा मेरी भक्ति से प्रसन्न हुए और वरदान देने का प्रस्ताव रखा, मैंने अमरता का वरदान मांगा। ब्रह्मा ने कहा, अमरता मेरी नसीब में नहीं है। इसलिए मैंने अपने वरदान को इस प्रकार संशोधित किया: मैंने कहा कि मैं वृद्धावस्था या किसी अन्य प्राकृतिक मृत्यु से न मरना चाहता हूँ; मैं किसी भी प्रकार की स्वास्थ्य समस्या, किसी जानवर, पक्षी या कीट के हमले या किसी अन्य कारण से न मरना चाहता हूँ; मुझे किसी दुर्घटना, देवताओं के आदेश, राक्षसों या अलौकिक प्राणियों द्वारा भी न मारा जाए। अपने वरदान को संशोधित करते हुए, मैंने इस ब्रह्मांड में लगभग हर चीज का उल्लेख कर लिया, सिवाय आप, मानवजाति

के। और इस प्रकार ब्रह्मा ने मुझे मेरा वरदान प्रदान किया कि मृत्यु मुझे उन सभी विभिन्न तरीकों से प्रभावित नहीं करेगी जिनका मैंने उल्लेख किया था।

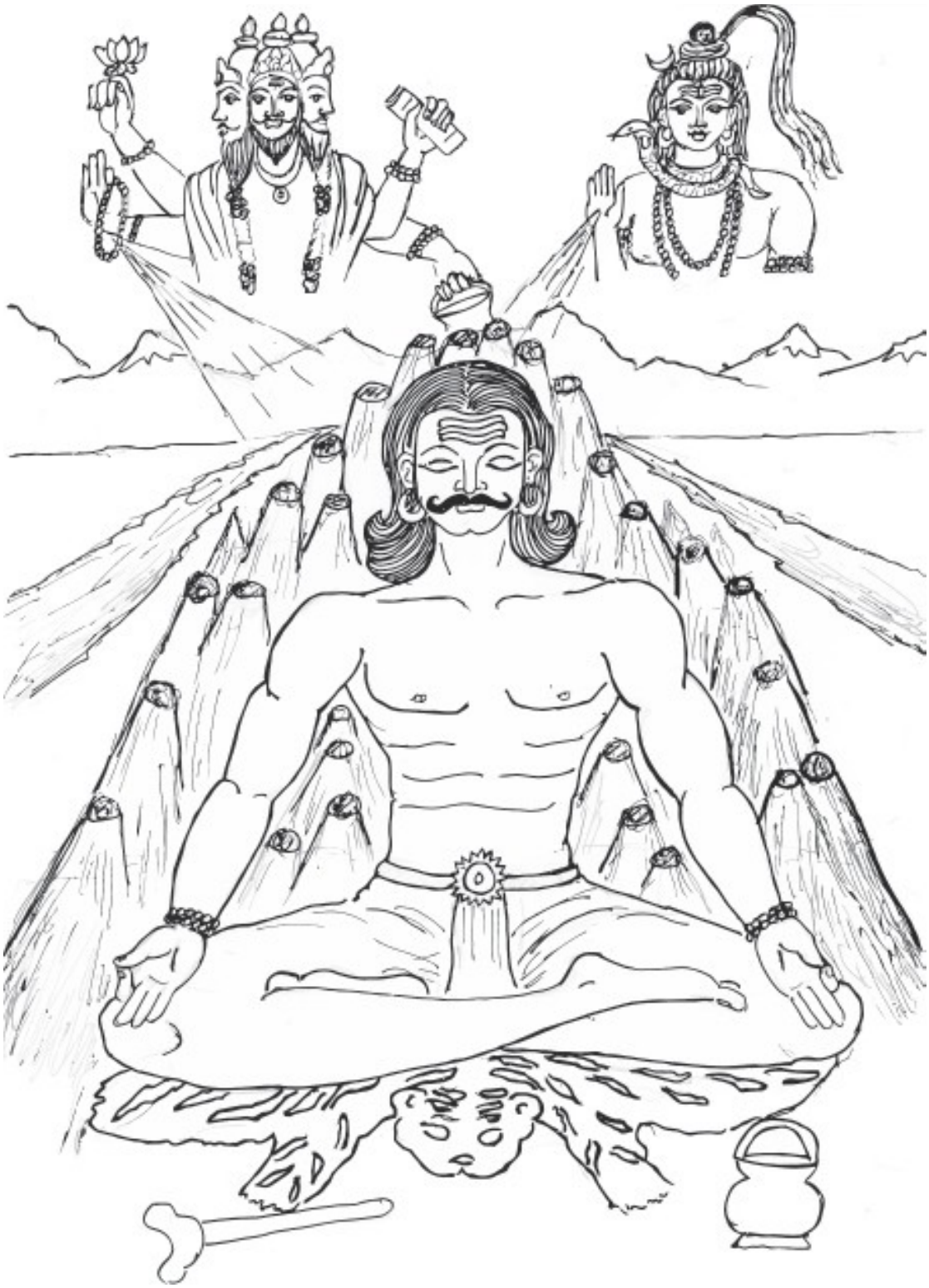

मैंने मृत्यु के हर संभव तरीके का वर्णन कर लिया था। फिर भी, एक छोटी सी कमी रह गई। मैंने मनुष्य द्वारा मृत्यु का उल्लेख नहीं किया था। मेरे परदादा समेत सभी को लगा कि मैं मनुष्यों का ज़िक्र करना भूल गया या उन्हें महत्वहीन समझा। अगर मैंने कीड़ों का भी ज़िक्र कर दिया, तो मैं तुम्हें, मेरे प्रिय मानवजाति, कैसे भूल सकता हूँ? तुम मेरे मन में बसे हुए थे, लेकिन ऐसा करने के पीछे एक विशेष कारण था।

पृथ्वी पर मेरे आने का उद्देश्य यह शाश्वत शिक्षा देना था कि बुराई पर अच्छाई की विजय अवश्य होगी। मैंने बुराई का रूप धारण किया और भगवान विष्णु ने अच्छाई का रूप। हम आपको यह दिखाना चाहते थे कि आप जैसे मनुष्य भी, जो अभी मुझे पढ़ या सुन रहे हैं, अच्छाई और सत्य के मार्ग पर चलकर अनंत बुराई पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। इस वरदान के कारण, मुझे केवल मनुष्य ही मार सकते हैं और यदि श्री हरि को मुझे मारना पड़े, तो उन्हें एक सामान्य मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आना होगा। इस समय मुझे लगा कि इससे आपको यह पता चलेगा कि अच्छाई और सत्य के मार्ग पर चलने से आप कितने शक्तिशाली हो सकते हैं।

तो, मेरे प्रिय मनुष्य, क्या तुम यहाँ कुछ समझ पाए? क्या तुम समझ गए कि मैंने ये असाधारण तपस्याएँ अपने लिए शक्ति प्राप्त करने के लिए नहीं कीं। मैंने वास्तव में ये तुम्हारे लिए कीं, मेरे प्रिय मनुष्य। मैंने तुम्हारी जाति के लिए तपस्या के माध्यम से असहनीय पीड़ा सहन की, ताकि तुम उस गौरव का अनुभव कर सको कि अखिलंद ब्रह्मांड नायक, श्री महा विष्णु ने इस छोटे से ग्रह पर एक मनुष्य का प्राण त्याग दिया।

शिव को मेरी तपस्या:

मैं जानता था कि शिव युद्ध और मृत्यु के देवता हैं। इसलिए, मैं जानता था कि सृष्टिकर्ता ब्रह्मा से वरदान लेना ही पर्याप्त नहीं था। मुझे संहारक शिव को भी निरंतर प्रसन्न करते रहना था। तभी मैं उस युद्धक्षेत्र का स्वामी बन पाऊंगा जहां प्रतिदिन नई-नई तकनीकें विकसित हो रही हैं। जब मैं युद्धक्षेत्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लूंगा, तभी महा विष्णु के साथ मेरा अंतिम युद्ध महायुद्ध (अंतिम युद्ध) होगा।

इस प्रकार, मैंने रावण के रूप में अपने पूरे जीवन भर भगवान शिव की पूजा की और उनकी तपस्या की। मैं अपनी नींद भले ही त्याग देता था, लेकिन शिव की पूजा कभी नहीं त्यागता था।

अब मैं पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली हूँ। अब मुझे केवल एक राज्य और एक विशाल सेना की आवश्यकता है ताकि मैं महायुद्ध के लिए स्वयं को तैयार कर सकूँ, जो मानव जाति के लिए वास्तविक सबक है।

लंकाधीश्वर के रूप में रूपांतरित होना

ब्रह्मा और महेश्वर से प्राप्त वरदान से मैं अजेय था; पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली। पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली व्यक्ति का राज्य भी सबसे शक्तिशाली होना चाहिए, है ना? पृथ्वी पर किसी भी भौतिक लाभ के लिए धन आवश्यक है। पृथ्वी का सबसे समृद्ध राज्य मेरे सौतेले भाई कुबेर का था। कुबेर का राज्य लंका है। अपने ज्ञान से मैं चतुराई से संसार का सारा धन अर्जित कर सकता हूँ। लेकिन इसे अर्जित करने की प्रक्रिया में, मैं कुबेर को भाट का एक अंश दिखाकर स्वयं की परीक्षा लेना चाहता हूँ।

मैं लंका गया और वहाँ के लोगों से बहुत प्रभावित हुआ। मैंने अपने संगीत और सिविल इंजीनियरिंग के कौशल से उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया। मैंने अपनी औषधियों से उनकी मदद की। फिर, अर्थशास्त्र और राजनीति के अपने विशाल ज्ञान के बल पर, मैंने अंततः कुबेर से लंका का सिंहासन छीन लिया।

लंका सुंदर और शक्तिशाली थी। मैंने इसे और भी अधिक सुंदर बनाने का निश्चय किया। सबसे पहले, मुझे एक ऐसा राज्य स्थापित करना था जिसके नागरिक महा विष्णु के साथ होने वाले महायुद्ध के दौरान मुझसे प्रेम करें और मेरा समर्थन करें। मुझे अपनी प्रजा से उतना ही प्रेम चाहिए जितना एक माँ अपने बच्चे से करती है। यह निःशर्त प्रेम होना चाहिए: उन्हें मेरा समर्थन करना चाहिए, मुझे क्षमा करना चाहिए और मुझसे प्रेम करना जारी रखना चाहिए, भले ही वे जानते हों कि मैं कुछ गलत कर रहा हूँ। मुझे इस लंका पर सर्वोपरि सम्मान के साथ शासन करने में सक्षम होना चाहिए। इस पवित्र भूमि पर जन्म लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति मेरी सहायता करेगा और इस प्रकार संपूर्ण विश्व को 'अच्छा क्या है और बुरा क्या है' समझने में सहायता करेगा। वे मेरे उद्देश्य में भागीदार होंगे और मैं शीघ्र ही अपने श्री हरि के पास पहुँच जाऊँगा। यह भूमि पृथ्वी पर सबसे पवित्र स्थान होगी, जो मेरे, मेरे प्रभु और दिव्य उद्देश्य की स्मृतियों को तब तक संजोए रखेगी जब तक मानव जाति इस ग्रह पर विद्यमान रहेगी।

मेरा राज्य

एक दिन मुझे परम सत्ता से युद्ध करना होगा। वह सत्ता अच्छाई और सत्य का प्रतीक है। इसका अर्थ है कि मुझे अच्छाई और सत्य दोनों के विरुद्ध लड़ना होगा। निःसंदेह, सत्य की विजय होगी और मेरी मृत्यु निश्चित है। यही मेरा भाग्य है और पहले से ही लिखा हुआ है। मुझे इसका सामना करना होगा और मैं करूँगा। लेकिन मेरा राज्य और मेरी प्रजा इसे कैसे स्वीकार करेंगे? मेरे बाद लंका की देखभाल कौन करेगा? इन सवालों के जवाब खोजना भी मेरा कर्तव्य है।

कुंभकर्ण (विजय) भी सत्य के विरुद्ध युद्ध में शहीद होने वाले हैं। इसलिए, मेरे पास विभीषण ही एकमात्र सहारा और मेरी चुनौती का संभावित समाधान बचा था। मैंने अपने सभी विकासात्मक और प्रशासनिक कार्यों में उन्हें शामिल करने का निश्चय किया। विभीषण स्वभाव से ही शीघ्र सीखने वाले, निर्णय लेने में कुशल और एक राज्य को बुद्धिमानी से संभालने और शासन करने के सभी गुणों से परिपूर्ण हैं।

मैंने निश्चय किया कि अब समय आ गया है कि मैं अपने नागरिकों को प्रसन्न करूँ। प्रसन्नता को बनाए रखने वाली एकमात्र चीज़ क्या है? मुझे अहसास हुआ कि यह गौरव है। अपने अस्तित्व और अपने निवास स्थान पर गौरव। लंका का पुनर्निर्माण करने का समय आ गया था। कुबेर के शासनकाल में, इस भूमि पर अधिकांश नागरिकों की सभी आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता था। फिर भी, केवल सेवाएँ प्रदान करना उन्हें मेरी ओर आकर्षित करने के लिए पर्याप्त नहीं था। मुझे ऐसे कार्य करने थे जिनसे उन्हें अपने अस्तित्व पर गौरव का अनुभव हो, मुझे ऐसे कार्य करने थे जिनसे न केवल उनकी प्रसन्नता बढ़े, बल्कि वे आश्चर्यचकित भी हों।

तो मैंने शुरुआत की। मैंने सोने से मढ़ी दीवारों और खंभों वाली इमारतें बनाईं, सीढ़ियाँ क्वार्ट्ज़ से बनीं और उनके किनारों पर रत्न जड़े हुए थे। उस दौरान, लोग कुओं से पानी निकालने के लिए रस्सियों का इस्तेमाल करते थे... मैंने कुओं तक जाने के लिए सीढ़ियाँ बनाईं। मैंने द्वीप के सभी प्रमुख शहरों को जोड़ने वाला भूमिगत सुरंगों का जाल बिछाया। मैंने सर्वश्रेष्ठ डिज़ाइनरों को चुना और यह सुनिश्चित किया कि मनमोहक दृश्य बनाए जाएँ। मेरी सड़कों पर अब दोनों ओर रोशनी थी; हर घर में सामाजिक समारोहों के लिए सड़कों की ओर उभरे हुए बिल्ली की आँख जैसे रत्नों से जड़े हुए आलीशान चबूतरे थे, जिन पर हीरे, क्रिस्टल और मोती जड़े हुए थे; घरों में हाथी और मोर के आकार के बेदाग चमकदार चांदी के प्रवेश द्वार थे; हर घर में एक पिछवाड़ा था जहाँ रसोई के बगीचे में घर के लिए आवश्यक सभी सब्जियाँ उगाई जाती थीं; महिलाओं को अपने कपड़ों को सजाने के लिए हीरे दिए जाते थे; अब हर तीन घरों में बच्चों के खेलने के लिए पार्क थे; इन पार्कों में रत्नों से जड़े हुए खेल के सामान और उपकरण थे; शाम और सुबह शहनाई और ढोल की धुनें बजती थीं।

मैंने कोई कसर नहीं छोड़ी और यह सुनिश्चित किया कि लंका स्वर्ग से भी बेहतर हो। लंका के हर इंच का पुनर्निर्माण पूरे जोश के साथ किया गया। लंका के लोग, मेरे लोग, जो सुखी जीवन जी रहे थे, अब और भी अधिक प्रसन्न थे।

इस पूरी प्रक्रिया में, हालांकि लोगों ने मुझे सर्वश्रेष्ठ माना, मैंने सभी कार्यों के क्रियान्वयन में विभीषण को शामिल किया था, इसलिए वे आम जनता के लिए मुझसे कहीं अधिक सुलभ थे। यह भी जानबूझकर किया गया था।

इस महान साम्राज्य के पास एक असाधारण सेना थी। इस प्रकार, द्वीप की चौबीसों घंटे, सातों दिन, हर मोर्चे पर इसकी शक्तिशाली सेना द्वारा रक्षा की जाती थी। इस सेना के पास निश्चित रूप से सबसे शक्तिशाली हथियार और गोला-बारूद थे। मेरी सेना इतनी शक्तिशाली है कि मेरे पुत्र मेघनाथ ने स्वर्ग के देवता इंद्र को पराजित किया और इस प्रकार उन्हें इंद्रजीत नाम मिला—इंद्र को पराजित करने वाला।

मुझे राहत मिली। मैंने एक योजना बनाई थी और उस पर काम शुरू कर दिया था। सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा था, यह देखकर मैं खुश और शांत था। ज़मीन चमक रही थी; मेरे पास सबसे अच्छे लोग नेतृत्व कर रहे थे और उनमें से हर कोई अपने कर्तव्यों और मेरी अपेक्षाओं के अनुरूप उच्च मानकों को जानता था—मैं पूर्णता से कम कुछ भी नहीं चाहता था। अब मैं निश्चिंत हो सकता था।

मैंने तपस्या और ध्यान में अधिक समय बिताना शुरू कर दिया, अंतिम युद्ध के लिए स्वयं को तैयार किया और श्री नारी के पृथ्वी पर आने की प्रतीक्षा करने लगा। मुझे यकीन नहीं था कि वे आ चुके हैं या नहीं। लेकिन मुझे पता था कि यदि वे आ चुके हैं तो मुझे सूचना या कम से कम कोई सुराग मिल जाएगा। और फिर घटनाएँ आगे बढ़ेंगी।

राम और सीता की पहचान

एक दिन, जब मैं नियमित ध्यान कर रही थी, मेरी बहन सूर्पनखा, जो हमारे देश से आगे के ग्रामीण इलाकों और भूगोल का भ्रमण कर रही थी, मुझसे मिलने दौड़कर आई। उसके बोलने से पहले ही मैंने उसके चेहरे पर उदासी, निराशा और भय देख लिया। सूर्पनखा एक सहज और हंसमुख स्वभाव की महिला है। फिर भी वह मुझसे थोड़ी दूरी पर खड़ी थी और घबराहट में अपने हाथों को आपस में रगड़ रही थी। मुझे सहज ही समझ आ गया कि कुछ गड़बड़ है। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाती, विभीषण भी हमारे साथ आ गया।

उन्होंने उसके हावभाव पर भी ध्यान दिया होगा। उसे आराम से बिठाकर हमने पूछा, "क्या बात है?" वह फूट-फूटकर रोने लगी और बोली कि हमारी सेना के महान योद्धा कारा और दुशनास 14,000 सैनिकों के साथ मारे गए हैं। हम दोनों चौंक गए। कारा और दुशनास!? यह कैसे संभव हो सकता है? वे हमारी सेना के सबसे बहादुरों में से थे। फिर भी मैंने उसे सांत्वना देने की कोशिश की। उसे शांत करने के बाद हमने थोड़ी देर बाद उससे पूछा, "क्या हुआ?"

सुरपनाका ने बताया:

पंचवटी के पास जंगल में मुझे दो पुरुष और एक स्त्री मिली। उनके नाम थे- राम, लक्ष्मण और सीता। वे पुरुष इतने सुंदर थे कि मैं उनसे अपनी दृष्टि नहीं हटा पा रही थी और उनमें से किसी एक से विवाह करना चाहती थी। मैं राम के पास गई और अपनी इच्छा व्यक्त की। उन्होंने शांति से मुस्कुराते हुए कहा कि वे अपनी पत्नी सीता के साथ खुश हैं और मुझमें उनकी कोई रुचि नहीं है। मैंने सीता को देखा और जान गई कि उन्होंने जो कहा वह सच था। वे दोनों बहुत सुंदर लग रहे थे। फिर मैं लक्ष्मण के पास गई और उनसे भी यही बात कही। उन्होंने भी मुझे विनम्रता से अस्वीकार कर दिया। हालांकि, उन्हें एक अजनबी को विवाह का प्रस्ताव देना अजीब और हास्यास्पद लगा। मैं उनके अस्वीकार को समझ नहीं पाई और उनके मनोरंजन से बहुत परेशान हुई। यह मैं थी और मेरी भावनाएं थीं। मैं ऐसी कोई नहीं थी जिसे अस्वीकार किया जा सके। मैं एक राजकुमारी थी। गुस्से में आकर मैं सीता को चोट पहुंचाने के लिए उन पर कूद पड़ी। अचानक लक्ष्मण मुझ पर कूद पड़े और मैं बुरी तरह से गिर पड़ी। धड़ाम से पीठ के बल गिरने पर मैं पहले स्तब्ध थी और फिर क्रोधित। जब मैं वापस भागी और कारा, दुशानों को बुलाया तो वे तीनों हंस रहे थे। चौदह हजार सैनिकों की बटालियन लेकर आओ और उन तीनों को सबक सिखाओ। आखिर उन्होंने जंगल की किसी आम महिला का नहीं, बल्कि सबसे शक्तिशाली रावण की बहन का अपमान किया था।

कारा और दुशाना निर्देशानुसार गए और उन पुरुषों को यह समझाने की कोशिश की कि मैं कौन हूँ, मेरी महानता क्या है और उन्होंने सुझाव दिया कि उनमें से कोई एक मुझसे विवाह कर ले। उन्होंने उन दोनों से कहा कि मुझसे विवाह करने का अर्थ होगा इन जंगलों के बजाय शाही प्रांगण में रहना।

फिर भी दोनों ने इनकार कर दिया। मैं स्तब्ध और क्रोधित था। हमारे सैनिक, जिन्होंने कभी अपने प्रस्तावों को ठुकराया नहीं था, बहुत अपमानित महसूस कर रहे थे। बात को और आगे बढ़ाने के लिए, उन्होंने उन्हें युद्ध के लिए चुनौती दी। दो आदमी *14,000* सैनिकों की सेना के सामने। कोई भी डर जाता। फिर भी दोनों ज़रा भी नहीं हिचके। उन्होंने कहा कि वे लड़ेंगे। किसने सोचा होगा कि दो भाई मिलकर पूरी बटालियन से लड़ सकते हैं और सबको मार गिरा सकते हैं*?*

मुझे आप भाइयों की मदद चाहिए। इन दोनों में हज़ारों से लड़ने का घमंड है। मुझे इन्हें सबक सिखाना है। मुझे राम की ज़रूरत है। अभी। मैं चाहता हूँ कि आप सीता का भी अपहरण कर लें। मैं यह अपमान सहन नहीं कर सकता। अगर आप मेरी मदद नहीं करेंगे तो मैं जी नहीं पाऊँगा।

विभीषण और मैं उसकी कहानी बड़े आश्चर्य से सुन रहे थे। मेरा भाई, जो हमेशा से ही निष्पक्ष और धर्मनिष्ठ था, उसे समझाने लगा कि गलती स्पष्ट रूप से हमारी है और किसी व्यक्ति से जबरदस्ती शादी करना या किसी स्त्री का अपहरण करना सही नहीं है। उसके इस जवाब पर सूर्पनखा विलाप करने लगी। फिर अपने आँसू पोंछते हुए, उसने विभीषण से तीखी बहस की। दोनों मेरे सामने बैठकर बहस में मग्न हो गए—एक उसे तर्क से शांत करने की कोशिश कर रहा था और दूसरा उस अपमान का औचित्य साबित करना चाहता था जो उस पर हुआ था।

मैं तो चुप ही रहा। इस धरती पर कोई कारा और दुशाना को कैसे मार सकता है? कैसे सिर्फ दो आदमी 14,000 सैनिकों की पूरी बटालियन को, वो भी मेरी सेना को, मार सकते हैं? और ये सब इंसानों के हाथों? ये कैसे मुमकिन है? क्या उनमें से कोई श्री हरि हो सकता है? क्या वो महिला मेरी देवी श्री देवी हैं?

मैंने तुरंत अपने सबसे बुद्धिमान और भरोसेमंद अनुयायी, मारीचा को बुलाया। सूर्पनखा की ओर मुड़कर मैंने उसके सिर पर हाथ रखकर धीरे से कहा, “मैं अब जा रहा हूँ। अगर तुमने जो कहा वह सच है तो मैं

उस स्त्री को यहाँ ले आऊँगा।" विभीषण ने विरोध करने के लिए मुँह खोला, लेकिन मैंने हाथ उठाकर उसे चुप करा दिया। मैं सोच में डूबा हुआ वहाँ से चला गया।

मैंने कुछ देर सोचा और अपना फैसला कर लिया। मैं मारीच को अपने साथ ले जाऊंगा, ताकि इन लोगों और उनकी क्षमताओं की परीक्षा ले सकूं। अगर वे मेरी परीक्षा में सफल हो जाते हैं, तो निःसंदेह, राम ही श्री हरि हैं और सीता ही श्री देवी हैं। और उस स्थिति में, मुझे अपना मिशन पूरा करने का अवसर मिल जाएगा।

हम उस स्थान पर गए और दूर से उन्हें देखा। मैंने मारीच को योजना को अंजाम देने के लिए कहा। मारीच ने सुनहरे फर वाले हिरण का रूप धारण किया। सीता ने हिरण को देखा और आश्चर्य से प्रसन्न हो गईं। उन्होंने अपने पति से उसे मांगा। इस प्रकार मैंने दोनों पुरुषों में राम को पहचाना। राम का रूप दिव्य था। मैंने मारीच को राम को मारने के लिए कहा। मारीच आश्चर्यचकित होकर बोले कि यह उचित नहीं है। मैंने अपना निर्देश दोहराया और कहा कि यह मेरा आदेश है। मैंने यह भी कहा कि यदि तुम राम के हाथों मारे जाओ, तो मैं चाहता हूं कि तुम राम की आवाज में "सीता... लक्ष्मण..." चिल्लाओ। मारीच मेरी आंतरिक भावना को नहीं समझ पाए और उन्होंने बस आदेश का पालन किया।

मैं तनाव में था। कुछ ही मिनटों में मुझे पता चल जाता कि राम, श्री हरि हैं या नहीं। अगर मारीच राम को मार डालते हैं, तो ये राम किसी आम इंसान की तरह ही होंगे। लेकिन अगर मारीच मारे जाते हैं, तो मुझे बिना किसी शक के पता चल जाएगा कि ये श्री हरि ही हैं, राम के रूप में, एक इंसान के रूप में।

कुछ ही देर में मुझे "सीता, लक्ष्मण..." की चीख सुनाई दी। मुझे मारीच की मृत्यु पर दुख हुआ, लेकिन मेरा हृदय इस बात से आनंदित हो उठा कि श्री हरि मुझे वैकुंठ वापस ले जाने के लिए पृथ्वी पर आए थे। चीख सुनकर सीता घबरा गईं और उन्होंने लक्ष्मण को राम की सहायता के लिए जाने का निर्देश दिया। हालांकि लक्ष्मण जानते थे कि राम को कोई हानि नहीं हो सकती, सीता के शब्दों और भावनाओं का सम्मान करना उनका कर्तव्य था। वे तुरंत राम को खोजने के लिए जंगल में चले गए।

अब बुरा बनने का समय आ गया है

रावण के रूप में यह दिन मेरे जीवन का सबसे पीड़ादायक दिन है। मैं जानता था कि अगर मैंने ऐसा किया तो मानवजाति मुझे कभी क्षमा नहीं करेगी। मेरा यह प्रयास केवल सूर्पनखा को ही संतुष्ट करेगा, इस संसार में किसी और को नहीं। मैं जानता था कि अगर मैंने ऐसा किया तो मंदोदरी मुझसे घृणा करने लगेगी, विभीषण इसे पचा नहीं पाएगा और मेरी प्रजा को गहरा आघात लगेगा।

फिर भी। फिर भी मुझे करना ही था। मैं वैकुंठम का रक्षक था और मेरा एकमात्र दैवीय कर्तव्य श्री हरि और श्री देवी की रक्षा करना था। इसलिए अब मुझे सीता (देवी) को जबरन अपहरण करके लंका ले जाना ही था। इस प्रक्रिया में मैं अपनी माँ, अपने परिवार, अपने लोगों को दुख पहुँचाऊँगा। क्या मुझे ऐसा करना चाहिए...? क्या मुझे वापस जाकर कुछ देर सोच-विचार करके एक बेहतर योजना बनानी चाहिए? हे भगवान... मेरा दिमाग क्यों सुन्न पड़ गया है? अब मुझे क्या करना चाहिए?

मैंने अपनी आँखें बंद कीं और कुछ देर सोचा। श्री हरि, कुमारों का मुस्कुराता हुआ चेहरा और हमारी बातचीत मेरे मन में कौंध गई। इसने मुझे याद दिलाया कि मुझे दुनिया को बुराई की पराकाष्ठा दिखानी होगी। तभी मेरे प्रभु को मानवजाति को परम अच्छाई दिखाने का अवसर मिलेगा: सत्यमेव जयते (सत्य की ही विजय होती है)। सच्चाई यह है कि बुराई पर अच्छाई की विजय होती है। इसका अर्थ है कि राम रावण पर विजय प्राप्त करते हैं।

मैंने अपनी आँखें खोलीं। फैसला हो चुका था। मैं बुराई का रूप धारण करूँगा। इस प्रक्रिया में मैं अपनी माँ को दुख पहुँचाऊँगा; लेकिन यही मेरा भाग्य था, यही लिखा था। अब पीछे हटने का कोई सवाल ही नहीं था। यही मेरे लिए अपनी क्रूरता का चरम रूप दिखाने का अवसर था। अगर मैं पीछे हटता,

हिचकिचाता, तो शायद यह सुनहरा अवसर दोबारा न मिले। लंका में मेरे राजकुमार, मेरी प्रजा और मेरी सेना करा, दूषण और मृत्यु के बाद की सेनाओं के बारे में नहीं जानते थे। अगर मैं सीता का अपहरण अभी करता, तो लंका में हर कोई स्वाभाविक रूप से यही मानता कि मैंने बदला लेने के लिए उनका अपहरण किया है; राम द्वारा मेरी बहन के अपमान का बदला लेने और उसे संतुष्ट करने के लिए। हाँ। मुझे यही करना होगा। कोई दूसरा विचार नहीं। राम से बदला लेना राम से युद्ध करना है। राम से युद्ध करना ही वैकुंठ जाने का मेरा मार्ग है।

मैंने तुरंत शुरुआत की, देरी की कोई गुंजाइश नहीं थी। मैंने साधु का वेश धारण किया और जंगल में उस जगह की ओर चल पड़ा जहाँ राम और लक्ष्मण ने कुटिया बनाई थी। मुझे पता था सीता अकेली होंगी। और वे अकेली ही थीं। वे द्वार पर खड़ी होकर राम और लक्ष्मण को जंगल में बेसब्री से ढूंढ रही थीं। मुझे उनका ध्यान भटकाना था। मुझे साधु होने का अपना कर्तव्य भी निभाना था। मैंने पुकारा, "भवती भिक्षुं देही!" (माँ, कुछ भोजन दीजिए!)। सीता ने मुझे देखा, बड़े आदर से मुझे (साधु को) आमंत्रित किया और मुझे भोजन परोसा। भोजन करते समय मैंने उनसे और उनके परिवार के बारे में पूछा। उन्होंने संक्षेप में अपने माता-पिता और राम के माता-पिता के बारे में बताया। अन्य महिलाओं की तरह, अपने पति के बारे में बात करते समय वे गर्व से लाल हो गईं।

मैंने अपना भोजन समाप्त किया और हाथ धोते समय उसने मुझसे मेरे बारे में और इस घने जंगल में मेरे आने का उद्देश्य पूछा। दर्द से मेरी आँखें लाल हो गईं। इसे छुपाने के लिए मैं पूरी लंबाई तक लेट गया और शेर की तरह दहाड़ा। "मैं तुम्हें अगवा करने आया हूँ," मैंने चिल्लाकर कहा। "मैं ही वह हूँ जिसने जादुई हिरण भेजा था। मेरा नाम रावण, लंकादेश्वर है।"

सीता अत्यंत भयभीत होकर भागने लगीं और राम एवं लक्ष्मण से सहायता के लिए पुकारने लगीं। मेरा विमान तैयार था। एक भयानक गर्जना करते हुए मैं उनके पीछे कूदा और एक ही झटके में उनके बाल मुट्ठी में पकड़ लिए। उनके बाल हाथों में लिए, मैंने उन्हें विमान में उठाया और हम लंका की ओर चल पड़े।

अगर मैंने सोचा था कि सीता को समझ आ जाएगा कि अब कोई रास्ता नहीं है और वह चुप रहेगी, तो मैं गलत था। वह चीखी और मुझसे जितना हो सके लड़ी, हर बार गुस्से में आकर मदद के लिए पुकारती रही। जंगल में जटायु नाम का एक पक्षी (एक चील जैसा पक्षी) उसकी मदद के लिए आया। एक पक्षी को इंसान की मदद के लिए आते देखकर मैं हैरान रह गया, लेकिन मेरे पास आगे सोचने का समय नहीं था। मेरा मकसद सीता को लेकर लंका भाग जाना था, इससे पहले कि राम या लक्ष्मण मुझे देख लें और मुझ पर हमला कर दें। मैं उस समय उनसे युद्ध करने के लिए तैयार नहीं था। मुझे जल्दी करनी थी। मैंने अपना विमान नीचे उतारा और अपनी तलवार से जटायु से युद्ध किया। जटायु ने बहादुरी से लड़ाई की, लेकिन अंत में मैंने उसका पंख काट दिया। जटायु अपने ही खून के तालाब में गिर पड़ा। मैंने सीता को उठाया और उड़ता रहा।

जब मैं बादलों के बीच से अपना वाहन चला रहा था, सीता ने अपनी साड़ी का एक टुकड़ा फाड़ा, उसमें अपने गहने लपेटे और उसे नीचे फेंक दिया। मुझे लगता है कि उन्हें उम्मीद थी कि राम उसे ढूंढ लेंगे और सुराग का पीछा कर पाएंगे। उनकी सूझबूझ और इस प्रयास की सराहना करनी चाहिए। मैं जानता था कि राम को मेरी राजधानी लंका लाने के लिए उनके ये प्रयास काफी नहीं थे। मुझे भी अपना योगदान देना था।

रास्ते में मुझे महेंद्र पर्वत के जंगल में जटायु के बड़े भाई संपथी के पुत्र सुपार्वा मिले, जो जानवरों का शिकार करने के इरादे से उनका रास्ता रोक रहे थे। मैंने जानबूझकर वही रास्ता चुना और उनके करीब से गुजरा ताकि वे मुझे और सीता को देख सकें। लाल और क्रोधित आँखों से, लेकिन अत्यंत विनम्रता से, मैंने उनसे आगे बढ़ने का रास्ता देने का अनुरोध किया। लाल आँखों वाले किसी व्यक्ति को इतनी विनम्रता से बात करते देख वे शायद चौंक गए होंगे और उन्होंने मुझे जाने दिया। सच कहूँ तो, मुझे पता

था कि वे मुझे नहीं जानते थे। हालाँकि, मैंने कुछ मुनियों (संतों) को देखा, जो मुझे जानते थे और पास से हमें देख रहे थे। मुझे यकीन था कि मेरे वहाँ से जाते ही वे सुपार्वा से मेरी पहचान के बारे में चर्चा करेंगे।

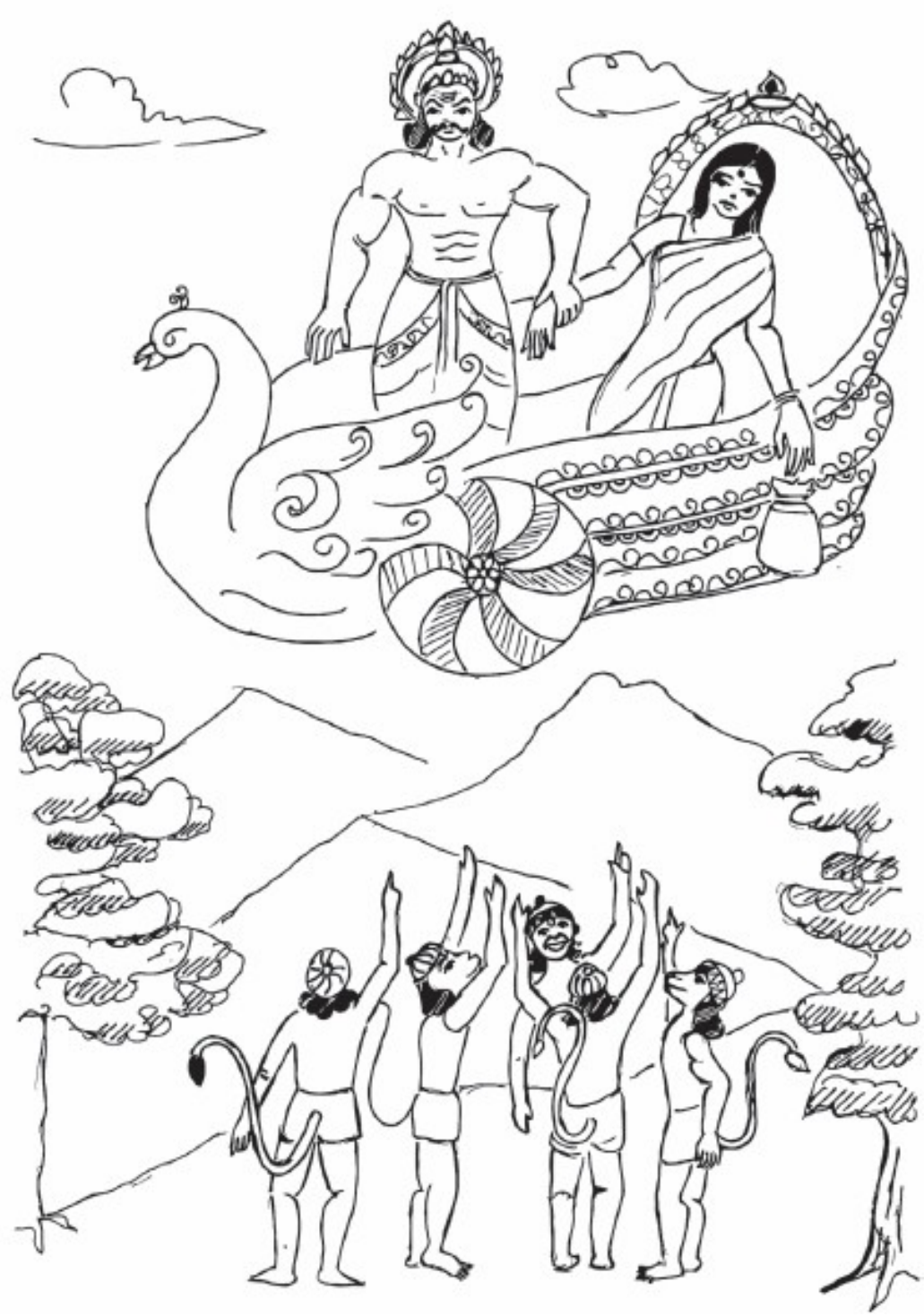

मैं लंका पहुँचकर सीता को सीधे मंदोदरी के शयनकक्ष में ले गया और मंदोदरी को सीता की देखभाल करने का आदेश दिया। कोई प्रश्न नहीं पूछा गया। मैं जल्दी से चुपचाप अपने कमरे में गया और दरवाज़े बंद कर लिए। मैं कुछ समय अकेले रहना चाहता था।

मैंने उनकी अफवाहों की पुष्टि की है।

मैं अपने कमरे में था और मेरे दिमाग में कई तरह के विचार उथल-पुथल मचा रहे थे। दिमाग में चल रहे शोर के कारण सोना मुश्किल था, लेकिन धीरे-धीरे थकान हावी हो गई और मुझे नींद आ गई।

जब तक मेरी नींद खुली, मंदोदरी समझ चुकी थी कि मैंने सीता का अपहरण कर लिया है। सीता की हालत शब्दों में बयान नहीं की जा सकती। वह दिन-रात रोती रही। यह बात पूरे शहर में फैल गई और हर कस्बे, हर गली और हर घर में इसी की चर्चा थी। किसी को भी मेरा यह कृत्य समझ नहीं आया और अदालत में किसी ने भी मुझसे सवाल करने की हिम्मत नहीं की।

मेरे परिवार के सदस्य, मेरी पत्नियाँ, मेरे बच्चे, मेरे भाई... काफी समय तक कोई भी मुझसे इस बारे में बात करने नहीं आया। मेरी चुप्पी ने सबको यही निष्कर्ष निकालने पर मजबूर कर दिया कि सीता की सुंदरता ही वह कारण थी जिसके चलते मैं उसे लंका ले गया था। मैं चुप रहा। और मेरी चुप्पी से अफवाहें और भी मजबूत होती गईं। जल्द ही मेरे ही लोगों के बीच मुझे वासना का वश में रहने वाला व्यक्ति मान लिया गया। मेरी चुप्पी ने मुझे और भी बुरा बना दिया और मैं यही चाहता भी था।

दिन बीतते गए, एक दिन मंदोदरी मेरे पास आई, चुपचाप खड़ी रही, मेरा ध्यान आकर्षित करने की प्रतीक्षा करती रही। मैंने उसे पास बुलाया और अपने बगल में बैठने को कहा। वह पास आई, मेरे हाथ अपने हाथों में लिए और फुसफुसाते हुए बोली, “आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? आपकी कई पत्नियाँ हैं और मैं उनमें सबसे प्रिय हूँ। हममें से कोई भी आपसे नाखुश नहीं थी। हम सब आपसे प्यार करते थे और आपने हम सबको खुश रखा। लेकिन अब आप एक नई लड़की को ले आए हैं; वह आपकी पत्नी नहीं बनना चाहती। आप एक महान राजा हैं। आपको उसके साथ ऐसा नहीं करना चाहिए। आपको अपनी वासना पर नियंत्रण रखना चाहिए।” उसकी बातें सुनकर मेरा खून खौल उठा। मैं सीता के बगल में खुद की कल्पना भी नहीं कर सकता था और मेरे मन में ऐसी कोई मंशा नहीं थी। फिर भी मैं असहाय था, अपने दिव्य कर्तव्य को प्रकट करने में असमर्थ था।

अपनी हताशा में मैंने चिल्लाकर कहा, “मैं राजा हूँ, मेरा नाम रावण है और मैं जो चाहता हूँ वही चाहता हूँ, चाहे कुछ भी हो जाए, चाहे कितने ही लोग इसे नापसंद करें। मैं चाहता हूँ कि वह यहाँ हो और उसे यहाँ होना ही होगा।” मैंने जो कुछ भी कहा, वह झूठ नहीं था, फिर भी मैंने जानबूझकर उसे अस्पष्ट रखा था। और मैं जानता था कि मेरी पत्नियाँ, मेरी प्रजा और दुनिया इसे अफवाहों की पुष्टि ही मानेंगे।

मैं सीता को खुश देखना चाहता था।

मंदोदरी अपनी बहनों (मेरी पत्नियों) के साथ मेरे पास आईं और बोलीं, “आपकी इच्छा आपकी है। आप हममें से किसी को भी समझने की स्थिति में नहीं हैं। आपकी आँखें कामवासना से भरी हुई हैं। हम आपको समझाने नहीं आए हैं क्योंकि आपने अपना निर्णय पहले ही ले लिया है। अब हमारी बारी है कि हम आपको अपना निर्णय बताएँ। आप जितनी चाहें उतनी स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं, और हममें से किसी को भी इस पर कोई आपत्ति नहीं है, बशर्ते कि स्त्री आपको वैसे ही स्वीकार करे जैसे आप हैं। लेकिन सीता के मामले में ऐसा नहीं है। जब कोई हमारे सामने दुखी हो तो हम न तो चैन से रह सकते हैं और न ही कुछ खा सकते हैं। हम हाथ जोड़कर आपसे विनती करते हैं; कृपया सीता को प्रसन्न करने के लिए कुछ कीजिए। हम उनका दुःख सहन नहीं कर सकते।”

मेरे मन में गहरी प्रसन्नता थी कि मेरे लोगों ने सही का चुनाव किया—उन्होंने सीता का साथ दिया। लेकिन यह सब मायाजाल है। अपनी आवाज़ में दृढ़ता बनाए रखते हुए मैंने उत्तर दिया, "मैं कोशिश करूँगा" और निकास द्वार की ओर इशारा करते हुए मैंने उन्हें जाने का संकेत दिया।

मैंने अपने आदमियों को बुलाया और सीता के लिए एक आलीशान महल बनवाने का आदेश दिया। सीता के लिए महल बनवाने का मेरा आदेश जनता के बीच चर्चा का मुख्य विषय बन गया। देखते ही देखते महल बनकर तैयार हो गया और मैंने अपनी स्त्रियों को सीता को मंदोदरी के महल से नए महल में ले जाने का निर्देश दिया। मेरे हर काम पर मेरे लोग पैनी नज़र रखते थे। लोग उस महल को "सीता कोटा" (सीता का किला) कहने लगे। आज के मध्य श्रीलंका के हरे-भरे जंगलों में घूमने पर आपको इस जगह के निशान "सीता कोटुवा" नामक क्षेत्र में मिलेंगे।

मुझे यह समझने में ज़्यादा समय नहीं लगा कि सीता के लिए इन सभी भौतिक सुख-सुविधाओं का कोई महत्व नहीं था। मैं यह भी समझ गया कि मैं चाहे कुछ भी कर लूँ, सीता कभी खुश नहीं होंगी। उनकी खुशी केवल राम के साथ ही थी।

मैं चाहे कुछ भी कर लूँ, उसे खुश नहीं रख सकता। कम से कम उसे इस कृत्रिमता से दूर ले जाकर प्रकृति के करीब रहने दो, जहाँ शोक न हो।

तब मैंने उसे अपने प्रकृति के बगीचे, "अशोक वनम" ("अ" का अर्थ है नहीं, "शोक" का अर्थ है उदासी और "वनम" का अर्थ है बगीचा) में ले जाने का निर्णय लिया। मैंने उसे उदासी रहित बगीचे में स्थानांतरित कर दिया।

रामा सुरागों को सुलझा रहा है

दूसरी ओर, राम ने एक-एक करके सुरागों को सुलझाना शुरू कर दिया।

मुझे यहाँ रुककर मानव जाति की प्रशंसा करनी चाहिए। यद्यपि श्री हरि परम सत्ता हैं, फिर भी वे आप ही की तरह मनुष्य रूप में थे। मैंने राम के कौशल से सीखा कि मनुष्य कितना शक्तिशाली हो सकता है। और राम जितने शक्तिशाली थे, आप भी उतने ही शक्तिशाली हो सकते हैं। मानव जाति ने प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य स्थापित करके ही सर्वथा सिद्धियाँ प्राप्त की हैं। आपने सबसे भयंकर शेर को वश में करना सीखा है और पशुओं को अपने परिवार का हिस्सा बनाया है। अन्य प्राणियों को समझने और उनसे संवाद करने की इस प्रकृति ने राम को भी रहस्यों को सुलझाने में सहायता की।

सीता के अपहरण के बाद, जो उनकी नाक के नीचे से हुआ था, राम ने सीता की खोज में हर जगह हाथ-पैर मारे। जब उन्हें सीता का कोई सुराग नहीं मिला, तो वे गहरे अवसाद में डूब गए और आत्महत्या करने की सोच रहे थे। लक्ष्मण राम के लिए चट्टान की तरह खड़े रहे और समय-समय पर उन्हें प्रेरित करते रहे। दोनों ने मरणासन्न जटायु को पहचाना और उन्हें पहला सुराग मिला कि रावण सीता को दक्षिण दिशा में ले गया है।

राम और लक्ष्मण सीता की खोज में उसी दिशा में आगे बढ़ते रहे। उन्होंने हर संभव स्रोत से जानकारी जुटाने का प्रयास किया। कुछ दिनों की यात्रा और खोजबीन के बाद उन्हें कदंबा मिला, जिसने सुग्रीव

(एक वानर राजा, वानर राजा जो राम की ही तरह कष्ट भोग रहा था, क्योंकि सुग्रीव के बड़े भाई वाली ने सुग्रीव को गलत समझा था और उनकी पत्नी रूमा और राज्य को अपने कब्जे में ले लिया था) से संपर्क करने का सुझाव देकर उनकी सहायता की। उसने यह भी बताया कि सुग्रीव पंपा झील के पास रुष्यमूक पर्वत पर मिलेंगे।

आपकी जानकारी के लिए बता दें कि आधुनिक भौगोलिक वितरण के अनुसार यह झील कर्नाटक राज्य में आती है।

राम और लक्ष्मण ने पंपा झील तक अपनी यात्रा जारी रखी। रास्ते में सुग्रीव और उनके साथियों ने उनका साथ दिया। हनुमान सुग्रीव के सबसे भरोसेमंद मंत्रियों में से एक थे। यहीं पर राम की हनुमान से पहली मुलाकात हुई। राम और सुग्रीव ने एक-दूसरे की मदद करने का समझौता किया। राम ने पहले सुग्रीव की मदद की और वाली का वध करके उनकी पत्नी को वापस लाने में उनकी सहायता की। इस प्रक्रिया में सुग्रीव को किष्किंधा राज्य भी प्राप्त हुआ। किष्किंधा वानरों का राज्य था।

अब सुग्रीव की बारी थी। बरसात का मौसम आने वाला था, इसलिए सुग्रीव ने चार महीने का विश्राम मांगा और राम और लक्ष्मण को अपने राज्य में रहने के लिए आमंत्रित किया। एक महीने बाद उन्होंने दुनिया भर के सभी वानर राज्यों को संदेश भेजा और उन्हें अगले महीने की पूर्णिमा को किष्किंधा में एकत्रित होने का निर्देश दिया। उन्होंने उन्हें एक महीने का पूर्व सूचना दी। छोटे से छोटे वानर से लेकर विशालकाय गोरिल्ला तक सभी समय पर किष्किंधा पहुंच गए। जब राम वहां खड़े हुए, तो ऐसा लगा मानो वानरों का सागर उनकी ओर बढ़ रहा हो। भालुओं के राजा और सुग्रीव के मित्र जाम्बवंथ ने भी इस नेक कार्य में अपनी सेना के साथ अपना समर्थन दिया। निष्ठा का यह प्रदर्शन देखकर राम अचानक उत्साहित हो गए।

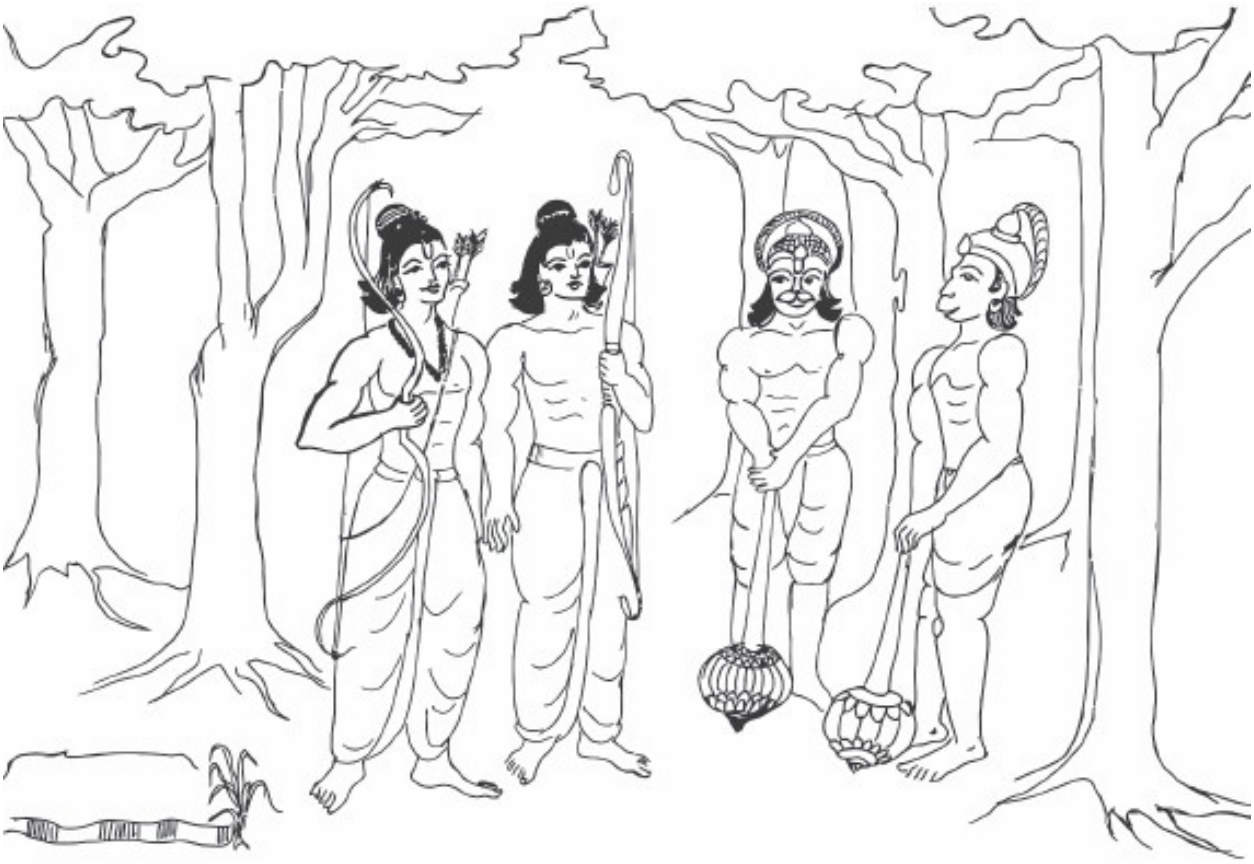

लेकिन अगला कदम उठाने से पहले, राम दो बातें जानना चाहते थे। पहली, “क्या सीता जीवित हैं?” और दूसरी, “यदि वह जीवित हैं, तो कहाँ हैं?” इन दो महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर जानने के बाद ही वे रावण और उसकी सेना की शक्ति का आकलन करना चाहते थे। राम की मंशा को समझते हुए सुग्रीव ने तुरंत पूरे बेड़े को चार समूहों में विभाजित किया और उन्हें सीता की खोज में चारों दिशाओं में जाने का निर्देश दिया। उन्होंने प्रत्येक समूह को एक महीने के भीतर वापस आने की सूचना दी।

चूंकि जटायु से पहले ही संकेत मिल गया था कि रावण सीता को दक्षिण दिशा में ले गया है, इसलिए सुग्रीव ने अपनी सेना के सर्वश्रेष्ठ सैनिकों को दक्षिण की ओर भेजा और इस समूह में नीला, हनुमान, महाबल, जाम्बवंता, नल, गवाक्ष, उल्कामुक, असामगा, मदन, आमगधा और ऐसे कई वीर योद्धा शामिल थे।

हनुमान की प्रतिभा को समय-समय पर देखकर राम को भी विश्वास हो गया था कि यह जोड़ी जल्द ही सकारात्मक परिणाम लाएगी। राम ने हनुमान को बुलाया, गले लगाया और कहा, “तुम ही मेरी एकमात्र आशा हो और यही एकमात्र कारण है कि मैं अभी जीवित हूँ।” फिर हनुमान को अपनी अंगूठी देते हुए उन्होंने कहा कि इससे उन्हें सीता को अपना दूत बताने में मदद मिलेगी।

सभी टीमें अपने-अपने कर्तव्य पर रवाना हुईं। उत्तर, पश्चिम और पूर्व की टीमें बिना किसी नतीजे के लौट आईं। लगभग एक महीना बीत गया और दक्षिण से कोई खबर नहीं आई। एक महीने बाद दक्षिण की टीम की मुलाकात संयोगवश जटायु के भाई संपथी से हुई और उन्हें मेरे और सुपार्वा के बीच हुई घटना के बारे में पता चला। संपथी ने उन्हें लंका का पता भी बताया, जहाँ सीता को मैंने, लंकादेश्वर ने, कैद कर रखा था। टीम खुश थी कि आखिरकार उन्हें सीता और उनके ठिकाने, लंका के बारे में कुछ पुख्ता जानकारी मिल गई।

संपथी के बताए रास्ते पर वे तेज़ी से आगे बढ़े और समुद्र तट पर पहुँच गए। संपथी के अनुसार, तट से लंका द्वीप की दूरी सौ आमदास (एक प्राचीन माप) थी। सौ आमदास कोई छोटी दूरी नहीं थी, इसलिए दल के प्रमुखों ने समुद्र पार करने की अपनी क्षमता का आकलन करने के लिए बैठक की। हनुमान को सही विकल्प चुना गया। इस प्रकार यह निर्णय लिया गया कि हनुमान को लंका भेजा जाएगा।

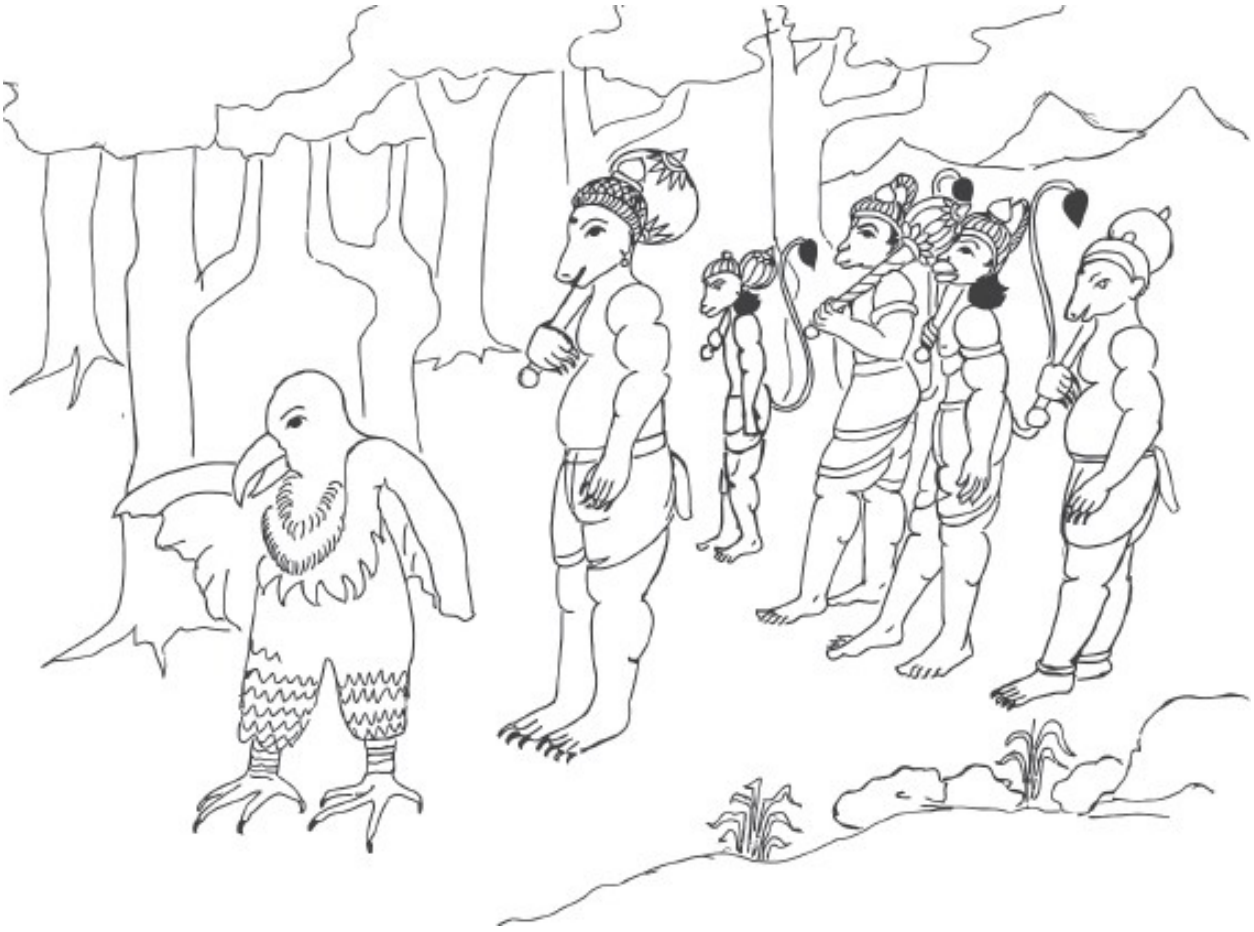

अब संदेशवाहक से मिलने का समय आ गया है

दस अमावस्याएँ बीत चुकी थीं। मुझे अंतर्ज्ञान से पता था कि किसी भी क्षण राम या उनका दूत लंका की पहचान कर उसे खोज निकालेंगे। मेरे श्री हरि, राम ने पहेली के टुकड़ों को इकट्ठा करके उन्हें जोड़ दिया होगा। पृथ्वी पर रावण के रूप में ये मेरे अंतिम दिन थे। युद्ध से पहले, मैं तीन बातें चाहता था। पहली, विभीषण को लंका के अगले राजा के रूप में तैयार करना। अपने शुद्ध हृदय और सत्य एवं न्याय के अडिग रुख के साथ, वह जनता के लिए एक महान राजा साबित होंगे।

दूसरी चीज़ जो मुझे चाहिए थी, वह थी एक तैयार सेना। आख़िरकार, लंकादेश्वर की शक्ति दिखाने के लिए मुझे एक शक्तिशाली सेना की ज़रूरत थी। हालाँकि राम स्वयं श्री हरि हैं, लेकिन उन्हें अपनी दिव्य शक्तियों का ज्ञान नहीं है; वे एक सामान्य मनुष्य और एक अच्छे राजकुमार की तरह हैं। मुझे जो करना था, वह यह था कि जो भी सबसे पहले लंका की धरती पर कदम रखे, उसे इतना डरा देना था कि मेरा प्रतिद्वंद्वी तुरंत लौटकर जीवन भर के युद्ध की तैयारी करे। यह दो महाशक्तियों का टकराव होना चाहिए: न भूथो न बविषत् (जैसा पहले कभी नहीं हुआ और न कभी होगा)।

और अंत में, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मुझे अपने तथाकथित दुश्मन से खबर मिलने तक इन आखिरी दिनों का आनंद लेना चाहिए।

मैंने राज्य में प्रतिदिन उत्सवों की घोषणा की। आनंद का चरम था। चारों ओर आतिशबाजी हो रही थी, मानो आकाशगंगा आकाश से लंका तक उतर आई हो। पुरुष और महिलाएं, लड़के और लड़कियां, खुशी से नाच रहे थे, गा रहे थे और उछल-कूद कर रहे थे। धरती बैगपाइप, तुरही, ढोल, वीणा, मृदंगम, तबला और गटम की ध्वनि से गूंज रही थी। मैंने भी अपने आविष्कार, रावण हट्टा (एक प्राचीन, धनुषाकार, तारयुक्त, हाथ से बजाया जाने वाला वाद्य यंत्र जिसे रावण हस्त वीणा के नाम से भी जाना जाता है) के साथ इस उल्लास में भाग लिया। उन दिनों घर में खाना बनाने की कोई आवश्यकता नहीं थी, हर दिन मेरी ओर से सबके लिए दावत होती थी। बच्चे, बड़े, पुरुष और महिलाएं सीधे शाही रसोई से भोजन करते थे। जोश से भरपूर माहौल था और मैं अपनी पत्नियों के साथ हर पल का भरपूर आनंद लेता था।

किसी ने नहीं पूछा कि उत्सव क्यों मनाया जा रहा था। लेकिन यह निश्चित रूप से मनाया जा रहा था। जब जश्न चल रहा था, एक व्यक्ति शोक मना रहा था: सीता। उन्होंने अशोक वन को आंसुओं से भर दिया। मैं अपनी पत्नियों के साथ, जो दोनों ओर खड़ी थीं, शराब के नशे में चूर होकर उनके पास गया और उन्हें लंका में अपने दिन बिताने का निमंत्रण दिया। हमेशा की तरह, उन्होंने इसे उल्टा समझा; बेशक मैं चाहता था कि वह इसे इसी तरह समझें। मंदोदरी को छोड़कर मेरी सभी पत्नियां उन पर हंस पड़ीं। मंदोदरी सिर्फ मेरी पत्नी नहीं थीं, वह एक अच्छी दोस्त जैसी थीं और उन्होंने कई बार मुझे सुधारने की कोशिश की, खासकर सीता के साथ मेरे व्यवहार के दौरान। सीता ने लाल आंखों से मेरी ओर देखा। वह लालिमा क्रोध, भय और बेबसी से भरी थी। एक पल के लिए मैं कांप उठा; मानो कोई मुझे देख रहा हो—

मानो वह मेरी आत्मा में झांक रही हो। मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा। मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन उनकी क्रोध भरी निगाहों ने मुझे घबरा दिया। मैं सीता के सामने, खासकर अपनी पत्नियों के सामने, अपना भय और घबराहट न दिखाने के लिए सावधान था। देखते ही देखते मेरे मन में हजारों विचार दौड़ पड़े और ऐसा लगा जैसे मैंने जो भी नशा किया था, वह मेरे अंदर सूख गया हो। क्या यह सच था? क्या ऐसा हो सकता था कि कोई मुझे देख रहा हो? राम? उनका दूत? क्या मेरे संदेश को घोषित करने का समय आ गया था? कुछ ऐसा जिससे तुरंत युद्ध छिड़ जाए?

मैंने गहरी सांस ली, अपनी सारी हिम्मत जुटाई और उसकी घूरती लाल आंखों का सामना करते हुए दहाड़ते हुए कहा: "अगर तुम दो महीने के भीतर मुझसे सहमत होकर आत्मसमर्पण नहीं करती हो, तो मुझे तुम्हारी जान लेनी पड़ेगी।"

कई लोगों ने गहरी साँस ली। मुझे अपनी बात पर ज़ोर देना पड़ा, उसे स्पष्ट करना पड़ा। मैंने वहाँ मौजूद देखभाल करने वालों को बुलाया और कहा, “अगर दो महीने में उसका मन नहीं बदला, तो आप उसे बिना मुझे बताए टुकड़े-टुकड़े कर सकते हैं। उसकी मौत के बाद, मुझे बता देना।” इतना कहकर मैं गुस्से को अपनी बेचैनी छिपाने के लिए वहाँ से चला गया। मैंने सीता को उसके आँसू बहाने के लिए छोड़ दिया।

सीता के साथ हुए उस दृश्य के बाद जैसे ही मैं अपने घर पहुँचा, एक गार्ड ने मेरा दरवाजा खटखटाया। झुकते हुए वह घबराया हुआ लग रहा था। मैंने सिर हिलाकर उसे बोलने का इशारा किया।

उन्होंने कहा, “एक अनोखा बंदर, जो अपना आकार बदल सकता था, अशोक वन में घुस आया, सीता से मिला और कुछ ऐसी बातें कहीं जो हम समझ नहीं पाए। बंदर की बात सुनकर सीता शांत हो गईं। उन्होंने रोना बंद कर दिया। दोनों ने एक-दूसरे की पहचान भी जान ली। हे प्रभु, उस बंदर ने आपके बगीचे में सब कुछ नष्ट कर दिया।” इससे पहले कि मैं अपने मन में उमड़ रहे विचारों के बवंडर पर कोई प्रतिक्रिया दे पाता, एक और रक्षक दौड़ता हुआ मेरे पास आया और बताया कि सबसे शक्तिशाली तटरक्षक बल लंकिनी को दबा दिया गया है और एक अजीब प्राणी द्वीप में घुस आया है।

मुझे पसीना आने लगा।

मेरे मन का एक हिस्सा उस अंतिम युद्ध से भयभीत था जो मेरे अपूरणीय कर्मों के फलस्वरूप होने वाला था, और दूसरा हिस्सा इस बात से प्रसन्न था कि मैं अपने श्री हरि से मिलूंगा और पृथ्वी पर अपना जीवन चक्र समाप्त करूंगा। वह बंदर सुग्रीव या उनके समूह का कोई सदस्य होना चाहिए। मैं उसे देखना चाहता था। इस बंदर को लंका पहुँचने के लिए समुद्र पार करना पड़ा था। मैं जानता था कि जो कोई भी ऐसा कर सकता है, वह विशेष शक्तियों वाला व्यक्ति होगा और उसे वश में करना आसान नहीं होगा।

मैंने पहरेदार को अस्सी हज़ार सैनिकों को लेकर उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया। थोड़ी देर में मुझे संदेश मिला कि बंदर ने उन सभी को मार डाला है। मैं स्तब्ध रह गया और मैंने शक्तिशाली योद्धा जंबुमाली को भेजा। मुझे वही प्रतिक्रिया मिली। मैंने अपने सात मंत्रियों को भेजा; फिर वही प्रतिक्रिया। मैंने स्थिति का जायजा लिया और शक्तिशाली योद्धाओं का एक और दल भेजा: विरुपाक्ष, यपाक्षु, धूर्दारा, प्रुगासु और बासाकारा। फिर से, सभी मारे गए। मैं स्तब्ध रह गया। मेरे छोटे बेटे अक्षय ने अपनी किस्मत आजमाने की पहल की; व्यर्थ।

यह कोई साधारण बंदर नहीं था।

मैं सोचने लगा। फिर मैंने अपने बड़े बेटे मेघनाथ को बुलाया, जिसे इंद्र को हराने पर इंद्रजीत की उपाधि मिली थी। शायद बंदर अपने द्वारा मचाई जा रही तबाही से ऊब गया था या शायद इंद्रजीत सफल हो गया था। मुझे नहीं पता, लेकिन इंद्रजीत बंदर को मेरे आंगन में ले आया। मेरे सभी आदमी, मंत्री, मेरा भाई विभीषण और मैं बंदर को देखने के लिए इंतजार कर रहे थे। यह प्राणी कौन था और वह क्या चाहता था?

वानर दूत ने अपना परिचय राम के दूत हनुमान के रूप में दिया और लंका आने का उद्देश्य बताया। इससे पहले उन्होंने राम की स्तुति में गीत गाए। फिर उन्होंने मुझे सीता को सौंपने की सलाह दी और विनम्रतापूर्वक चेतावनी दी कि उनकी सलाह न मानने पर मेरी मृत्यु हो जाएगी।

अगले राजा की पहचान करना

जैसे ही मुझे पता चला कि इससे मेरी मृत्यु होगी, मुझे बहुत खुशी हुई कि मेरा काम योजना के अनुसार चल रहा है। इसका मतलब था कि मैं अपने भाग्य और मोक्ष के करीब पहुँच रहा था। हालांकि हनुमान जी के शब्दों ने मेरे हृदय को आनंद से भर दिया, लेकिन मैं उसे व्यक्त नहीं कर सका। मुझे अपना ढोंग, अपनी क्रूरता जारी रखनी थी। मिशन को सफल बनाने के लिए यह अत्यंत आवश्यक था।

मेरे मन में अगला विचार आया: मेरे बाद लंका का राजा कौन होगा?

उस समय मेरे सभी मंत्री और अधिकारी दरबार में उपस्थित थे, जिनमें विभीषण भी शामिल थे, जो मेरे बाईं ओर बैठे थे। मेरा मन विभीषण को चुनने का था, परन्तु किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले उन सबका परीक्षण करना मेरा कर्तव्य था। समय अत्यंत महत्वपूर्ण था; विशेषकर तब जब दूत हमारे द्वार पर पहुँच चुके थे। इसका अर्थ यही था कि राम—श्री हरि—शीघ्र लंका पहुँचने वाले थे। मैंने उन्हीं के द्वारा उनका परीक्षण करने का निश्चय किया। हनुमान मेरे समक्ष खड़े हुए।

उसकी ओर इशारा करते हुए मैंने उसे अपमानित करना शुरू कर दिया। मेरी बात सुनकर सभी ज्ञानी लोग मेरे पीछे-पीछे चलने लगे। चारों ओर हूटिंग, शोर-शराबा और ठहाके गूंजने लगे। जैसे-जैसे मैं उसे गालियां देता गया, मेरी नजर विभीषण पर पड़ी। मैंने देखा कि मेरा भाई चुपचाप सिर झुकाए बैठा था, मानो अपमान उसी के लिए किया जा रहा हो।

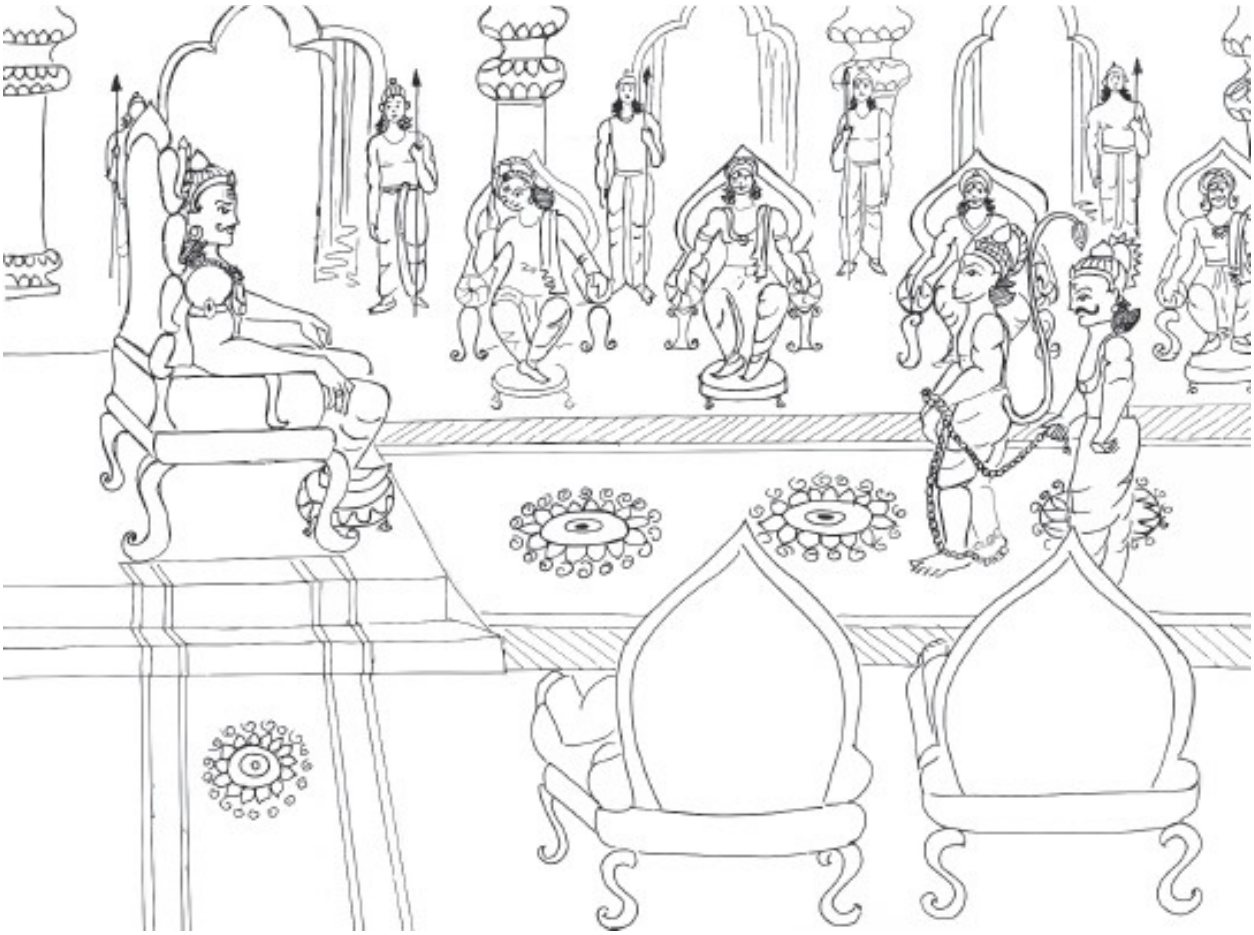

मैंने पैर पटककर अदालत का ध्यान अपनी ओर खींचा। फिर खड़े होकर, पूरी ऊंचाई तक उठकर, मैंने चिल्लाकर कहा: “इसका सिर काट दो।” अदालत में मौजूद सभी लोगों ने तालियाँ बजाईं और उपहास किया, मानो फैसले को बढ़ावा दे रहे हों। मेरे भाई को छोड़कर सभी ने। खड़े होकर, विभीषण ने गहरी साँस ली और चिल्लाकर कहा: “शांति।” अदालत अचानक शांत हो गई। उन्होंने धीरे-धीरे चारों ओर देखा, फिर मेरी ओर देखकर कहा, “हे मेरे स्वामी, मेरे प्रिय भाई, मैं आपके फैसले का विरोध करता हूँ। हनुमान एक दूत हैं और दूत की हत्या धर्म के विरुद्ध है। मैं नहीं चाहता कि आप और यह लंका किसी को भी धर्म के विरुद्ध सजा दें। यह सब आपने ही मुझे सिखाया है। मुझे क्षमा करें, यदि मैंने आपको दुख पहुँचाया हो, लेकिन यही मेरा भाव है।”

मुझे इस बात की खुशी हुई कि मेरे भाई के बारे में मेरा अनुमान सही निकला। कम से कम कोई तो ऐसा था जो सिर्फ हाँ में हाँ मिलाने वाला नहीं था; जो संकट के समय बुद्धि का प्रयोग करता था। मैं रुका और फिर दरबार में बैठे बाकी बुद्धिमानों की ओर देखा। उन सभी को तुरंत समझ आ गया कि विभीषण सही था। वे शर्म से सिर झुका लिए। विभीषण सीधा और दृढ़ खड़ा रहा। मैंने मन ही मन निश्चय कर लिया कि विभीषण ही मेरा उत्तराधिकारी होगा।

TUNING VIBHISHANA

मैं नीचे नहीं जा सका। अगर मैं ऐसा करता तो बुराई का एहसास कम हो जाता। फिर मैंने प्रकृति के अनुसार काम जारी रखने का फैसला किया और आदमियों को आदेश दिया कि वे बंदर की पूंछ में आग लगा दें, उसे गलियों में घुमाएँ और फिर भगा दें।

यह हनुमान महज एक साधारण दूत नहीं थे और निश्चित रूप से कोई साधारण बंदर भी नहीं थे। आग का उन पर कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने मेरी सारी गलियाँ जला दीं, सीता से दोबारा मिले और चले गए। राम ने लंका में सही व्यक्ति को भेजा था। मैंने एक उच्च स्तरीय बैठक बुलाई और कुंभकर्ण (विजय) समेत अपने सभी मंत्रिमंडल सदस्यों को बुलाया। बैठक का एजेंडा युद्ध की तैयारी करना था।

बैठक शुरू हुई और वहाँ मौजूद सभी लोग जानते थे कि क्या हुआ था। मेरा भाई कुंभकर्ण अनजान था क्योंकि वह सो रहा था। उसे अपने परदादा ब्रह्मा का श्राप मिला हुआ था जिसके कारण वह ज्यादातर समय सोता रहता था। मैंने उसे सूर्पनखा के राम से मिलने से लेकर अब तक की सारी बातें समझाईं। चूंकि सभी मुखिया इस बैठक में उपस्थित थे, इसलिए मैंने उन्हें उसी तरह समझाया जैसे वे स्थिति को समझते थे। हालांकि, कुंभकर्ण, जो विजया था, मेरी बात समझ गया। सुनते ही उसकी आँखें चमक उठीं और उसने मुझे ध्यान से देखा। यह हमारे बीच एक अनकहा संकेत था: वह भी मेरी तरह मन ही मन

खुश था। शुरुआत हो चुकी थी। लेकिन चूंकि सभी वहां मौजूद थे, उन्होंने कहा, "सीता को लंका लाने से पहले आपको मुझसे, विभीषण से और इस दरबार से सलाह लेनी चाहिए थी। आपने ऐसा नहीं किया। यदि आपने पहले ऐसा किया होता, तो आज युद्ध की यह स्थिति उत्पन्न न होती। खैर, जो हो गया सो हो गया। अब राम के समक्ष आत्मसमर्पण करना घोर अपमान है। हमारे पास कोई विकल्प नहीं बचा है। किसी अन्य विकल्प के बारे में सोचना मात्र समय की बर्बादी है। बिना समय बर्बाद किए युद्ध के लिए तैयार हो जाना ही बेहतर है। उस दूत ने पूरी लंका को जला दिया और हमारे कई सैनिकों को मार डाला। उस राम ने हमारी एक पूरी बटालियन को मार डाला। हमें उन्हें नहीं छोड़ना चाहिए। हमें उनसे बदला लेना चाहिए, उन्हें कम नहीं आंकना चाहिए। हमारी सेना सतर्क और हर स्थिति के लिए तैयार होनी चाहिए। याद रखें, यह करो या मरो की स्थिति है। हममें से प्रत्येक को सतर्क रहना चाहिए। मैं अब अपने किले में भोजन करने जा रहा हूँ और युद्ध के लिए तैयार हो जाऊँगा। जरूरत पड़ने पर मुझे बुला लेना।"

कुंभकर्ण के शब्दों से सभी को स्थिति की गंभीरता का एहसास हो गया। एक-एक करके प्रहस्त, दुश्मुख, वज्रदानुष्त, निकुंभ (कुंभकर्ण का पुत्र) और इंद्रजीत (मेरा पुत्र) आगे आए और शपथ ली कि वे अपनी सेनाओं को युद्ध के लिए तैयार कर लेंगे।

अब विभीषण की बारी थी और वह धीरे-धीरे चलते हुए आगे आया और युद्ध के लिए आपत्ति जताई। उन्होंने कहा, "यह हमारी गलती थी, स्पष्ट रूप से यह हमारी गलती थी। सूर्पनखा ने ही सबसे पहले सीता को चोट पहुँचाने की कोशिश की और बचाव में लक्ष्मण ने हमारी बहन को चोट पहुँचाई। करा और दूषण ने ही दो आदमियों से युद्ध करने की पहल की। हज़ारों सशस्त्र सैनिकों के सामने दो आदमी। यहाँ तक कि गणित भी कितना असंतुलित है। एक बार फिर, हमने उन दो आदमियों को युद्ध के लिए विवश किया। यह दूसरी बात है कि उन्होंने हमारी सेना का सफाया कर दिया और हमने इतने सारे प्राण खो दिए। असलियत यह है कि हमने राम को हमसे लड़ने के लिए विवश किया। हमने पहले आक्रमण किया। सीता का अपहरण करना रावण, मेरे भाई, तुम्हारी गलती थी। जब सच्चाई दूसरी तरफ है, तो युद्ध करना हमारे लिए उचित नहीं है। यह हमारे लोगों के हित में नहीं है। मैं एक बार फिर क्षमा चाहता हूँ; मेरा मन और आत्मा इससे सहमत नहीं है। मैं इसका समर्थन नहीं कर सकता। सत्य की हमेशा जीत होती है। मेरे भाई, तुमने ही मुझे यह सिखाया था और अब तुम दूसरी तरफ हो। मैं अपनी शिक्षा पर अडिग हूँ। चाहे तुम ही हो, मेरे गुरु और भाई, मैं फिर भी तुम्हारे आदेशों को अस्वीकार करता हूँ। मैं सत्य के साथ खड़ा रहना पसंद करता हूँ और मैं तुम्हारे शत्रु राम के पास जा रहा हूँ।"

मैंने भी उस पर दहाड़ मारी और उसे भगा दिया, जाते समय मैंने उसका और अपमान किया। मैं यही चाहता था, क्योंकि विभीषण मेरे राज्य और हमारी सेना की कार्यप्रणाली से भली-भांति परिचित था। उसके जाने से राम को लाभ होगा और इसका अर्थ है कि मेरे लिए युद्ध कठिन हो जाएगा; साथ ही इससे मुझे दैवीय अमरता प्राप्त करने में भी सहायता मिलेगी।

अब तक सब ठीक है। सब कुछ वैसा ही है जैसा मैंने सोचा था। जिसने मेरी हार की भविष्यवाणी की थी, उसे जनता बिना किसी संकोच के मेरे पतन के बाद अगला राजा मान लेगी। वह विभीषण था। इस राज्य से जो राम का साथ देगा, उसे युद्ध के बाद राम की ओर से सम्मान और कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में राज्य मिलेगा। वह भी विभीषण ही था, मेरा उत्तराधिकारी।

मेरा प्यारा दुश्मन

विभीषण के चले जाने के बाद और जब राज्य में सभी ने युद्ध की तैयारी में ज़ोर-शोर से जुट गए, तो मुझे अपने प्यारे दुश्मन की ताकत को समझने की इच्छा हुई।

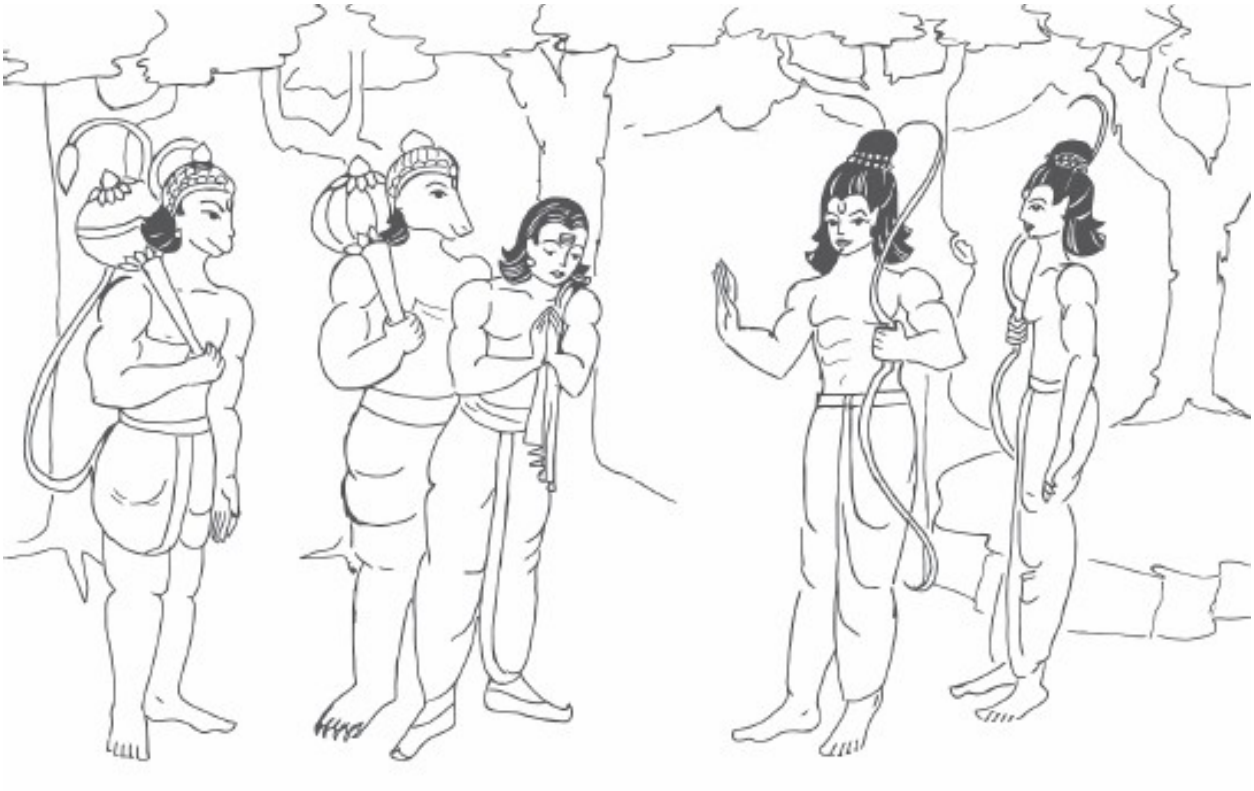

मैंने सरधू को जासूसी के लिए भेजा। उसे लौटने में समय लगा, लेकिन वह यह खबर लेकर लौटा कि विभीषण राम के पास पहुँच गया है और राम ने लक्ष्मण द्वारा संबंधित अनुष्ठान संपन्न करने के बाद उसे लंका का राजा घोषित कर दिया है। सरधू ने यह भी बताया कि उसने राम की सेना का बारीकी से अवलोकन किया और पाया कि राम की सेना विशाल थी, मेरी सेना से भी बड़ी। उसने कहा कि राम की सेना लगभग दस योजन (प्राचीन माप) तक सभी दिशाओं में फैली हुई थी और सैनिकों के सागर के समान थी। उसकी बात सुनकर इंद्रजीत और मेरे बाकी सैनिकों ने भारी संख्या में सबसे घातक हथियारों की व्यवस्था करने का निर्णय लिया।

सरधू ने आगे कहा, “हे प्रभु, यह केवल एक सेना नहीं थी; ऐसा लग रहा था मानो पूरी दुनिया राम के साथ खड़ी हो। मैंने मनुष्य, बंदर, भालू, गिलहरी, पक्षी और हर तरह के जीव-जंतुओं को उनके समर्थन में देखा। उनमें से कोई भी हमारे जैसे वेतनभोगी सैनिक नहीं थे। वे सभी राम के समर्थन में आए थे, क्योंकि

उन्होंने सुग्रीव जैसे अमानव की सहायता की थी, जिसके लिए वे उनके प्रति सच्ची श्रद्धा रखते थे। हे प्रभु, यह देखना अत्यंत अद्भुत है।"

तब मैंने एक और जासूस को विरोधी सेना के और करीब भेजने का फैसला किया और इस काम के लिए सुका को चुना। इस बार सुका सुग्रीव के पास दूत बनकर गया और उसने सुग्रीव से राम को अपना समर्थन वापस लेने का सुझाव दिया। हालांकि मैंने यह प्रयास किया, लेकिन मुझे पता था कि यह असफल होगा। मेरा विचार यह था कि मुलाकात के दौरान वह विरोधी सेना की ताकत का और करीब से जायजा ले सकेगा।

मेरे दरबार के सभी मुखिया तितर-बितर हो गए, और मैं अकेला रह गया। मेरे चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। मैं बार-बार सरधू की कही बातों के बारे में सोचने लगा। न केवल मनुष्य, बल्कि सभी प्रकार के पशु और पक्षी राम का समर्थन करने के लिए, वह भी प्रेम से, किसी भौतिक लाभ के लिए नहीं। यह सुनकर आश्चर्य हुआ। परम सत्य वास्तव में... परम सत्य है।

मुझे ब्रह्मा से वरदान मिला था कि मनुष्य के अलावा इनमें से कोई भी जानवर मुझे नहीं मार सकता। इसलिए, मेरा भाग्य निश्चित था। मुझे मारने वाले वही राम थे। लेकिन मेरे सैनिक इस जटिल सेना से कैसे लड़ेंगे? आमने-सामने की लड़ाई एक बात है। गोरिल्ला से लड़ना बिल्कुल अलग बात है; ठीक वैसे ही जैसे हाथी और भालू से लड़ना अलग-अलग बातें हैं। एक व्यक्ति एक साथ सौ आदमियों से लड़ सकता है, सौ हाथियों से लड़ सकता है और सौ गोरिल्लाओं से लड़ सकता है। लेकिन इन सभी से एक साथ कैसे लड़ा जाए! हर जानवर के साथ लड़ने की रणनीति अलग होती है और इन सभी से एक साथ निपटने की कोई एक तकनीक नहीं है। मेरा कोई भी सैनिक बटालियन के इस आश्चर्यजनक रूप से जटिल संयोजन का सामना कैसे करेगा? मेरे सैनिकों की युद्ध की कोई भी तकनीक यहाँ काम नहीं आएगी।

यह तो मेरी नियति थी कि मैं यह लड़ाई हार जाऊँगा। फिर भी, बिना पूरी ताकत से लड़े युद्ध में उतरना मज़ेदार नहीं होगा। हर किसी को परम शक्ति से लड़ने का मौका नहीं मिलता। मुझे इसे और कठिन बनाने का कोई तरीका ढूंढना चाहिए। मेरे मन में बस एक ही सवाल खटक रहा था कि राम ने इतनी जल्दी इन सभी प्राणियों के बीच तालमेल कैसे बिठा लिया? कैसे? कैसे? और कैसे?

मैंने कुछ देर सोचा। फिर मुझे जवाब मिल गया। वाह! मुझे पहले यह बात क्यों नहीं सूझी?

यही वह कारण था जिसके लिए हम दोनों पृथ्वी पर आए थे: मानवजाति को अच्छाई और बुराई का ज्ञान देना। मैं यह कैसे भूल सकता हूँ? मैंने बुराई की; वे अच्छाई कर रहे हैं। उन्होंने सुग्रीव के साथ अपने कर्मों और वाली को पराजित करके सभी प्राणियों को अच्छाई का ज्ञान दिया। राम के उन कर्मों ने समस्त प्राणियों के संसार को अच्छाई का प्रतीक बना दिया। यदि मैं अब मर जाऊँ, तो यह सिद्ध हो जाएगा कि अच्छाई हमेशा बुराई पर विजय प्राप्त करती है; यह संसार अच्छे और बुरे का ज्ञान प्राप्त कर लेगा और मेरा मिशन पूरा हो जाएगा।

यह परम सत्ता का सबसे बड़ा मानसिक खेल है। लेकिन फिर, बुराई की हार इतनी बुरी नहीं हो सकती। राम को राम के योग्य युद्ध देना ही था। मैं निश्चित रूप से इस युद्ध को और भी कठिन बनाने की पूरी कोशिश करूंगा ताकि यह दिखाया जा सके कि बुराई कितनी शक्तिशाली है, भले ही वह अच्छाई और सत्य के सामने टिक न सके।

पौराणिक संरचना

उस समय मुझे जो बात समझ में नहीं आ रही थी, वह यह थी कि इतनी विशाल और जटिल शत्रु सेना लंका तक कैसे पहुँचेगी, जो लगभग सौ अमाद दूर है और जहाँ ज़मीनी संपर्क बिल्कुल नहीं है। निस्संदेह, वहाँ हर किसी के पास हनुमान जैसी शक्ति नहीं थी, और अगर कुछ लोगों के पास ऐसी क्षमताएँ थीं भी, तो उनकी संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती थी। सिर्फ़ मैं ही नहीं, लंका में हममें से कोई भी यह अंदाज़ा नहीं लगा पा रहा था कि यह सेना हम तक कैसे पहुँचेगी। मैं विमान शास्त्र (विमानन विज्ञान) का विशेषज्ञ था और मुझे पूरा यकीन था कि इतनी बड़ी संख्या में सैनिकों को हवाई मार्ग से ले जाने की कोई तकनीक मौजूद नहीं है।

रामा और मेरे पास, दोनों के पास मिसाइल तकनीक थी, वैसी ही जैसी आज आपकी मानव जाति के पास है। मुझे अपने प्रतिद्वंदी के नज़रिए से सोचना पड़ा। शायद हमला हवाई मार्ग से हो; संभवतः मिसाइलों के रूप में। या फिर वे बड़ी संख्या में विमानों के साथ सीधे आ सकते हैं? मैंने लोगों की एक टीम को तैयार रखा और वे दिन-रात आसमान पर नज़र रखते रहे।

फिर अचानक मुझे उत्तरी तटरक्षक बलों से सूचना मिली कि उन्हें दूर से एक पुल का निर्माण होता हुआ दिखाई दे रहा है; और वह पुल अविश्वसनीय रूप से तेज़ गति से बन रहा है। यदि यह सच था, तो हमारे सैनिकों के पास द्वीप के उत्तरी भागों की ओर बढ़ने के लिए बहुत कम समय बचा था।

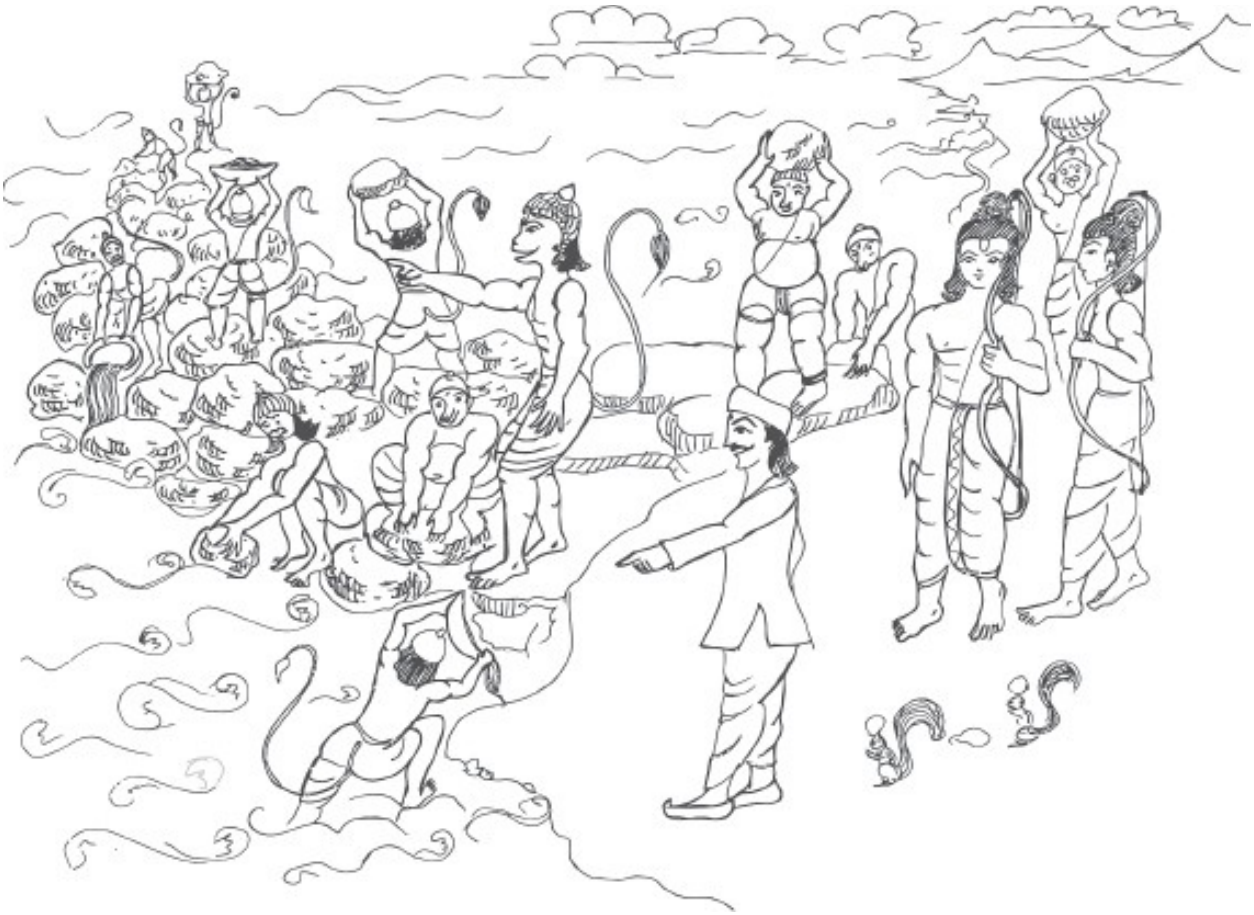

मुझे कुछ समय चाहिए था, इसलिए मैंने अपनी सेना को तुरंत आदेश दिया कि वे युद्धक्षेत्र को द्वीप के सबसे दक्षिणी छोर पर स्थापित करें। इससे मेरे सैनिकों को तैयारी करने के लिए कुछ समय मिल जाएगा। मैंने अपनी स्त्रियों से सीता को भी कुछ समय के लिए अशोक वनम में ही कहीं स्थानांतरित करने को कहा।

मेरी तेज़-तेज़ आदेशों के दौरान मेरे मन में यही सवाल उठ रहा था कि राम ने समुद्र पर पुल कैसे बनाया होगा। यह तो समुद्र था; कोई छोटी नदी या नाला नहीं। मैंने और जानकारी मांगी। समुद्र पर पुल बनाना मेरी उम्मीदों से परे था। और वह पुल जो निर्धारित गति से भी कहीं अधिक तेज़ी से बनाया जा रहा था, वह तो और भी आश्चर्यजनक था।

मुझे खबर मिली कि पुल बनाने का विचार उत्कृष्ट सिविल इंजीनियर नल का था और राम की इच्छा तथा सुग्रीव के मार्गदर्शन में इसे साकार किया गया। नल ने ऐसी तकनीक विकसित की जिससे पुल का निर्माण तेजी से हो सके और साथ ही सेना द्वीप की ओर आगे बढ़ सके। उनकी इंजीनियरिंग कुशलता और टीम वर्क के कारण सेना ने दो दिनों में समुद्र में लगभग एक तिहाई दूरी तय कर ली। तीसरे दिन वे आधी दूरी से थोड़ा अधिक तय कर पाए और शेष दो चौथाई दूरी तय करने में उन्हें केवल दो दिन लगे।

यह अद्भुत था; सचमुच प्रभावशाली। इस पौराणिक संरचना के कुछ हिस्से आज भी दोनों भूभागों के बीच समुद्र में दिखाई देते हैं। वाह! आपको इसे जीवन में कम से कम एक बार अपनी आँखों से अवश्य देखना चाहिए।

चलिए, मैं अपनी कहानी से थोड़ा हटकर आपसे, मेरे प्रिय पाठक, कुछ देर बात करना चाहता हूँ। आप मनुष्य क्षणिक भौतिक लाभों के लिए अपने इतिहास को नज़रअंदाज़ करने की प्रवृत्ति रखते हैं। लेकिन इस प्रक्रिया में आप यह महसूस नहीं कर पाते कि आप अपने पूर्वजों द्वारा अर्जित कुछ महान ज्ञान को खो रहे हैं। आप पुराने आविष्कारों को ही दोहराने की प्रवृत्ति रखते हैं। उदाहरण के लिए, नाला द्वारा निर्मित इस प्रसिद्ध पुल को लीजिए, जिसे बाद में विश्व ने राम सेतु के नाम से जाना। जैसे आज आपके संसार में कई आविष्कार सैन्य संरक्षण में जन्म लेते हैं, वैसे ही नाला ने कुछ हज़ार साल पहले इस असाधारण सिविल इंजीनियरिंग को आप मनुष्यों के लिए उपलब्ध कराया था। लेकिन आप यह सब भूलकर दुबई में पाम आइलैंड्स और सिंगापुर और कोलंबो जैसे तटीय शहरों के विस्तार के लिए इसी तरह की तकनीक को फिर से विकसित करने में जुट गए। यदि आपके लोग हमारी पीढ़ी द्वारा दी गई तकनीक को नहीं भूले होते, तो आप आज पुराने आविष्कारों को दोहराने के बजाय कहीं बेहतर चीजें बना रहे होते। कम से कम अब अपने इतिहास पर एक नज़र डालें, इससे आपको भविष्य में अधिक प्रभावी ढंग से सफल होने में मदद मिलेगी।

समझौते का आह्वान

एक दिन सुका दौड़ते हुए आया और बोला, “हे प्रभु, उन्होंने मुझे दूत नहीं बल्कि जासूस समझ लिया है। मैं इतने समय से सुग्रीव की हिरासत में था। हे प्रभु, हे प्रभु, राम की सेना लंका में प्रवेश कर चुकी है। राम युद्ध के लिए तैयार हैं। हमें भी तैयार रहना चाहिए। हमारे पास समय नहीं है।”

उनकी सांस अभी पूरी तरह से रुकी भी नहीं थी कि एक और रक्षक दौड़ता हुआ आया और बोला, “लंकादेश्वर! लंकादेश्वर! आपातकाल! आपातकाल! वानरों की सेना द्वीप में घुस आई है। उन्होंने हमें घेर लिया है। क्षितिज तक एक भी पेड़ ऐसा नहीं है जिस पर वानर विराजमान न हो। सभी पेड़, ज़मीन का हर टुकड़ा और सभी झीलें अब वानरों के कब्जे में हैं। कई और वानर अभी भी समुद्र पर बने उस नए पुल को पार कर रहे हैं। केवल लंका का मुख्य दरबार, हमारा सैन्य अड्डा और अशोक वनम ही सुरक्षित हैं। हम सब असमंजस में हैं और हमें आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता है।”

मैं जानना चाहता था कि राम आगे क्या करने वाले हैं, इसलिए मैंने सुका और सारा को एक बार फिर विरोधी सेना में घुसपैठ करने और उनकी गतिविधियों पर नज़र रखने और समय-समय पर रिपोर्ट देने के लिए कहा। सुका डरा हुआ था क्योंकि वह पहले भी पकड़ा जा चुका था। दोनों ने अपने सैन्य प्रशिक्षण के दौरान सीखी हुई जादूई शक्तियों की मदद से वानरों का वेश धारण करने का फैसला किया। बेचारे सुका और सारा यह भूल गए कि मेरा भाई विभीषण दूसरी तरफ था और उनके ये हथकंडे उसके सामने काम नहीं आएंगे।

वे वानरों के वेश में शत्रु सेना में प्रवेश कर गए और विभीषण ने तुरंत उन्हें पकड़ लिया। सुग्रीव और सेना के सभी लोग शुक और सारा को मारने ही वाले थे कि राम ने हस्तक्षेप किया और वानरों को रोककर जासूसों से कहा, "चिंता मत करो, मैं तुम्हें अभी नहीं मारूंगा। रावण ने जैसा कहा है, चारों ओर घूमकर हमारी शक्ति, हथियार और क्षमता देख लो। मेरा सुझाव है कि तुम अपने राजा से कहो कि वह सीता को सौंप दे और तुरंत आत्मसमर्पण कर दे। यदि वह ऐसा करता है, तो मैं उसे अभी भी क्षमा कर दूंगा। अन्यथा, उससे कहो कि वह युद्ध के लिए तैयार रहे।"

सुका और सारा ने आकर सारी बात समझाई और कहा, “हे प्रभु, आशा है आपको देवदेव, देवताओं के राजा, याद होंगे... आपने और आपके पुत्र मेघनाथ ने उन्हें बहुत पहले परास्त किया था। उस विजय के बाद आपके पुत्र को इंद्रजीत की उपाधि मिली थी, आशा है आपको याद होगा। हे प्रभु, इंद्र के विरुद्ध वह युद्ध बहुत कठिन था। आपने ब्रह्मा के वरदान के कारण वह युद्ध जीता था। इस स्थिति में राम, लक्ष्मण, आपके भाई विभीषण और सुग्रीव, ये सभी एक-एक इंद्र के बराबर हैं। आप जानते हैं कि राम और लक्ष्मण अधिक खतरनाक हैं, उनके हथियार उन्नत हैं और वे मनुष्य हैं। यद्यपि आप मनुष्यों को कमजोर समझते हैं, याद रखें कि आपके परदादा ब्रह्मा से प्राप्त वरदान आपको मनुष्यों से सुरक्षा प्रदान नहीं करता। हमें लगता है कि ये लोग केवल आपको मारने आए हैं। हम आपकी आज्ञा का पालन करते हैं, हे प्रभु, लेकिन हमारा विनम्र निवेदन है कि आप समझौता कर लें। राम एक महान बुद्धिमान व्यक्ति प्रतीत होते हैं। उन्होंने पहले भी समझौते के लिए अपने दूत हनुमान को भेजा था और अब भी इस समय वे आप पर दया कर रहे हैं। अब निर्णय लेना आपके हाथ में है।”

मैंने उन्हें देखकर वैसे ही मुस्कुराया जैसे उस दिन श्री हरि ने मुझे और विजया को देखकर मुस्कुराया था जब सनकनंद कुमार उनसे मिलने आए थे। यह अंतिम युद्ध नहीं था, यह स्नातक होने से पहले की अंतिम परीक्षा मात्र थी और मेरा कर्तव्य था कि मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करूं। यानी बुराई में सर्वश्रेष्ठ।

उस समय रामा मात्र एक मनुष्य थे। उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि वे मेरे प्रभु श्री महा विष्णु के अवतार हैं। वे मुझसे उसी प्रकार युद्ध करने वाले थे, जैसे आप और आपके आसपास के सभी मनुष्य कर सकते हैं।

राम, एक अकेला व्यक्ति, बस एक अकेला व्यक्ति। उनके पास जो कुछ था, वह था महान ज्ञान, शिक्षा और सत्य एवं अच्छाई की प्रबल भावना। इन्हीं गुणों ने उस अकेले व्यक्ति को एक विशाल और जटिल सेना का स्वामी बना दिया। और अब, उस पूरी सेना के बावजूद, वह अकेला व्यक्ति मुझे मारने जा रहा था। यही है सत्य और अच्छाई के लिए खड़े रहने की शक्ति।

दुर्भाग्य से, आज के कई आधुनिक पुरुष और महिलाएं इस बात को नहीं समझते और छोटी-छोटी बातों पर आत्महत्या कर लेते हैं, जैसे: पिताजी ने डांट लगाई, स्कूल या किसी प्रतियोगी परीक्षा में फेल हो गए, प्यार ठुकरा दिया गया आदि। याद रखिए, यह सही रास्ता नहीं है। कोई भी भगवान इसे स्वीकार नहीं करता और अगर आप ऐसा करते हैं, तो मेरी बात मानिए, आपको बार-बार जन्म लेना पड़ेगा और ऐसी ही परिस्थितियों का बार-बार सामना करना पड़ेगा, जब तक आप सच्चाई को स्वीकार करना, बेहतरी के लिए काम करना, कठिनाइयों पर काबू पाना और सत्य और अच्छाई के मार्ग पर चलना नहीं सीख लेते। यहां तक कि जब मैंने सीता का अपहरण किया था, तब राम को भी आत्महत्या करने का मन हुआ था, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने इसे स्वीकार किया और स्थिति से उबरने के लिए काम करना शुरू कर दिया। अब उनका सामना मुझसे था, जो इस ग्रह पर सबसे शक्तिशाली हूं। यही है मानवीय इच्छाशक्ति की शक्ति और आपको इसे कम नहीं होने देना चाहिए।

दूसरी तरफ से

मैंने सुका और सारा से कहा कि समझौता तो संभव ही नहीं है और उन्हें शीर्ष पदों पर तैनात कर दिया, जहाँ से वे एक सुविधाजनक स्थान से विरोधी सेना का सर्वेक्षण कर सकें।

जब हम सेना को देख रहे थे, सारा ने नीला, अंगधा (वाली का पुत्र), हनुमान, नल, स्वातदा, कुमुधा, रामभू और सरबा की ओर इशारा करते हुए कहा कि उनमें से प्रत्येक के पास हमारी बटालियनों को पल भर में निष्क्रिय करने की अपार शक्ति है।

इस बार मैंने मोहोदरा और सार्धु को विरोधी पक्ष के समय की जासूसी करने के लिए भेजा। मैंने उनसे विशेष रूप से यह पूछा कि मुझे राम, लक्ष्मण और अधिकांश सेना के विश्राम और सोने का समय चाहिए। मैंने उन्हें ऐसा करने के लिए कहा था, लेकिन उस समय उन्हें पता नहीं था कि वे राम के सोने के समय किसी हमले की योजना बना रहे हैं। वे एक अस्पष्ट रिपोर्ट लेकर लौटे कि राम की सेना की जासूसी करना असंभव था, और वह भी तब जब विभीषण दूसरी तरफ थे। मुझे मन ही मन विभीषण को गले लगाने का मन हुआ, क्योंकि उन्होंने राम को बहुत बड़ा सहारा दिया था।

मेरे मन में एक अजीब सी योजना आई। मुझे पता है कि मैं इसमें असफल हो जाऊंगा, लेकिन मैंने तय किया है कि रास्ते में मैं मानवता को बुराई की पराकाष्ठा अवश्य दिखाऊंगा।

मैंने राम को कुटिल तरीके से हराने का सोचा। मैंने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए अपने रचनात्मक शुभंकर डिजाइनर विद्युजिहना को बुलाया और उनसे राम का नकली सिर बनाने को कहा।

मेरा इरादा सीता को यह दिखाने और यह कहने का था कि राम युद्ध के मैदान में शहीद हो गए। यह बहुत बुरा था। यह बहुत क्रूर था। जब वह रो रही होती, तो मैं उसे अपने फैसले पर पुनर्विचार करने का अवसर देता। क्या वह लंका में सुखी जीवन जीना चाहती?

जब सिर तैयार हो गया, तो मैंने अपनी दासियों से सीता को उस स्थान पर लाने को कहा जहाँ विद्युजिह्व ने “राम का सिर” ढाल पर रखा था। उसे देखकर सीता रोने लगीं। अचानक, मैं उनका रोना सहन नहीं कर सका। फिर भी मैंने चेहरे पर क्रूर हँसी का भाव लादकर वहाँ से चला गया। जाते समय मैंने विभीषण की पत्नी सरमा को जल्दी में आते देखा। मुझे राहत मिली! मैं जानता था कि सरमा सीता को सांत्वना देंगी क्योंकि वह विद्युजिह्व की रचनाओं को भली-भांति जानती थीं। मैं यह भी जानता था कि सरमा मेरी हार चाहती थीं क्योंकि उनके पति राम के लिए लड़ रहे थे।

आपको यहाँ यह समझना चाहिए कि राम की मृत्यु का विश्वास दिलाने के मेरे सफल प्रयास के बावजूद सीता ने मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। यह प्रेम, सत्य और अच्छाई के प्रति उनका दृढ़ संकल्प था। यदि वे सच्चे प्रेम के लिए वहाँ न खड़ी होतीं, तो राम युद्ध में हार सकते थे; क्योंकि यदि सीता लंका में ही रुक जातीं, तो राम के युद्ध छेड़ने का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

उस क्षण मुझे ऐसा लगा मानो पूरी दुनिया अच्छाई से भर गई हो और बचा हुआ एकमात्र छोटा सा काला बिंदु मैं ही हूँ। मुझे पूरा विश्वास हो गया कि यह ग्रह अपनी अंतिम सांस तक राम की यात्रा को रामायण के रूप में अवश्य याद रखेगा।

मेरी माँ का फैसला और मेरा फैसला

जब मैं वहाँ पहुँचा, तब तक मेरी माता और मेरे दो वरिष्ठ मंत्री, अविग्धा और माल्यवंथ, मेरे महल में मेरा इंतज़ार कर रहे थे। मैंने माता से आशीर्वाद लिया और मंत्रियों के आतिथ्य सत्कार का प्रबंध किया। इसके बाद मैंने उनसे उनके आने का उद्देश्य पूछा।

माल्यवंथ ने कहा, "प्रिय रावण, हम राज्य में हो रही घटनाओं से अवगत हैं। युद्ध की घोषणा से तुम्हारी माता, हम दोनों और समस्त नागरिक व्याकुल हैं। अपने अनुभव से मैं कह सकता हूँ कि युद्ध अंतिम विकल्प होना चाहिए; यह तब किया जाता है जब दोनों पक्षों के बीच किसी भी प्रकार की बातचीत या समझौते की कोई गुंजाइश न हो। तुम्हारे मामले में, केवल तुम ही बातचीत या समझौते के लिए अनिच्छुक थे, दूसरे पक्ष ने तुम्हारे ही सैनिकों के माध्यम से समझौते का स्पष्ट संदेश भेजा था। मेरा सुझाव है कि अंतिम कदम उठाने से पहले एक बार फिर सोच लो।"

मैंने सुना और शांत भाव से अविग्धा की ओर मुड़ा। उसने कहा, "हाँ रावण, माल्यवंता ने जो कहा वह सही है। हमारे पास अभी भी युद्ध टालने का मौका है। अगर युद्ध हुआ तो जीत या हार गौण है। असल बात यह है कि हमारे बहुत से सैनिक मारे जाएँगे, बहुत से बच्चे अपने पिता को खो देंगे, हमारे बहुत से संसाधन नष्ट हो जाएँगे और हमारी बहुत सी संस्थाएँ ध्वस्त हो जाएँगी। कृपया इन बातों पर भी विचार करें।"

इसी बीच, मेरी माँ मेरे पास आईं, मुझे अपने पास बिठाया, मेरे माथे पर चुंबन किया और बोलीं, "मेरे बेटे, मंत्रियों की बात सही है। हम पहले ही अपने कई सैनिक खो चुके हैं। हमने कारा और दूषण जैसे महान योद्धाओं को खो दिया है। मैंने अपने कई सैनिकों से तुम्हारे शत्रु की शक्ति के बारे में सुना है। हमारी कई स्त्रियाँ और बच्चे भविष्य को लेकर बहुत भयभीत होकर मेरे पास आए हैं। इसके अलावा, जैसा कि माल्यवंत ने कहा, राम ने हमारे सैनिकों के साथ समझौता करने का संदेश भेजा है और हमारे सभी नागरिक इस बात से भलीभांति परिचित हैं। अब हमारे लिए समझौता करना आवश्यक है। इसे रोक दो! यदि तुम ऐसा नहीं करोगे; यदि तुम युद्ध को आगे बढ़ाओगे तो तुम अपने ही नागरिकों की नज़र में बुरे बन जाओगे। मुझे यकीन है कि तुम्हें यह पसंद नहीं आएगा। तुम्हारे पास सबसे सुंदर स्त्रियाँ हैं। मैं चाहती हूँ कि तुम सीता को उनके पति के पास वापस भेज दो। ज़रा सोचो, अगर कोई तुमसे मंदोदरी को छीनने की कोशिश करे, तो क्या तुम उसके लिए नहीं लड़ोगे? राम अभी वही कर रहे हैं। मुझे या हमारे किसी भी सैनिक को राम के इस कार्य में कोई दोष नहीं दिखता। हमारे सभी पुरुष और स्त्रियाँ तुम्हारा बहुत सम्मान करते हैं, मेरे बेटे।" पुत्र, इसीलिए वे तुम्हारे विरुद्ध कोई आपत्ति नहीं उठा रहे हैं और न ही विद्रोह कर रहे हैं। तुम्हें इस सम्मान को बनाए रखना चाहिए। तुम्हारी माता होने के नाते और इस भूमि और इसके लोगों की जिम्मेदारी होने के नाते, मैं तुम्हें रावण से समझौता करने की सलाह देती हूँ। और एक आखिरी बात, मेरे पुत्र, यदि तुम युद्ध करने का निर्णय लेते हो, तो याद रखना कि मुझे राम पर तुम्हारी

विजय की संभावना बहुत कम लगती है। एक माँ अपने बेटे को अपनी आँखों के सामने मरते हुए, उस पर बुराई का दाग लगे हुए कैसे देख सकती है? मुझे नहीं लगता कि मेरा हृदय यह सहन कर पाएगा। मैं आशा करती हूँ कि मुझे यह दिन कभी न देखना पड़े।

बोलते समय वह मेरी आँखों में टकटकी लगाए देख रही थी। मैंने एक शब्द भी नहीं कहा, न सहमति में और न असहमति में। उसने कहा, "मैं उस विपत्ति को देखने के लिए अपनी आँखें खुली नहीं रखूँगी। रावण, मुझे जो कहना था कह दिया। मंत्रियों ने भी अपना फैसला सुना दिया है, अब सब कुछ तुम्हारे हाथ में है।" मैं चुप रहा। वह दोनों मंत्रियों के साथ चली गई।

मैं क्या कह सकता था? मुझे पता था कि उन्होंने जो कुछ भी कहा वह सही था। इस धरती पर मेरे जन्म से पहले और मेरे शासनकाल के दौरान भी, किसी ने भी मेरे ऐसे कृत्यों पर सवाल नहीं उठाया। जब मैंने अपने भाई कुबेर से यह लंका जबरदस्ती छीनी, तब किसी ने सवाल नहीं उठाया; जब मैंने और मेरे पुत्र ने इंद्र पर आक्रमण किया, तब किसी ने सवाल नहीं उठाया; जब वाली ने सुगीव की पत्नी रूमा का अपहरण किया, तब किसी ने सवाल नहीं उठाया। तो अब सब मुझसे सवाल क्यों कर रहे थे? ऐसा लगता है कि यह दुनिया अच्छे और बुरे के बीच का अंतर सीख रही है। रावण के रूप में मेरे अवतार से पहले, यह दुनिया ऐसी स्थिति में थी जहाँ अच्छे और बुरे के बीच का अंतर करना असंभव था। अब वे अंतर कर पा रहे हैं और इसका अर्थ है कि इस धरती पर मेरा आगमन सार्थक हो रहा था।

अंतिम पुकार और युद्ध का सायरन

मैंने युद्ध का विकल्प चुना और इसमें कोई संदेह नहीं है। चूंकि मुझे अपने प्रतिद्वंदी की ताकत के बारे में जानकारी मिल चुकी थी, इसलिए मुझे उनकी ताकत को कम करना ही था। मैंने युद्धक्षेत्र की योजना बनाई और उच्च स्तरीय बैठक बुलाई।

सभा में मैंने घोषणा की, "मेरे प्रिय योद्धाओं और सैनिकों, अब समय आ गया है कि हम संसार को अपनी शक्ति दिखाएँ। इसे एक अवसर समझो और याद रखो कि राम हमारा शत्रु है, उस पर और उसकी सेना पर विजय पाना अनिवार्य है। हमें उनका जीवन कष्टमय बना देना चाहिए। मैं आपको एक बात बता दूँ: अब हमारे शत्रु को केवल मनुष्य ही नहीं, बल्कि सभी प्रकार के पशु और पक्षी भी समर्थन दे रहे हैं। राम पर विजय पाना उन सभी पर विजय पाना है, और उन सभी पर विजय पाना समस्त जीवित प्राणियों पर अधिकार प्राप्त करना है। क्या आप हमारे सामने मौजूद इस महान अवसर को नहीं देख रहे हैं? हमें ऐसा करना चाहिए और इसके लिए मेरे पास एक योजना है।"

मैंने अपनी योजना समझाना शुरू किया और उनसे कहा कि वे हमारी सेनाओं को पाँच भागों में बाँटकर पाँच अलग-अलग तरीकों से दुश्मन पर हमला करें। मैंने प्रहस्त को पहले भाग का नेतृत्व करने के लिए कहा, महोदरा और महापस्व्य मिलकर दूसरे भाग का नेतृत्व करेंगे, विरुपाक्ष तीसरे भाग का, इंद्रजीत चौथे भाग का और मैं स्वयं सुका और सारा के साथ पाँचवें भाग का नेतृत्व करूँगा।

दूसरी ओर विभीषण ने मेरे रेखाचित्र को भांप लिया और राम को सतर्क कर दिया। राम ने भी अपनी सेना को विभाजित करने का आदेश दिया। अब राम की ओर से नील अपनी सेना के साथ प्रहस्त और उसकी सेना से युद्ध करने जा रहे थे। वाली के पुत्र अंगध अपनी सेना के साथ महोदरा और महापस्व्य की सेना पर गुरिल्ला युद्ध की तैयारी कर रहे थे। सुग्रीव, जाम्बवंत और मेरे भाई विभीषण विरुपाक्ष का सामना करने जा रहे थे। दूत हनुमान इंद्रजीत पर आक्रमण करने वाले थे। राम और लक्ष्मण दोनों भाई मेरा सामना करने वाले थे।

दोनों पक्षों की तैयारी पूरी हो चुकी थी। इसी बीच सुग्रीव क्रोधित हो गए और अचानक मुझ पर हमला करने की कोशिश करने लगे। वे सफल नहीं हो सके और अपनी सेना के पास लौट गए। मैंने सुना है कि राम ने बाद में सुग्रीव को ऐसे अकेले निर्णय लेने से बचने की चेतावनी दी, क्योंकि उन पर भी एक विशाल राज्य का भार था, और इसलिए उन्होंने समय-समय पर युद्ध तकनीकों का अभ्यास करने का सुझाव दिया।

युद्ध की सारी तैयारी हो चुकी थी। मुझे अपने द्वारपाल का फोन आया कि राम की ओर से एक और दूत आया है। मैंने द्वारपाल से दूत को अंदर भेजने को कहा। वह अंगधा था, जिसने सुलह का वही संदेश दिया, लेकिन इस बार उसने कहा कि राम की ओर से सुलह का यह अंतिम प्रस्ताव है। मैं यह जानता था और मैंने प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए उसे वापस भेज दिया।

दोनों तरफ युद्ध के सायरन बजने लगे और दोनों तरफ युद्ध के झंडे आसमान में लहराने लगे। पूरा लंका हाई अलर्ट पर था, कोई सो नहीं पा रहा था। सबकी जान हमारे हाथों में थी।

अंतिम युद्ध भाग 1

जैसे ही युद्ध की घोषणा हुई, वानरों ने बड़े-बड़े पत्थर उठाए और किले के चारों ओर बनी खाई (सुरक्षा नहर) को बंद कर दिया और विभीषण की मदद से उन्होंने मेरे भूमिगत सुरंग नेटवर्क के सभी प्रवेश द्वारों को बंद कर दिया।

इंद्रजीत अंगधा से, जम्भुमाली हनुमान से, तपन गज से, निकुंभ नीला से, और अन्य योद्धा युद्ध कर रहे थे। इसी बीच, विभीषण के मंत्रियों में से एक संपथी ने प्रजंग का वध कर दिया, सुग्रीव ने प्रगासा का वध कर दिया और सरेनु ने विद्युन्माली का वध कर दिया। शाम ढलने लगी और सूर्य लगभग अस्त हो चुका था। फिर भी कोई रुकना नहीं चाहता था और युद्ध जारी रहा।

यमसत्र, महापार्श्व, महोदरा, महाकाया, वज्रधमस्त्र, शुक और सारा सहित अनेक सैनिकों की एक सेना ने राम पर आक्रमण किया, जिसका उद्देश्य आरंभ में ही उनके अग्रदूत को मार गिराना था। राम ने छोटे-छोटे तीरों से जड़े बाण चलाए। वे बाण उनके धनुष से ऐसे निकलते रहे मानो आपस में जुड़े हुए हों। मेरे सैनिक केवल बाणों को आकाश में उठते और वर्षा की तरह उन पर गिरते हुए देख सके। बाण चलाते समय राम के हाथ इतनी तेजी से चल रहे थे कि वे धुंधले दिखाई दे रहे थे। मेरे हजारों सैनिक मारे गए और खून की धाराएं समुद्र में बह गईं।

युद्ध रुका नहीं... यह निरंतर चलता रहा। अंगद इंद्रजीत से लड़ रहा था। उसने इंद्रजीत के सारथी और रथ के घोड़ों को मार डाला था। इंद्रजीत की एक अनोखी युद्ध तकनीक थी। वह अदृश्य होकर युद्ध जारी रख सकता था। अपने घोड़ों और सारथी को खोने के बाद, उसने अदृश्य रूप धारण कर लिया और युद्ध जारी रखा। राम और उनके साथी यह देखकर अचंभित रह गए कि वे इंद्रजीत को देख नहीं पा रहे थे और इंद्रजीत लगातार बाण चला रहा था। दोनों पक्षों के सैनिकों ने युद्ध रोक दिया और आकाश की ओर देखने लगे कि कहीं से बाण तो नहीं आ रहे। इस दौरान कई वानर मारे गए। राम अदृश्य इंद्रजीत पर निशाना नहीं लगा सके। उन्होंने अपना ध्यान इंद्रजीत के बाणों पर केंद्रित किया। लक्ष्मण तुरंत राम के पीछे आए और दोनों ने मिलकर अदृश्य इंद्रजीत द्वारा चलाए गए हर बाण का प्रतिकार किया। इंद्रजीत को लगा कि वह युद्ध हारने वाला है और फिर उसने अपने सबसे शक्तिशाली अस्त्र का प्रयोग करने का निर्णय लिया। उसने नागस्त्रम चलाया।

नागस्त्रम सीधे राम और लक्ष्मण की ओर बढ़ा और दोनों बेहोश होकर गिर पड़े। सुग्रीव और वानर तुरंत चिंतित हो गए, लेकिन विभीषण आगे आए और उन्हें आश्वस्त किया, “राम और लक्ष्मण मरे नहीं हैं, वे केवल बेहोश हैं।”

इंद्रजीत की जानकारी के अनुसार, नागस्त्रम का कोई प्रतिकार नहीं था, इसलिए वह गर्व से मेरे पास आया और कहा कि उसने युद्ध समाप्त कर दिया है और जीत हमारी है। मैं कुछ पल के लिए स्तब्ध रह गया, लेकिन फिर तुरंत समझ गया कि यह केवल उस बच्चे का अनुमान था। मैंने उसे देखकर मुस्कुराया

और उससे सीता के शवों का विमान से हवाई दृश्य देखने का प्रबंध करने को कहा। इंद्रजीत को मुझसे और अधिक उम्मीद थी और वह निराश हुआ। फिर भी, उसे अपनी निराशा न दिखाने का प्रशिक्षण दिया गया था। उसने मेरी बात मान ली और तुरंत प्रभारी महिला को सीता का हवाई दृश्य देखने का प्रबंध करने का आदेश दिया। फिर वह विश्राम करने चला गया।

इस प्रकार सीता को वही देखने को मिला जो मैं उन्हें दिखाना चाहता था: राम और लक्ष्मण के शव युद्धक्षेत्र में पड़े थे, जबकि वानर उनके चारों ओर व्याकुल और मौन खड़े थे। त्रिजटा, जो उस समय सीता के साथ थीं, ने उन्हें यह कहकर सांत्वना दी कि वे दोनों मरे नहीं हैं, बल्कि केवल बेहोश हैं। सीता के देखते ही देखते राम को होश आ गया, लेकिन लक्ष्मण हिलने-डुलने में असमर्थ थे। राहत पाकर सीता अशोक वन लौट गईं।

विभीषण ने एक बार फिर पूरी सेना का मनोबल बढ़ाया और सुझाव मांगे। सुग्रीव ने सुझाव दिया कि वे और उनकी टीम युद्ध जारी रखें, जबकि राम और लक्ष्मण को उपचार के लिए किष्किंधा वापस ले जाया जा सकता है। सेना में विभिन्न सुझावों पर चर्चा हुई। सुसेना ने सुझाव दिया कि हनुमान को हिमालय भेजा जाए ताकि वे संजीव करणी और विशाल्य करणी लाएँ—जीवनदायी जड़ी-बूटियाँ जिनका उल्लेख इतिहास में क्षीर सागर मदनम और देव-असुर युद्ध के दौरान हुआ था।

विकल्पों पर चर्चा चल रही थी तभी तेज हवा चली और एक अज्ञात, रहस्यमय लेकिन मनमोहक दिखने वाला विशाल चील (रोक) राम के पास आकर बैठ गया। राम और लक्ष्मण दोनों को पूरी तरह होश आ गया। पूरी सेना में आत्मविश्वास भर गया। राम खड़े हुए और चील से कहा कि यद्यपि उन्हें उसकी पहचान याद नहीं आ रही है, फिर भी उन्हें ऐसा लग रहा है जैसे वे उसे जानते हों। उन्होंने चील से अपनी पहचान बताने का अनुरोध किया। चील ने उत्तर में कहा कि उसका नाम गरुड़ है। गरुड़ ने कहा, "मैं इस समय इससे अधिक कुछ नहीं बता सकता।" राम को विजय का आश्वासन देते हुए वह उड़ गया। गरुड़ के इन शब्दों ने राम की सेना में नई ऊर्जा और आत्मविश्वास भर दिया।

इस संदर्भ में आपको, पाठक, यह समझना चाहिए कि जब आप पूरे मन और हृदय से अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं, जब आप न्याय और सत्य के लिए खड़े होते हैं; कठिन समय में जब आपको कोई उम्मीद की किरण नहीं दिखती, तब एक अज्ञात शक्ति आपका सहारा बनती है और वह है दैवीयता। क्या आपने अपने जीवन में कम से कम एक बार ऐसा अनुभव किया है? मुझे यकीन है कि आपने किया होगा। आगे पढ़ने से पहले अपने जीवन में ऐसे उदाहरणों के बारे में सोचें। यदि आप ऐसा करते हैं, तो मुझे विश्वास है कि आप भी अपने जीवन में दैवीयता की एक सूक्ष्म झलक पा सकेंगे।

थोड़ा आराम करो और फिर वापस आओ। हम लड़ाई जारी रखेंगे।

अंतिम युद्ध भाग 2

रामा के वापस अपने असली रूप में आते ही वानर सेना (बंदरों की सेना) खुशी से उछल पड़ी और नई, कई गुना अधिक ऊर्जा के साथ तैयार हो गई। रामा की सेना का हर एक सैनिक हमें हराने के लिए बेताब था। हमारी तरफ से किए गए हर हमले को वे व्यक्तिगत रूप से ले रहे थे। उनका एकमात्र उद्देश्य मुझे मारना और मेरी सेना को हराना था। ऐसा लग रहा था मानो रामा मुझे माफ भी कर दें, तो ये वानर नहीं मानेंगे। वे न्याय के लिए मरने को तैयार थे और उन्होंने एक बार फिर युद्ध के सायरन बजा दिए। इस बार सायरन सिर्फ सायरन नहीं था, बल्कि इसने पूरे द्वीप को दहला दिया। इसे सुनकर लंका का हर नागरिक कांप उठा। मेरे सभी सैनिक स्तब्ध थे और इंद्रजीत मानो सुन्न पड़ गया था।

Dhumrakshas turn:

मैंने सबसे अनुभवी योद्धाओं में से एक धूमरक्ष को बुलाया और उसे भेजा। वह अपनी टीम के साथ युद्ध के मैदान में अपनी शक्ति साबित करने के लिए पहुंचा।

धूम्रक्ष ने कई वानरों को कड़ी टक्कर दी। उनमें से कई खून बहने से मरणासन्न हो गए, फिर भी कोई पीछे नहीं हटा। बुरी तरह घायल वानरों को देखकर हनुमान क्रोधित हो गए। उन्होंने दहाड़ लगाई, एक विशाल चट्टान उठाई और धूम्रक्ष पर फेंक दी। चट्टान को अपनी ओर आते देख धूम्रक्ष एक तरफ कूद गया और बच निकला। हालांकि, उसका रथ चकनाचूर हो गया।

धूम्रक्ष और हनुमान आमने-सामने खड़े थे। दोनों एक-दूसरे पर दहाड़ते हुए भयंकर युद्ध छेड़ दिया। कुछ देर बाद धूम्रक्ष पीछे हटकर हनुमान पर अपना गदा फेंक दिया। हनुमान क्रोधित होकर एक और विशाल चट्टान उठाकर धूम्रक्ष को खून से लथपथ कीचड़ में पटक दिया। नेता हारकर धूम्रक्ष की सेना भयंकर वानरों से अपनी जान बचाने के लिए तितर-बितर हो गई।

अब वज्रधानिष्ट की बारी:

धुरमाक्ष के न रहने का ज्ञान होने पर मैंने वज्रधानिष्ट और उनकी सेना को भेजा। वे अंगधा और उनकी सेना से लड़ने के लिए दक्षिण द्वार से गए। अंगधा ने हनुमान का अनुसरण किया और पत्थरों से मेरे कई सैनिकों को मार गिराया। वज्रधानिष्ट अंगधा के हाथ मरोड़ने के लिए उनके करीब आए, लेकिन अंगधा ने तुरंत अपनी तलवार निकाली और वज्रधानिष्ट का सिर धड़ से अलग कर दिया।

अकम्पास (सेना-पति: कमांडर इन चीफ) बारी:

इस बार मैंने अकम्पा को भेजा; वह अपनी सेना के साथ कुमुद, नल, मैंध और द्विवेद की सेनाओं पर टूट पड़ा। अकम्पा तीरंदाजी में निपुण था और वानरों को अकम्पा के बाणों का सामना करना मुश्किल हो रहा था। वे उसके बाणों से बच नहीं पा रहे थे और अकम्पा के करीब भी नहीं पहुँच पा रहे थे। लड़ाई काफी देर तक चली और फिर मेरे प्रिय शत्रुओं के सबसे प्रिय हनुमान ने युद्ध में भाग लिया। हनुमान ने

अपनी जानी-मानी रणनीति अपनाते हुए पर्वतीय चट्टानों को उठाया और उन्हें इस तरह रखा कि वे वानरों की रक्षा कर सकें और अकम्पा के बाण चट्टान से टकराकर नीचे गिरने लगे। अकम्पा के पास बाणों के लिए एक मध्यम आकार का अस्त्र भी था। उसका उपयोग करके अकम्पा ने हनुमान की चट्टान को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। तब तक हनुमान अकम्पा के लगभग करीब पहुँच चुके थे। बलवान, रामभक्त हनुमान ने एक विशाल वृक्ष को जड़ से उखाड़कर अकम्पा के सिर पर पटक दिया। इसके साथ ही अकम्पा ने अंतिम साँस ली।

Prahasthas turn:

मैंने प्रहस्त को बुलाया और स्थिति का जायजा लिया। रणनीति के बावजूद, अपने सबसे शक्तिशाली योद्धाओं को भेजने के बावजूद, हमारे सभी प्रयास विफल रहे थे। मैंने उससे कहा, “हमारी सेना वानर सेना का सामना नहीं कर सकती। वे मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक शक्तिशाली थे। अब समय आ गया है कि मैं, तुम, कुंभकर्ण, इंद्रजीत और निकुंभ अपनी विशेष रूप से प्रशिक्षित टीमों के साथ इस चुनौती का सामना करें। ये मुख्य टीमें अधिक शक्तिशाली हैं और इनके पास उन्नत हथियार भी हैं।” उसने चुपचाप सिर हिलाया। मैंने प्रहस्त को अपनी टीम के साथ पहले जाने का निर्देश दिया।

प्रहस्त उन लोगों में से एक था जिन्होंने सुझाव दिया था कि हम सीता को राम को सौंप दें और सुलह का मार्ग अपनाएं। लेकिन युद्ध का समय होने के कारण और प्रहस्त की वीरता को देखते हुए, उसने मेरी आज्ञा का पालन किया और युद्ध के मैदान में चला गया।

प्रहस्त मेरी सेना के लगभग एक तिहाई भाग का नेतृत्व कर रहा था। उसके आगमन पर विभीषण ने राम और सुग्रीव को सतर्क किया और मेरे शत्रु को प्रहस्त की शक्ति के बारे में बताया। वानरों ने प्रहस्त और उसकी सेना पर क्रोधित होकर चीख मारी। नारंतक, कुंभाहन, महानाद और सम्मुन्नथ के नेतृत्व में प्रहस्त की सहायक टुकड़ियों ने कई वानरों को मार डाला। इसके बावजूद, वानरों ने साहस नहीं खोया। उन्होंने चुनौती स्वीकार की और लड़ाई जारी रखी। इसी बीच वानर नेता द्विवेद, दुर्मुख, थारा और भालू नेता जाम्बवंथ ने प्रहस्त की टुकड़ियों को दबा दिया।

अंततः यह आमने-सामने की लड़ाई में बदल गया। दो दिग्गज योद्धा—मेरी टीम से प्रहस्त और राम की टीम से नीला—आपस में भिड़ गए। अंत में नीला ने प्रहस्त को नॉकआउट कर दिया।

प्रहस्त की मृत्यु की खबर सुनकर मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। वह अपने वचन का पालन कर सकता था। वह विभीषण की तरह शिविर छोड़कर राम के साथ शामिल हो सकता था। फिर भी उसने मेरे प्रति प्रेम के कारण ऐसा नहीं किया। अब उसकी इस निष्ठा ने उसे अंतिम साँस दिला दी।

धूम्रक्ष, वज्रधानिष्ट, अकम्पा और प्रहस्त महान योद्धा थे। तब तक इनमें से किसी को भी हार का सामना नहीं करना पड़ा था। अब वे नहीं रहे। निःसंदेह वे वानरों और राम की सेना से कहीं अधिक शक्तिशाली थे। वानरों के हाथों हारना न तो अपेक्षित था और न ही हमने कभी सपने में भी सोचा था। वास्तव में, वानर मेरे सैनिकों से अधिक शक्तिशाली नहीं हैं। तो मेरे सैनिकों के साथ यह त्रासदी कैसे घटी? यहाँ आपके लिए कुछ सबक हैं: पहला, बुराई चाहे कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, वह मौन अच्छाई पर केवल अस्थायी या अल्पकालिक विजय ही प्राप्त कर सकती है। दूसरा, जिस क्षण अच्छाई और धैर्य का विस्फोट होता है, बुराई के लिए कोई जगह नहीं बचती। और अंत में, अच्छाई की शक्ति की कोई सीमा या बाधा नहीं होती। इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए, मैं एक सरल उदाहरण देता हूँ: एक मासूम बिल्ली जो हर छोटी सी आवाज पर उछल पड़ती है, जब उसे एक बंद कमरे में घेर लिया जाता है जहाँ से भागने का कोई रास्ता नहीं होता, तो वह एक भयंकर शेर में बदल जाती है।

अंतिम युद्ध भाग 3

मैं उत्साहित था, अब युद्ध के मैदान में जाने का समय आ गया था। मैं उत्साहित था, श्री हरि के दर्शन का समय आ गया था। मैं उत्साहित था, मैं जा रहा था और शायद रावण के रूप में इस ग्रह पर एक और सूर्योदय देखने का मौका न मिले। आज मैं रावण के रूप में अपना मिशन पूरा कर सकता हूँ और वैकुंठम वापस लौट सकता हूँ।

मेरा चेहरा खुशी से खिल उठा था। युद्ध में जाने के बावजूद मैं शांत और स्थिर था। बेशक, यह पूरी दुनिया का युद्ध था, राजकुमार राम और शक्तिशाली रावण के बीच का युद्ध। लेकिन मेरे लिए, इस धरती पर रावण के रूप में यह मेरे जीवन का सबसे पवित्र दिन था।

मेरे सैनिकों ने युद्ध के मैदान में मेरे प्रवेश के लिए सारी तैयारी कर ली थी। मेरे साथ मेरे पुत्र अकम्पा और इंद्रजीत थे, और उनके साथ हजारों सैनिक भी थे। हम विशाल युद्ध के लिए विशाल मैदान में प्रवेश कर रहे थे। मेरी निगाहें प्रभु को खोज रही थीं। मैं रावण होने के कारण श्री राम के सामने सिर नहीं झुका सकता। फिर भी, मेरे हृदय में प्रभु के प्रति मेरा प्रणाम था, जो युद्ध के मैदान में दूसरी ओर विराजमान थे।

मेरे सामने सुग्रीव, हनुमान, नीला और लक्ष्मण की सेनाएँ थीं। राम से युद्ध करने से पहले मुझे उनसे लड़ना था। मैंने अपने भाई विभीषण को राम के ठीक बगल में खड़ा पाया। यह देखकर मेरा हृदय प्रसन्न हो उठा। मुझे खुशी हुई कि विभीषण और राम अच्छे मित्र बन गए। मुझे विश्वास था कि आगे चलकर विभीषण एक ऐसा आदर्श राज्य स्थापित करेंगे जहाँ समाज में सद्भाव और उच्च जीवन स्तर होगा।

मैंने अपने कुछ सैनिकों को वापस आकर किले और अशोक वनम की सुरक्षा मजबूत करने का आदेश दिया। यद्यपि मुझे युद्ध लड़ना था, फिर भी मुझे युद्ध में आवश्यक क्रोध उत्पन्न करना और उसे जागृत

करना कठिन लग रहा था। जब मैं दुविधा में था, तभी राम के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर उत्साही सुग्रीव ने मुझे जान से मारने के इरादे से मुझ पर हमला कर दिया। तभी! ब्रह्मांड ने मेरी मदद की और मुझे युद्ध शुरू करने का मौका दिया। शक्ति का प्रवाह महसूस करते हुए मैंने सुग्रीव को उठाया और बड़ी आसानी से दूर फेंक दिया। उसके उठने से पहले ही मैंने उस पर एक बाण चलाया जिससे वह बेहोश हो गया।

राम और लक्ष्मण तुरंत विभीषण के साथ आपस में बातचीत करने लगे। मैं हँस पड़ा। शायद वे रणनीति पर चर्चा कर रहे थे; या यह कि अगला हमला मुझ पर कौन करेगा। मुझे लगता है कि विभीषण साथ-साथ अकम्पा, इंद्रजीत और मेरी शक्तियों के बारे में बता रहे थे। मुझे उम्मीद थी कि उनमें से कोई एक मुझसे भिड़ेगा, लेकिन अचानक हनुमान मुझ पर झपटे। उनकी आँखें लाल थीं और वे मुझ पर दहाड़ते हुए बोले कि वे मुझे एक ही वार में मार डालेंगे। मैं लगभग हँस पड़ा। उन्हें और चिढ़ाने के लिए, मैं मुस्कुराया और उन्हें और उकसाते हुए कहा, "हाँ। हाँ। आपको मुझे ज़रूर मारना चाहिए। तभी आपके बंदर मशहूर होंगे। तभी आपकी प्रजाति यह दावा कर पाएगी कि आप रावण को छू पाए।" मेरे शब्द सटीक लगे। दहाड़ते हुए उन्होंने मेरी छाती पर सीधा मुक्का मारा। वह वाकई एक ज़ोरदार मुक्का था। मुझे आज भी याद है। फिर भी वह मुझे कमज़ोर करने के लिए काफ़ी नहीं था। मैंने हनुमान से तिरस्कार का भाव दिखाते हुए कहा, "वाह, क्या बढ़िया मुक्का था। हालाँकि आप मेरे शत्रु के दल से हैं, फिर भी आप प्रशंसा के पात्र हैं।" मेरी बातों ने आग में घी डाल दिया। गुस्से में हनुमान ने कहा, "मुझे खुशी है कि तुम्हें मुक्का अच्छा लगा। मुझे आश्चर्य है कि यह जानकर तुम्हें कितना अच्छा लगता होगा कि मेरे लंका के पिछले दौरे के दौरान इसी तरह के एक मुक्के से तुम्हारे पुत्र अक्षय की मृत्यु हो गई थी। और अब तुम्हारी बारी है।"

वे शब्द बहुत ही चुभने वाले थे और मुझे यह स्वीकार करना होगा कि उसकी नीचता पर मुझे बहुत गुस्सा आया। मेरी उंगलियाँ अनायास ही मुट्ठी में कस गईं और मैंने उसे एक जोरदार प्रहार किया। हनुमान मेरे सामने ढेर हो गया। मुझे लगता है कि कुछ पलों के लिए उसकी आँखों की रोशनी थम सी गई थी।

वह जल्दी ही संभल गया, और महान योद्धाओं का यही स्वभाव होता है। पहले वार हम अपने प्रतिद्वंदी का आकलन करने के लिए करते हैं। कुछ ही मिनटों में हम आमने-सामने की लड़ाई में उलझ गए; हमारे मुक्के और प्रहार काफी देर तक एक-दूसरे पर चलते रहे। मेरे मन में समय का भी हिसाब चल रहा था। आखिर मुझे आगे बढ़ना था। मैं हनुमान के साथ यहाँ ज्यादा देर तक नहीं रुकना चाहता था। मैंने जल्दी से हनुमान का आकलन किया और फिर उनके पेट पर एक जोरदार मुक्का मारा। इससे उनकी सांस फूल गई और वे ज़मीन से ऊपर उठ गए। थोड़ी दूर जाकर गिरे। उनके संभलने से पहले ही मैं आगे बढ़ा और नीला से भिड़ गया।

मुझे नीला से लड़ते देख, हनुमान ने युद्ध के नियमों का पालन करते हुए एक तरफ खड़े होकर उत्सुकता से मेरे नीला से युद्ध समाप्त होने की प्रतीक्षा की।

नीला के साथ मेरा युद्ध राम-रावण युद्ध की कठिनाई और विचित्रता का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। नीला ने न केवल मुझे बल्कि अपने ही सैनिकों को भी आश्चर्यचकित कर दिया। वानरों में बहुत कम

पाई जाने वाली उस अनोखी प्रतिभा से उसने अपना आकार इतना छोटा कर लिया कि वह मेरे रथ पर ही खड़ा हो गया। मुझे मारता, फिर रथ पर चढ़ जाता, फिर मारता, फिर रथ पर चढ़ जाता—वह यही बार-बार करता रहा। यह बेहद परेशान करने वाला था और आप कल्पना कर सकते हैं कि मुझे अपने ही रथ पर इतने छोटे प्राणी से लड़ने में कितनी निराशा हुई होगी। लड़ाई में काफी समय लगा और हर समय सिर्फ मैं ही उसके वार झेल रहा था। फिर मैंने आग्नेय अस्त्रम (अग्नि अस्त्र) का इस प्रकार प्रयोग किया कि वह उसके पास से गुजरा लेकिन मेरे रथ को नहीं छुआ। जिस प्रचंड गति और ताप से वह वायुमंडल में प्रवेश किया, उससे नीला अभेद्य हो गया और गिर पड़ा। सौभाग्यशाली योद्धा, वह कमजोर तो हुआ लेकिन मरा नहीं। शायद यह अग्नि (अग्नि देवता) के साथ नीला के संबंध के कारण हुआ।

लक्ष्मण आगे आए... यह एक ज़बरदस्त लड़ाई थी। मुझे बहुत मज़ा आया। उन्होंने मेरे सभी बाणों और तीरों का जवाब दिया। वे युद्ध में माहिर थे। हम लगभग सूर्यास्त तक लड़ते रहे। फिर मैंने अपने परदादा ब्रह्मा द्वारा दिए गए एक विशेष हथियार का इस्तेमाल करने का फैसला किया। जब वह हथियार लक्ष्मण को लगा, तो वे बेहोश होकर गिर पड़े। मैंने उन्हें अपने रथ पर उठाने की कोशिश की, लेकिन तभी हनुमान ने अपनी तीखी निगाहों से मेरी छाती पर ज़ोरदार प्रहार किया और लक्ष्मण को वापस पकड़ लिया। वह प्रहार इतना शक्तिशाली था कि अगर वह किसी चट्टान पर लगता, तो वह हज़ार टुकड़ों में बिखर जाती। मैं तो बस घुटनों के बल गिर पड़ा, खून की उल्टी की और धीरे-धीरे बेहोश हो गया।

सूर्य लगभग डूब चुका था, तभी मुझे और लक्ष्मण को होश आया। मैंने आँखें खोलीं और देखा कि हनुमान जी ने अपना शरीर विशाल कर लिया था और राम उनके कंधों पर बैठे थे। मैंने हनुमान जी पर प्रहार करना शुरू किया, लेकिन तभी राम ने मेरे रथ के पहियों, घोड़ों और ध्वज पर आक्रमण कर दिया। मैं ज़मीन पर गिर पड़ा, मेरे पास कुछ भी नहीं बचा था। राम ने एक और बाण उठाया और मैंने देखा कि वे उसे अपने धनुष पर चढ़ा रहे हैं। मैंने सोचा कि यही वह बाण है जो इस मिशन का अंत कर देगा। लेकिन मेरे माथे पर निशाना लगाने के बजाय, उन्होंने बाण से मेरा मुकुट गिरा दिया। मैं चौंककर उनकी ओर देखने लगा। उन्होंने कहा, “हे महान योद्धा राजा, आपने अच्छा युद्ध किया। अब आपके पास कुछ नहीं है, न रथ, न ध्वज, न मुकुट। अब आपको मारना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन यह मेरा तरीका नहीं है। इसके अलावा, आप अब थक चुके हैं। मैं आपको अभी नहीं मारूंगा। अब आप जाइए। आराम कीजिए और अपनी पूरी शक्ति और नए रथ के साथ वापस आइए। कल आप मेरी शक्ति देखेंगे।”

मैं प्रभावित हुआ। इस व्यक्ति को युद्धक्षेत्र के नैतिक नियमों की अच्छी समझ थी। इसे ही तो अच्छाई कहते हैं।

मेरी समीक्षा

मैं अपने महल में लौट आया। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। मैं अपने सिंहासन पर बैठा, आँखें बंद कीं और रावण के रूप में अपने सभी कर्मों का स्मरण किया। एक-एक करके मैंने सारी घटनाओं को अपने मन में दोहराया। इश्वकु वंश के राजा अनारान्य, वेदवती, पार्वती, नंदीश्वर, रंभा और पुंजिकस्तला की घटनाएँ भी मेरे मन में कौंध गईं। ये घटनाएँ राम और सीता के जन्म से पहले घटी थीं।

अद्भुत! श्री महा विष्णु अद्भुत हैं। अनारण्यु ने कहा था कि उनके वंश का कोई व्यक्ति मेरा अंत देखेगा और महा विष्णु ने उनके वंश इश्वकु में श्री राम अवतार लिया। वेदवती ने कहा था कि मैं उनके कारण हत्या करूँगा और उन्होंने स्वयं इस युग में सीता का रूप धारण किया। अंततः, मुझ पर लगे सभी श्राप साकार हो रहे थे। इसका अर्थ है कि मेरी जानकारी के बिना श्री हरि ने इस संसार को बुराई की शिक्षा देते हुए यह सब निर्देशित किया। वाह! मैं सर्वशक्तिमान की अद्भुत योजना के आगे नतमस्तक हूँ।

फिर अचानक, द्वारपालक (द्वार रक्षक) जया के रूप में मेरी भूमिका मेरे मन में कौंध गई। इससे मुझे अपनी चूक का एहसास हुआ। मैं अपने भाई विजय (कुंभकर्ण) को युद्ध में शामिल करना भूल गया था। शायद यही कारण है कि श्री राम ने मुझे आज वापस भेजा है। इसका अर्थ है कि हनुमान मुझसे खून-खराबे तक लड़ते रहे, मैं थक गया, और युद्ध सूर्यास्त तक चलता रहा। वास्तव में, सब कुछ उन्हीं की योजना थी। मैंने वही किया जो उन्होंने मुझसे करने को कहा। आखिरकार, श्री राम वैकुंठम में स्थित उस परम सत्ता के अवतार या प्रतिबिंब थे।

मुझे खुशी की लहर दौड़ गई। अब मुझे आराम करने की जरूरत नहीं थी। ज्ञान प्राप्ति से मैं पूरी तरह से तरोताजा हो गया। मुझे अपनी गलती को तुरंत सुधारना होगा और इस धरती पर रावण के रूप में अपना काम पूरा करना होगा। मैंने अपने आदमियों को बुलाया और उन्हें कुंभकर्ण को जगाने और उसे यह संदेश देने का निर्देश दिया कि मैं उससे मिलना चाहता हूँ।

मेरे सैनिकों ने बड़ी मुश्किल से कुंभकर्ण को जगाया। उन्हें भरपूर भोजन कराया गया। जब उनका पेट भर गया, तो युपाक्ष ने उन्हें युद्ध की स्थिति समझाई और महोदरा ने मेरा संदेश पहुंचाया। कुंभकर्ण मेरे पास आए। उन्हें देखते ही मैंने उन्हें कसकर गले लगा लिया, कुछ देर तक मैं कुछ बोल नहीं पाई। खुशी के आंसू मेरी आंखों से बहने लगे। विजया की तरह उन्होंने भी स्थिति को समझा, मेरी दोनों भुजाओं को अपने हाथों में लिया और अत्यंत गर्व और संतोष के साथ मेरी आंखों में देखा।

हम दोनों ने अपने-अपने साथियों से कुछ देर के लिए हमें अकेला छोड़ने को कहा। हम साथ बैठे और एक मिशन के पूरा होने से पहले ही अपने विचार आपस में साझा किए। फिर हमने सोचा कि अब बस अच्छाई से लड़ना बाकी है, और वह अच्छाई राम ही थे। हमने मिलकर अपनी-अपनी भूमिकाओं पर कायम रहने और राम से पूरी ताकत से लड़ने का फैसला किया। हमने यह भूलने का, या कम से कम भूलने की कोशिश करने का फैसला किया कि राम श्री हरि हैं, और उनके साथ वैसा ही व्यवहार करने का फैसला किया जैसा हम किसी सच्चे शत्रु के साथ करते। यह सोच हमें इस युद्ध को और भी कठिन बनाने में मदद करेगी। आखिर, जब तक पृथ्वी पर जीवन है, तब तक हमारी चर्चा होनी ही चाहिए।

हमने महोदरा को बुलाया और उन्हें युद्ध की अगली रणनीति बनाने का निर्देश दिया। महोदरा ने स्वयं, द्विजिह्वु, सम्ह्रदि, कुंभकर्ण और वितर्धना को मिलाकर एक दल का प्रस्ताव रखा, जो भोर होते ही हमारी ओर से युद्ध शुरू करेगा।

अंतिम युद्ध भाग 4

मैंने लगभग योजना को मंजूरी दे ही दी थी कि तभी महोदरा हकलाते और गुनगुनाते हुए बोली, "अगर... आआआ... उम्म...."

“क्या बात है!?” मैंने अधीरता से उससे पूछा। किसी योद्धा को इस तरह बेचैन देखना अच्छा नहीं लगता।

“बताओ। कुछ भी छिपाने की ज़रूरत नहीं है,” कुंभकर्ण ने कहा।

महोदरा ने गहरी सांस ली और कहा, “हे प्रभु, हमने अपने सभी महान योद्धाओं को एक के बाद एक मरते देखा है, इसलिए मैंने एक वैकल्पिक योजना भी सोची थी। योजना के अनुसार, यदि राम मर जाते हैं, तो यह अच्छा है। लेकिन यदि ऐसा नहीं होता है, तो वैकल्पिक रणनीति के रूप में हम यह कर सकते हैं और हमें यह करना चाहिए। योजना बी यह है कि यदि हम राम को समाप्त करने में सक्षम नहीं होते हैं, तो हम घायल, क्षत-विक्षत शवों के साथ लौटेंगे और राम की मृत्यु की घोषणा करेंगे। हम यह आपके सामने, हे महान राजा रावण, और अपनी स्त्रियों के सामने करेंगे। राम की मृत्यु का संदेश अशोक वन में सीता तक आग की तरह फैल जाएगा। इस बीच, हे महाराज, आप सीता के पास बहुत सारे आभूषणों और वस्त्रों से लैस और स्त्रियों को भेज सकते हैं, यह दिखावा करते हुए कि आप राम की मृत्यु का जश्न मना रहे हैं। इससे सीता को लगेगा कि राम सचमुच मर गए हैं। चूंकि कोई विकल्प नहीं बचेगा, इसलिए वह रावण के समक्ष आत्मसमर्पण कर देंगी। सीता के आत्मसमर्पण करने के बाद, हम यह सुनिश्चित करेंगे कि राम और उनकी सेना को इसकी सूचना मिल जाए। एक बार जब उन्हें सीता की आत्मसमर्पण की सूचना मिल जाएगी, तो राम के लिए कोई मायने नहीं रखेगा। लंका में एक मिनट भी मत ठहरना।” इससे पहले कि वह आगे कुछ कह पाता, कुंभकर्ण (विजय) क्रोधित हो उठा और चिल्लाया, “मेरे भाई रावण के आसपास तुम्हारे जैसे लोगों का होना ही उसकी इस तरह बदनामी का पहला और एकमात्र कारण है। सीता के बारे में एक और शब्द बोला तो मैं तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। मेरी नजरों से दूर हो जाओ!”

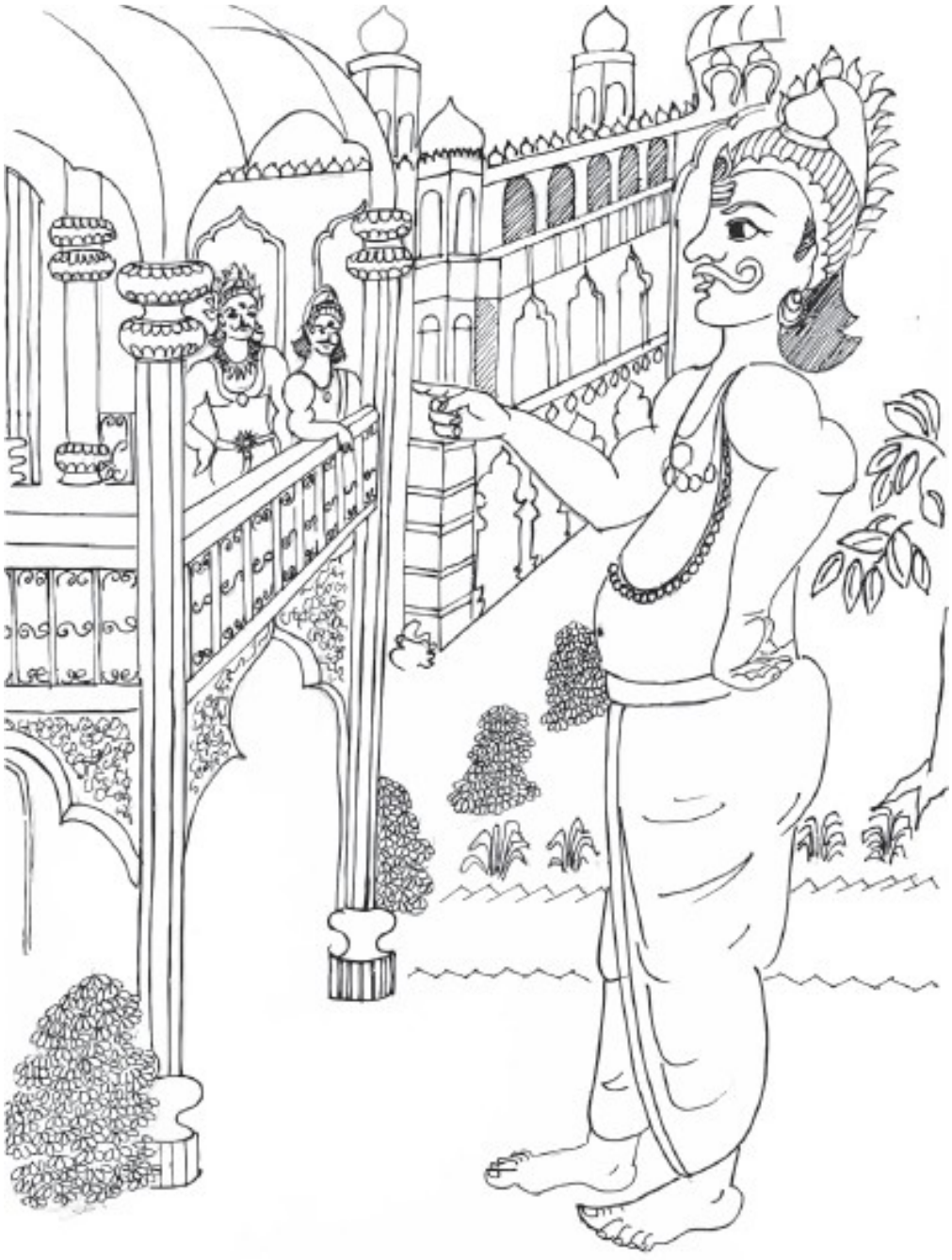

महोदरा तेजी से भाग गया।

मैंने कुंभकर्ण को शांत किया और उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा, “सिर्फ महोदरा ही नहीं, इस युद्ध में हमारे किसी भी सैनिक को हम पर ज्यादा भरोसा नहीं है। मुझे ऐसे कई सुझाव मिले हैं। दरअसल, ऐसा ही एक विचार पहले भी आजमाया जा चुका था; वह असफल रहा। चिंता मत करो, मैंने यह सब अपने मिशन के हिस्से के रूप में किया था।”

हम दोनों ने कुछ देर सोचा और फिर इस बात पर सहमत हुए कि दिन की शुरुआत में कुंभकर्ण ही युद्ध का शुभारंभ करेगा। यह तय होने पर हम अलग हो गए।

सूर्योदय होते ही कुंबकर्ण ने रत्नजड़ित लोहे से बने अपने विशेष हथियार को उठाया और सुबह के सूरज की तरह लाल आँखों से युद्ध के मैदान की ओर चल पड़ा। मैंने भी अपनी कुछ सेना उसके साथ भेजी।

इस समय कुंभकर्ण के मन में केवल एक ही बात थी और वह यह कि वह श्री हरि से होने वाले युद्ध को भूल जाए। उसने अपने मन को इस प्रकार तैयार कर लिया कि वह यह मान ले कि राम केवल एक मनुष्य हैं और वह उस मनुष्य को मारकर उसकी सेना का सफाया कर देंगे।

शक्तिशाली कुंभकर्ण को युद्धक्षेत्र में आते देख वानर तितर-बितर होकर भाग गए। विभीषण ने अपनी अद्भुत सूझबूझ से एक चाल चली: उन्होंने नल, नीला, गवाक्ष, कुमुधा और अंगधा को बुलाया और उनसे यह अफवाह फैलाने को कहा कि कुंभकर्ण नाम का वह शक्तिशाली दिखने वाला व्यक्ति कोई जीवित प्राणी नहीं है, बल्कि शत्रु सेना द्वारा हम सबको डराने के लिए बनाई गई एक मशीन है। इस अफवाह पर विश्वास करके वानर बढ़े हुए साहस के साथ युद्धक्षेत्र में लौट आए। विभीषण ने वानरों की सेना में साहस भरने के लिए जो अद्भुत तरकीब अपनाई, उसे देखकर मुझे हंसी आ गई।

बेचारे वानर लौट आए और उस तथाकथित मशीन पर हमला करने लगे। वह 'मशीन' किसी असली मशीन की तरह जरा भी नहीं हिली। अधिकाधिक वानर कुंभकर्ण की ओर बढ़े और कुंभकर्ण ने उन्हें झट से कुचल दिया। आसपास की सारी भूमि मात्र मांस और रक्त से ढकी थी। वानरों की सुबह भयानक रही। अपने सामने की शक्ति से भयभीत होकर वानर भागने लगे। कुछ समुद्र में कूद गए, जबकि कई पेड़ों में छिप गए और कुछ किष्किंधा वापस जाने के इरादे से पुल पर लौट आए।

अंगद ने उन सभी को वापस बुलाया। उन्होंने और हनुमान ने पहले उन्हें शांत किया और फिर उनका हौसला बढ़ाया। उन्होंने वानरों को याद दिलाया कि एक योद्धा कैसा होना चाहिए; आखिरकार वे सभी योद्धा थे और एक योद्धा के लिए युद्ध के मैदान से पीछे हटना मृत्यु के समान है। भागने के बजाय, एक सच्चा योद्धा युद्ध के मैदान में मरने के लिए तत्पर रहता है क्योंकि युद्ध के दौरान हाथ में तलवार लिए मरना स्वर्ग का मार्ग है। वानरों ने उनकी बात सुनी।

Then strategy was altered. Hanuman with twelve warriors—Rushana, Sarabha, Maindha, Dhumra, Neela, Kumudha, Susena, Gavaksha, Rambhu, Thara, Dwividha and Panasa—targeted Kumbakarna’s army rather than Kumbakarna, bringing down his men, chariots, elephants and horses.

हनुमान वायु में उड़ते हुए कई पत्थर फेंक रहे थे, पेड़ उखाड़ रहे थे और उन्हें कुंभकर्ण पर फेंक रहे थे। लेकिन कुंभकर्ण इन सबसे नहीं डरा। वह वानरों का पीछा करने लगा ताकि उन्हें मार सके। हनुमान ने हस्तक्षेप करने का फैसला किया। वह सीधे मेरे भाई के पास गए और एक विशाल पत्थर से उसके गाल पर प्रहार किया। आह! कुंभ को बहुत दर्द हुआ। कुंभ क्रोध से दहाड़ा और अपने हथियार को जोर से

घुमाते हुए अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को कुचलते और मारते चले गए। अपने अंध दर्द में वानर और अपने ही सैनिक मारे गए। दर्द इतना असहनीय था कि उसने देखते ही देखते हजारों लोगों को मार डाला।

नीला ने वानरों के भीतर बढ़ते भय को देखकर कुंभ पर एक विशाल चट्टान फेंकी। मेरे भाई ने उसे चूर-चूर कर दिया। पाँच वानर एक साथ कुंभ पर टूट पड़े, लेकिन उसने अपनी शक्ति का इस्तेमाल करके उन्हें आसानी से चकनाचूर कर दिया। हजारों वानर उस पर टूट पड़े; लेकिन फिर भी कोई फायदा नहीं हुआ। यही है कुंभकर्ण, मेरे प्यारे भाई विजय।

राम की सेना जिस युद्ध को आसानी से जीत रही थी, अचानक उसमें एक नया मोड़ आ गया। खेल पलट गया। मुकाबला विपरीत दिशा में चला गया। कुंभकर्ण के आने से हमारी सेना में जबरदस्त उत्साह फैल गया। सभी को लगा कि जीत हमारी ही होगी। महल में हमारे सैनिक खुशी से झूम उठे। वानरों को समझ नहीं आ रहा था कि कुंभकर्ण से कैसे निपटें। वे राम के पास दौड़े और उन्हें स्थिति समझाई। अंगध ने कुंभकर्ण पर एक और शक्तिशाली पत्थर फेंका। क्रोधित होकर कुंभकर्ण ने अपना शस्त्र अंगध पर फेंक दिया। अंगध ने फुर्ती से शस्त्र को चकमा दिया और बाल-बाल बच गए। फिर वे कुंभकर्ण के करीब कूदे और पूरी ताकत से उनकी छाती पर प्रहार किया। यह इतना जोरदार प्रहार था कि कुंभकर्ण लगभग बेहोश हो गए। जल्दी संभलकर उन्होंने अंगध पर पलटवार किया, उन्हें भी मारा और सुग्रीव की ओर बढ़े। यदि वानरों के राजा सुग्रीव मारे जाते, तो वानरों का मनोबल गिर जाता और वे तुरंत कमजोर पड़ जाते।

कुंभकर्ण ने अपना शस्त्र उठाया और सुग्रीव पर फेंका, लेकिन हनुमान ने हस्तक्षेप किया; उन्होंने शस्त्र को पकड़ लिया और उसे दो टुकड़ों में तोड़ दिया। कुंभकर्ण ने तुरंत एक पत्थर उठाया और उसे वानर राजा पर फेंक दिया। शस्त्र निशाने पर लगा और सुग्रीव बेहोश हो गए। कुंभकर्ण ने वानर राजा को उठाया और अपने सैनिकों के साथ रावण के किले में वापस भेज दिया। सुग्रीव की अनुपस्थिति में, हमें उम्मीद थी कि वानरों का युद्ध में विश्वास पूरी तरह से खत्म हो जाएगा।

सुग्रीव के चले जाने पर हनुमान की सहज प्रवृत्ति मेरे किले पर हमला करके उन्हें वापस लाने की थी। फिर वे शांत हुए। उनके राजा सुग्रीव के पास अपनी शक्तियाँ थीं। अपने वानरों की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, “मुझे अपने राजा पर विश्वास है। मैं उन्हें बचाने नहीं जाऊँगा। मुझे आवश्यकता नहीं है। जैसे ही उन्हें होश आएगा, वे वापस आ जाएँगे। मुझे उनकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। मेरी आवश्यकता उनसे नहीं, बल्कि आप भाइयों से है।” जब वे वानरों को प्रेरित कर रहे थे, सुग्रीव को होश आया, उन्होंने अपने पंजों से कुंभकर्ण की खाल फाड़ दी, जिससे वह बुरी तरह घायल हो गए और वानर सेना में लौट आए। हनुमान के प्रेरणादायक भाषण और सुग्रीव की वापसी ने राम की सेना का मनोबल बहुत बढ़ा दिया। वे अत्यंत ऊर्जा और आत्मविश्वास के साथ युद्ध के मैदान में उतर गए।

कुंभकर्ण कुछ देर चुप रहे और फिर युद्धक्षेत्र की ओर मुड़ गए। लक्ष्मण ने कुंभकर्ण पर बाण बरसाना शुरू किया, लेकिन कुंभकर्ण ने लक्ष्मण के बाण की ओर ध्यान ही नहीं दिया। वे तेजी से राम की ओर बढ़ने लगे। राम ने कुंभकर्ण पर एक घातक बाण दागा, जिससे वे गिर पड़े। लक्ष्मण ने वानरों को कुंभकर्ण पर खड़े होकर उन्हें स्थिर करने का आदेश दिया। लेकिन कुंभकर्ण ने जोरदार प्रहार किया और सीधे खड़े होकर वानरों को दूर फेंक दिया।

अपने धनुष की डोरी से चेतावनी भरी ध्वनि करते हुए राम चिल्लाए, "आओ कुंभकर्ण, तुमने भले ही इंद्र से युद्ध किया हो और उसे हराया हो! लेकिन तुम्हें यह समझना होगा कि यह इंद्र नहीं हैं। तुम राम से लड़ रहे हो!" क्रोध का नाटक करते हुए कुंभकर्ण राम के करीब आया और बोला, "राम, यह कारा नहीं है। यह वाली नहीं है। यह मारीच नहीं है। मैं कुंभकर्ण हूँ।"

और इसी के साथ राम और कुंभकर्ण के बीच महान युद्ध का आरंभ हुआ। इस युद्ध को देखने के लिए दोनों पक्षों के लोग रुक गए। बाण और मिसाइलें बरसाई गईं, जिनसे वाली, कारा और दूषण जैसे कई योद्धा मारे गए। राम पराक्रमी थे, लेकिन कुंभकर्ण भी उतने ही शक्तिशाली थे। युद्ध चलता ही रहा, चलता ही रहा। युद्ध देखने वाले थक गए, फिर भी राम और कुंभकर्ण बिना रुके लड़ते रहे; वे अजेय प्रतीत हो रहे थे।

अंत में, राम ने वायु अस्त्रम (भयंकर तूफान और बवंडर का अस्त्र) निकाला और छोड़ा। यह अस्त्र इतना शक्तिशाली था कि इसने कुंभकर्ण का हाथ उसके शरीर से खींच लिया। कुंभकर्ण जोर से चिल्लाया। फिर भी, हाथ खींचे जाने के बावजूद उसने एक पेड़ उखाड़कर राम पर फेंका। राम ने तुरंत उसे चकमा दिया और भाग निकले, फिर उन्होंने इंद्रास्त्रम (एक और शक्तिशाली अस्त्र) छोड़ा और कुंभकर्ण की दूसरी भुजा काट दी। जब तक कुंभकर्ण को इसका एहसास हुआ, राम ने तुरंत दो अर्धचंद्राकार बाण छोड़े और उसके दोनों पैर काट दिए।

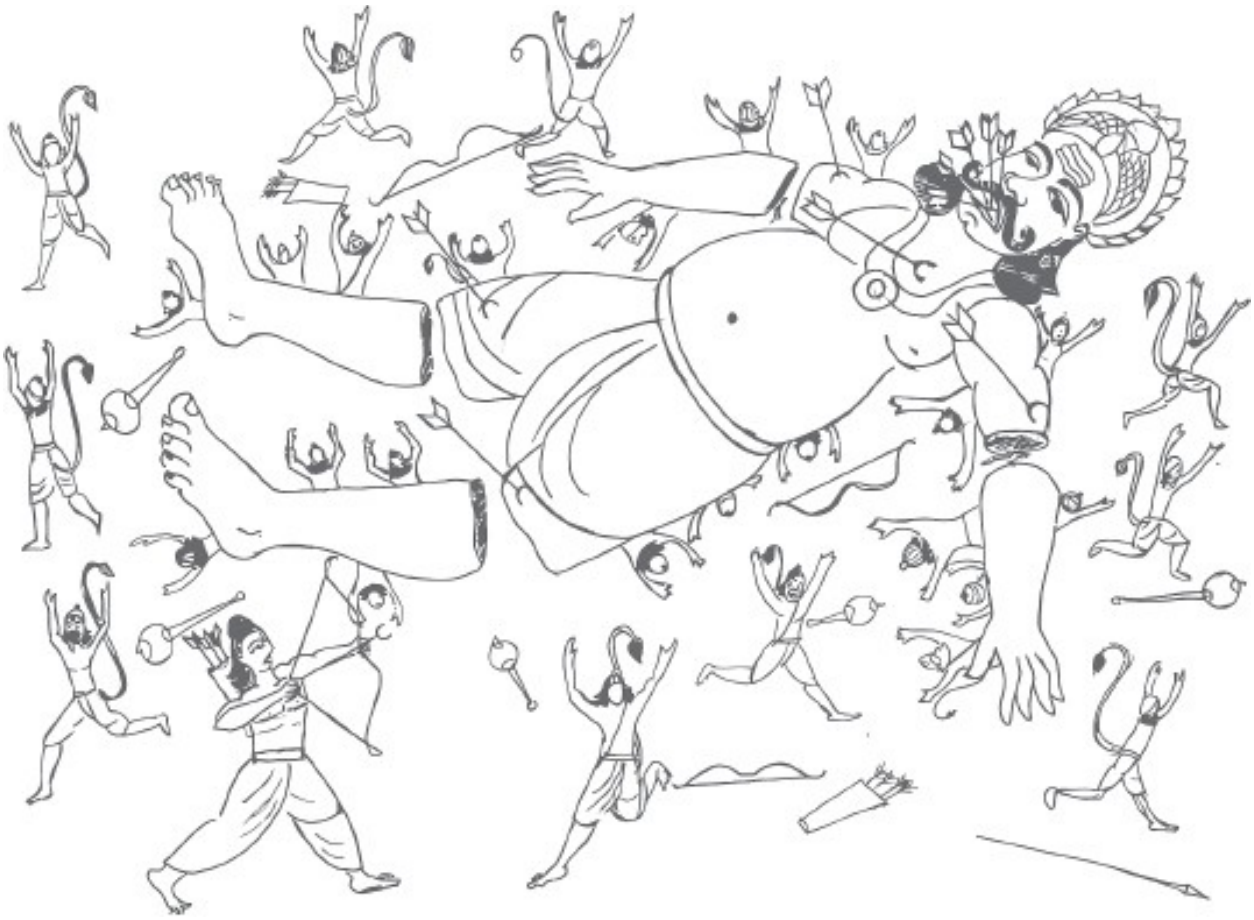

कुंभकर्ण पीड़ा से चीख उठा। राम ने कुंभकर्ण के खुले और चीखते हुए मुंह सहित पूरे शरीर पर बाण बरसाए और अंत में कुंभकर्ण का सिर धड़ से अलग कर दिया।

मेरे भाई। कई जन्मों में मेरे प्रिय साथी, अब नहीं रहे। लेकिन क्या मैंने शोक मनाया?

पाठक के रूप में आपको कुंभकर्ण की कहानी से यह समझना चाहिए कि यद्यपि कुंभकर्ण जीवन भर अच्छा रहा, फिर भी अंत में उसने बुराई का साथ दिया। बुराई का साथ देने वाला अच्छा व्यक्ति अच्छा नहीं रह जाता। उसे वही बुरा फल मिलना चाहिए जो उसे दिया गया।

अंतिम युद्ध भाग 5

तो नहीं। मैंने कुम्बा के लिए शोक नहीं किया। मैं उसके लिए खुश हूँ। उसने त्रेता युग के लिए सौंपा गया अपना कार्य पूरा कर लिया। मुझे भी अपना कार्य पूरा करना था।

अगले कुछ दिनों के लिए मुझे क्या और कैसे करना है, यह स्पष्ट था। इस युद्ध में मेरी मृत्यु अंतिम मृत्यु होनी चाहिए। मेरी मृत्यु से संसार को प्रकाश मिलना चाहिए और वह प्रकाश राम के माध्यम से आना चाहिए। मेरी मृत्यु से राम एक साधारण मनुष्य से भगवान बन जाएं। राम पृथ्वी पर श्री महा विष्णु का प्रतिबिंब हैं और राम-रावण युद्ध के बाद मनुष्य को ईश्वरत्व के गुणों को पहचानना चाहिए; अर्थात् राम के माध्यम से श्री महा विष्णु को। मेरा दिव्य कार्य तभी पूर्ण होगा जब यह सिद्ध हो जाएगा।

यह सब तभी संभव हुआ जब राम-रावण युद्ध इतना भयंकर और इतना यादगार रहा हो, न केवल मानव जाति के लिए बल्कि प्रकृति और अन्य दिव्य शक्तियों सहित अस्तित्व में मौजूद हर चीज के लिए भी।

इस शरीर को छोड़ने से पहले, मैं आशा करता हूँ कि इस युद्ध में मैं अपने तपस्या के माध्यम से इस जीवन में अर्जित सभी शक्तियों, सामर्थ्य, सेना, शस्त्रों और विज्ञान का उपयोग कर सकूँ। राम को जीतना ही होगा—और वह जीतेंगे—चाहे मैं अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करूँ। केवल इसी तरह से मानवजाति को यह उदाहरण दिया जा सकता है कि आप कितने शक्तिशाली हैं और चाहे आपके पास कितनी भी तकनीक और शस्त्र हों, आप या वास्तव में ब्रह्मांड में कोई भी अच्छाई को पराजित नहीं कर सकता।

मैंने एक के बाद एक निर्देश देना शुरू किया और राम और उनकी सेना से लड़ने के लिए एक-एक करके टुकड़ियाँ भेजीं। त्रिशीरा, अधिकाय, देवंतक, नरंतक, महोदरा और महापार्सु युद्ध में गए। यह ऐसा युद्ध था जो इस पृथ्वी ने पहले कभी नहीं देखा था। नरंतक ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कई वानरों को मार डाला। अंगद ने नरंतक से युद्ध किया और अंत में उन्हें पराजित कर दिया।

नरंतक की हत्या देखकर महोदरा, देवंतक और त्रिसीरा ने मिलकर अंगद पर आक्रमण करने का प्रयास किया। यह देखकर हनुमान और नीला उनकी सहायता के लिए दौड़े। एक भयंकर युद्ध छिड़ा और भीषण संघर्ष के बाद हनुमान ने देवंतक और त्रिसीरा दोनों को मार डाला, जबकि नीला ने महोदरा का वध कर दिया। इसी दौरान दूसरी ओर ऋषभ ने महापार्शी को मार गिराया। एक के बाद एक नेता गिरते ही, उनकी सेनाएं अपनी-अपनी जान बचाने के लिए तितर-बितर हो गईं।

Then entered Athikaya. Athikaya is built like mini Kumbhakarna. Rama enquired and Vibhishana said, “Athikaya’s identity is my son with Dhanyamalini.” He also disclosed his strength in archery. Rama sent Lakshmana to face Athikaya. Before even Lakshmana aimed his first arrow at Athikaya, he took Kumudha, Dvividha, Maindha, Neela and Saraba into his custody.

लक्ष्मण को देखकर अधिकाय हँस पड़ा और बोला, “तुम मेरी पहुँच से बाहर हो, मुझसे ज़्यादा देर तक लड़ नहीं सकते। अपना सामान समेटो और चले जाओ।” फिर राम की ओर तिरस्कारपूर्वक मुड़कर बोला, “तुम आओ और अपनी किस्मत आजमाओ।” लक्ष्मण के इस ताने के जवाब में, लक्ष्मण ने एक बाण धनुष पर चढ़ाया और चेतावनी के संकेत के रूप में धनुष की डोरी बजाई और चिल्लाकर कहा, “बकवास बंद करो। चलो, कुछ करते हैं!”

फिर दोनों ने एक-दूसरे पर बाणों की बौछार कर दी, दोनों ने अपनी पूरी ताकत से वार किए। अधिकय का एक भी बाण या मिसाइल लक्ष्मण तक नहीं पहुँच पाई और लक्ष्मण का भी एक बाण अधिकय तक लंबे समय तक नहीं पहुँच पाया। वे एक-दूसरे के बाणों को इतनी तेज़ी से रोक रहे थे और लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही उन्हें नष्ट कर रहे थे कि सभी दंग रह गए। यह सिलसिला चलता रहा, चलता ही रहा। अंत में, लक्ष्मण ने ब्रह्म अस्त्रम (एक शक्तिशाली मिसाइल) से अधिकय को पराजित कर दिया।

अधिकाय के पतन के साथ ही लगभग सभी शक्तिशाली योद्धाओं का सफाया हो गया था। बचे हुए नेता केवल मैं, मेरा पुत्र इंद्रजीत, निकुम्बा, कुम्बा, कारा का पुत्र मकराक्ष और कुछ अन्य थे। यद्यपि दूसरी ओर अच्छाई थी, लेकिन इस बुराई का सामना करना इतना आसान नहीं था। हालांकि, अच्छाई अभी भी इंद्रजीत और रावण की शक्ति से अनजान थी। अच्छाई को निश्चित रूप से कुछ बहुत बुरे समय का सामना करना था। इंद्रजीत राम की सेना को अप्रत्याशित परिणाम दिखाने वाला था।

अंतिम युद्ध भाग 6

मैंने इंद्रजीत को अपने कमरे में बुलाया, उसे पूरी तरह से प्रेरित किया और उसे विदा किया। युद्धक्षेत्र में अपनी पारी शुरू करने से पहले, इंद्रजीत ने अग्नि होमम किया और विजय की कामना करते हुए एक काले बकरे की बलि दी। होमम की अग्नि बिना धुएँ के जली और उसने लकड़ी और तेल को पूरी तरह से भस्म कर दिया। इंद्रजीत ने इसे विजय का संकेत माना। उसने अपने सभी शस्त्रों, जिनमें ब्रह्म अस्त्रम भी शामिल था, की जाँच की, अपने जादुई अदृश्य रथ पर सवार हुआ और बड़े सहजता और आत्मविश्वास के साथ युद्धक्षेत्र में चला गया।

उन्होंने अदृश्य रूप में युद्ध के आकाश में प्रवेश किया और वानरों पर तीखे बाणों की वर्षा की। हजारों वानर मारे गए और हजारों बुरी तरह घायल हो गए, जिनमें राम की सेना के गंधमाधन, नल, मैंध, गज, जाम्बवंत, सुग्रीव, रुषबा, अंगध और द्विविधा जैसे शक्तिशाली योद्धा शामिल थे।

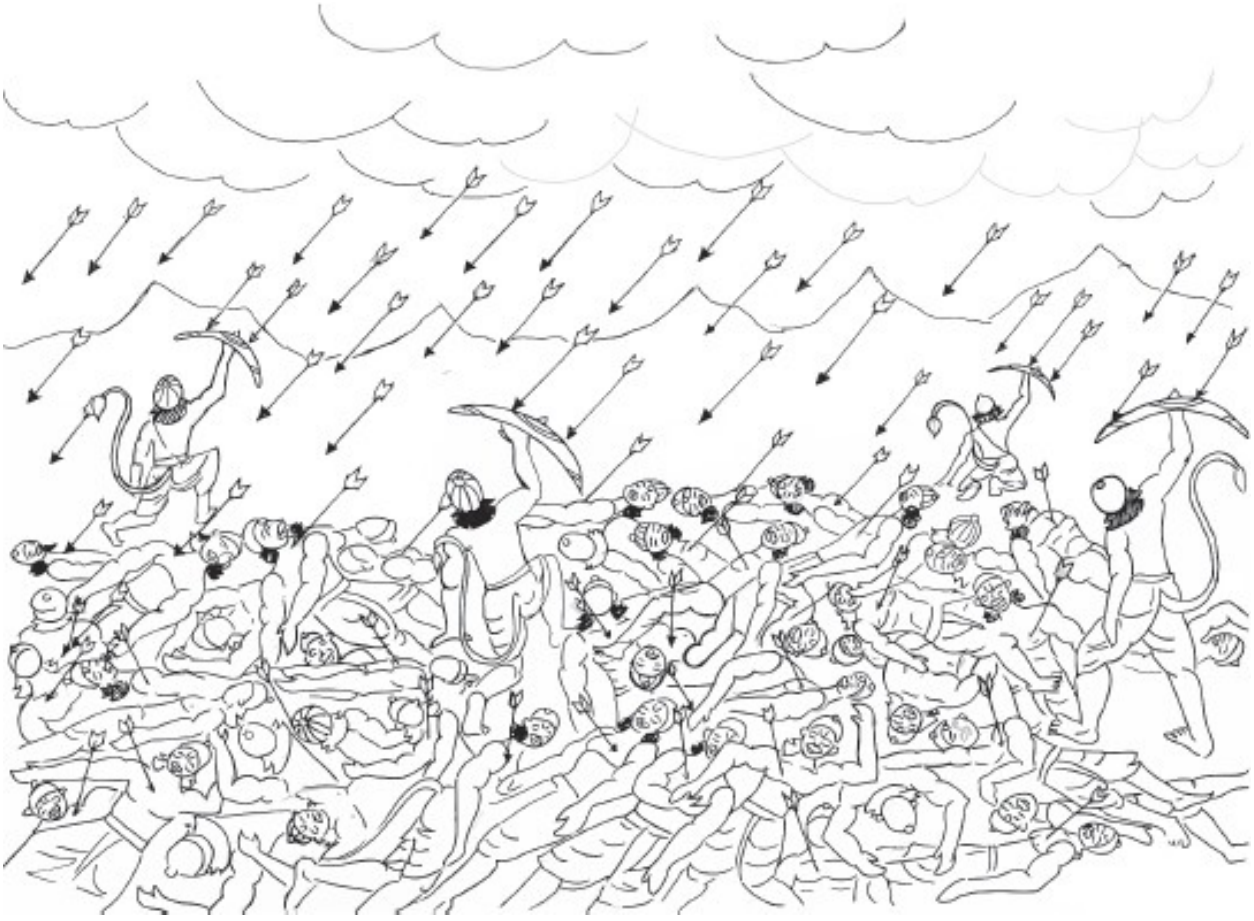

बाण से राम और लक्ष्मण दोनों घायल हो गए। राम ने लक्ष्मण को पुकारा और कहा, “लक्ष्मण, इंद्रजीत अब अदृश्य है और अपनी पूरी शक्ति में है। इस अदृश्य इंद्रजीत से लड़ना अभी रणनीति की गलती

होगी। हमारे अधिकांश सैनिक बुरी तरह घायल हैं और मर रहे हैं। हमें पहले शत्रु को शांत करने का उपाय सोचना होगा। एक अच्छा योद्धा न केवल शत्रु से लड़ता है बल्कि अपने सैनिकों की रक्षा भी करता है। हमें अपने सैनिकों की रक्षा करनी है; और इसके लिए हमें किसी तरह इस अदृश्य इंद्रजीत को शांत करने या उसका ध्यान भटकाने का उपाय सोचना होगा। जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो। इंद्रजीत तुम्हें और मुझे चाहता था, इन वानरों को नहीं, इसलिए हम दोनों मरने का नाटक करें, ताकि इंद्रजीत प्रसन्न होकर लौट जाए और हमें कुछ समय मिल जाए।"

उनके बीच हुए समझौते के अनुसार राम और लक्ष्मण नीचे गिर पड़े। यह चाल कारगर साबित हुई और इंद्रजीत अपने महल की ओर लौट गया।

पूरा युद्धक्षेत्र वानरों, भालुओं और राम का साथ देने वाले अन्य जानवरों के शवों से भरा पड़ा था। ज़मीन दिखना मुश्किल था। रात हो चुकी थी और विभीषण और हनुमान लालटेन लेकर शवों के बीच से गुज़रते हुए घायल और जीवित लोगों को गंभीर रूप से घायल और मृत लोगों से अलग कर रहे थे। ज़रा सोचिए, इंद्रजीत ने पाँच घंटों में ज़मीन पर पड़े शवों की संख्या देखकर कितना विनाश किया होगा? कोशिश कीजिए। अनुमान लगाइए। लगभग 670 करोड़ लोग मारे गए थे। दूसरे शब्दों में, यह आज के श्रीलंका की पूरी आबादी से बत्तीस गुना ज़्यादा होगा। इंद्रजीत का युद्ध इतना भयंकर था कि राम और लक्ष्मण को बचाव के लिए यह रणनीति अपनानी पड़ी।

शवों की सहायता और जाँच करते हुए विभीषण और हनुमान लगातार पुकार रहे थे, "क्या कोई जीवित है? क्या कोई है?" अक्सर उनकी पुकार का जवाब सन्नाटे या कराहने की आवाज़ से मिलता था। कुछ देर खोजबीन के बाद विभीषण को बूढ़े जाम्बवंथ, भालुओं के राजा, जीवित और होश में मिले। विभीषण ने चिंता से पूछा, "क्या आप ठीक हैं?" जाम्बवंथ ने बहुत कमजोर स्वर में उत्तर दिया, "मैं ठीक हूँ। बाकी किसी बात की चिंता मत करो। देखो कि हनुमान सुरक्षित हैं या नहीं।" विभीषण आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने पूछा, "आप विशेष रूप से हनुमान के बारे में क्यों पूछ रहे हैं? आपने राम और लक्ष्मण के बारे में तो पूछा ही नहीं।" इस पर जाम्बवंथ ने उत्तर दिया, "यदि हनुमान जीवित हैं और राम और लक्ष्मण सहित सभी मर चुके हैं, तो भी ठीक है। हनुमान अकेले ही असंभव को संभव कर सकते हैं और उन्हें जीवनदान दे सकते हैं।" विभीषण चौंक गए। जाम्बवंथ ने आगे कहा, "यदि सभी जीवित हैं और हनुमान मर चुके हैं, तब भी इस युद्ध को जीतना कठिन होगा।"

जब जाम्बवंत हनुमान के बारे में यह कह रहे थे, तभी हनुमान स्वयं आए, घुटने टेककर बैठ गए, अत्यंत आदरपूर्वक हाथ जोड़कर जाम्बवंत से पूछा, "कृपया मुझे मार्गदर्शन दें कि अब मुझे क्या करना चाहिए।" इस पर जाम्बवंथ ने कहा, "मेरे पुत्र, तुम महान शक्ति और सामर्थ्य के साथ पैदा हुए हो। यदि तुम समुद्र के ऊपर से न बहते और सीता को न पहचानते, तो आज अच्छाई के लिए यह संघर्ष संभव ही न होता। अब तुम्हें एक महान कार्य करना है, ध्यान से सुनो। आशा है तुम्हें याद होगा, कुछ दिन पहले जब राम और लक्ष्मण नाग अस्त्रम से घायल हुए थे, तब सुसेना ने हिमालय के औषधि पर्वत पर विशाल्यकरणी, मृत

संजीवनी, सवर्ण करणी और संधान करणी को औषधीय पौधों के रूप में बताया था। क्या तुम्हें याद है, सुसेना के सुझाव को लागू करने से पहले हम सभी ने गरुड़ को राम और लक्ष्मण की सहायता करते देखा था? अब हमें अपने सैनिकों के लिए इसे लागू करना होगा और यही एकमात्र आशा है। मैं तुम्हें औषधि पर्वत तक पहुँचने का मार्ग बताता हूँ। तुम अपनी महान शक्ति से जाओ और जल्दी से उन जड़ी-बूटियों और पौधों को यहाँ ले आओ। याद रखो, हृदय धड़कना बंद होने के बाद भी हर जीवित प्राणी को उचित उपचार से पुनर्जीवित किया जा सकता है। हालाँकि, ऐसे उपचारों के लिए समय बहुत सीमित है, इसलिए तुम्हें बहुत जल्दी और तेजी से काम करना होगा। उत्तर दिशा में उड़ान भरो। यहां से हिमालय के बर्फ से ढके पहाड़ों तक पहुंचने तक, उन पर्वत श्रृंखलाओं पर उड़ते रहें जब तक कि आप दो विशाल पर्वतों तक न पहुंच जाएं। ये पर्वत ऋषभ और कैलाश पर्वत हैं। आपको इन दोनों के बीच के रास्ते से होकर सर्व औषधि पर्वत तक पहुंचना होगा। आप इस पर्वत को आसानी से पहचान सकते हैं क्योंकि इस पर मौजूद कुछ जीवनदायी जड़ी-बूटियों के कारण यह रात में चमकता रहता है।

जाम्बवंता के निर्देश सुनकर हनुमान ने एक पल भी बर्बाद नहीं किया। वे तुरंत उड़ान भरने लगे; उनकी उड़ान आधुनिक सुपरसोनिक जेट विमानों की गति से कहीं अधिक तेज़ थी। हनुमान पहुँच तो गए, लेकिन घनी वनस्पतियों और जड़ी-बूटियों को देखकर वे असमंजस में पड़ गए। क्या उनके पास जीवनदायी

जड़ी-बूटियाँ चुनने और वापस लौटने का समय था? क्या होगा अगर वे गलत हों? क्या वे सही जड़ी-बूटियों की खोज में वापस लौटने का जोखिम उठा सकते थे? पल भर में हनुमान ने वही किया जो उन्हें उस परिस्थिति में सबसे बुद्धिमानी भरा लगा। उन्होंने अपने पूरे पर्वत को जड़ से उखाड़ दिया और उसे हथेली पर उठाकर लंका वापस चले गए और त्रिकुटा पर्वत पर उतरे। उस औषधीय पर्वत की हल्की सी हवा से ही कई वानरों को स्वास्थ्य लाभ हुआ। राम और लक्ष्मण भी तरोताज़ा दिखे, उनके सभी घाव भर गए थे। गंभीर रूप से घायल लोगों का सेना की विशेषज्ञता से उपचार किया गया। जब सभी ठीक हो गए, तो हनुमान पर्वत को वापस हिमालय ले गए और उसे उसकी मूल स्थिति में स्थापित करके सूर्योदय से पहले लौट आए।

यह किसी चमत्कार से कम नहीं था। राम सेना (राम की सेना) फिर से अपने पैरों पर खड़ी हो गई, जीवन से ओतप्रोत और उतनी ही बलवान हो गई जितनी वे लंका पहुंचने पर पुल पार करते समय थीं। वानरों ने खुशी से जयजयकार किया। हनुमान जी ने भी अपने इस चमत्कार को देखकर हर्षोल्लास किया। ये आवाजें सुनकर मेरे सैनिक भय से चिल्ला उठे।

अंतिम युद्ध भाग 7

सुग्रीव अपने चुने हुए सैनिकों के साथ लंका नगर में प्रवेश कर गए और सभी हाथियों, घोड़ों और अन्य युद्ध पशुओं को मुक्त कर दिया, साथ ही सभी रथों को नष्ट कर दिया। राम सेना और रावण सेना दोनों ने फिर से युद्ध शुरू कर दिया। राम ने एक बार फिर युद्ध का बिगुल बजाया; सुग्रीव ने अपने कुछ वानरों को रावण के महल पर हमला करने और तुरंत युद्ध शुरू करने का आदेश दिया। वानरों में जोश चरम पर था। मैंने निकुमा और कुंभ को तुरंत भेजा, लेकिन वे वानरों की विजय की भूख के आगे टिक नहीं सके। सुग्रीव ने कुंभ को और हनुमान ने निकुमा को मार गिराया। फिर मैंने मकरक्ष को बुलवाया, जो सीधे राम और लक्ष्मण के पास गया और चिल्लाकर कहा कि वह अपने पिता कारा की हत्या का बदला राम से लेगा। राम ने उससे कहा, "बातें मत करो, करके दिखाओ!" फिर उन्होंने आग्नेय अस्त्रम से मकरक्ष का वध कर दिया।

मैंने इंद्रजीत को फिर भेजा। वह होमम की रस्में दोहराते हुए और एक काले बकरे को मारकर युद्ध में फिर से चला गया। इंद्रजीत अदृश्य हो गया, लेकिन उसने किसी पर भी हमला करने के बजाय केवल राम और लक्ष्मण को निशाना बनाया, जिससे भाइयों के लिए अदृश्य से लड़ना मुश्किल हो गया। लक्ष्मण का धैर्य टूट गया और उन्होंने क्रोध में चिल्लाकर कहा कि वे ब्रह्म अस्त्र का प्रयोग करेंगे। राम ने तुरंत लक्ष्मण को रोका और कहा, “लक्ष्मण, अभी केवल इंद्रजीत ही लड़ रहा है; कोई और सैनिक नहीं लड़ रहा है। यदि तुम इंद्रजीत के साथ ब्रह्म अस्त्र का प्रयोग करोगे, तो जो हमारे साथ नहीं लड़ रहे थे, वे भी मारे जाएँगे। हमारी शिक्षा का पहला नियम याद रखो: हथियारों का प्रयोग रक्षा के लिए, मुकाबला करने के लिए या हमारे साथ लड़ने वाले को मारने के लिए किया जाना चाहिए, न कि उन पर जो नहीं लड़ रहे थे। ब्रह्म अस्त्र का प्रयोग करने का विचार अभी छोड़ दो। तुम इसका प्रयोग उचित समय पर कर सकते हो।”

इसी बीच, इंद्रजीत एक घिनौनी योजना बना रहा था। उसने सीता का इस्तेमाल राम और उनकी सेना को धोखा देने के लिए करने का निश्चय किया। उसने सीता का एक मायाजाल बनाया और उसे अपने रथ में रख दिया। फिर वह रथ पर सवार होकर युद्ध के मैदान में वानरों के ठीक सामने पहुँच गया। इंद्रजीत को देखते ही वानरों ने रथ को घेर लिया। हनुमान ने उसे असली सीता समझकर इंद्रजीत को एक योद्धा की तरह लड़ने के लिए कहा और बताया कि सीता को चोट पहुँचाना अनैतिक है। हनुमान के चिल्लाते ही, इंद्रजीत ने सीता के बाल पकड़कर उसे नीचे गिरा दिया और उसका सिर काट डाला।

सीता को मृत देखकर हनुमान स्तब्ध रह गए और कुछ पल के लिए सुन्न पड़ गए। इंद्रजीत तुरंत गायब हो गया। हनुमान दौड़कर राम के पास गए और कहा कि इंद्रजीत ने सीता को उनकी आँखों के सामने मार डाला। राम बेहोश हो गए, लक्ष्मण रोने लगे और अपने भाई को गोद में उठा लिया। सुग्रीव, जाम्बवंत और बाकी सभी निराश होकर खड़े रह गए और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करें।

राम के चारों ओर भीड़ देखकर विभीषण आए और बोले, “तुम सब इतने उदास और निराश क्यों हो? राम को क्या हुआ? ये सब क्या है?” लक्ष्मण ने स्थिति समझाई। विभीषण चिल्लाए, “लक्ष्मण की बात सुनो! ऐसा हो ही नहीं सकता! इंद्रजीत सीता को छू भी नहीं सकता। मैं अपने भाई रावण को सबसे ज्यादा जानता हूँ। अपहरण के समय को छोड़कर, रावण ने सीता को कभी नहीं छुआ। उसने अपनी अनुपस्थिति में किसी भी पुरुष को अशोक वन में प्रवेश नहीं करने दिया, जहाँ सीता को बंदी बनाया गया था। इंद्रजीत सीता को देख भी नहीं सकता। अगर उसने सीता को छुआ, तो राम, न तो तुम और न ही मैं, बल्कि रावण ही सबसे पहले इंद्रजीत को मारेगा। चिंता मत करो, यह सब इंद्रजीत की चाल थी। मैं उसे बचपन से जानता हूँ। हनुमान ने जो देखा उसे भूल जाओ। याद रखो, हमने भी मरने का भ्रम पैदा किया था, तो इंद्रजीत ऐसा भ्रम क्यों नहीं पैदा करेगा? याद रखो, यह लंका है जहाँ युद्ध की सबसे उन्नत तकनीकें हैं और जो कुछ तुम देखते हो वह सच नहीं हो सकता।”

विभीषण की बातें सुनकर राम ने उसे कसकर गले लगा लिया। उनके शोक के आंसू प्रेम और खुशी के आंसुओं में बदल गए।

विभीषण ने आगे कहा, “परन्तु अब हमें बहुत सावधान रहने की जरूरत है। इंद्रजीत ने आप सभी से कुछ समय लेने के लिए ऐसा किया होगा। ब्रह्मा ने उसे ऐसे कठिन युद्धों और परिस्थितियों से पार पाने का विशेष वरदान दिया था। किसी भी युद्ध से पहले निकुंबिला चैयम में किया जाने वाला विशेष और शुभ होमम उसे कठिन लगता था। इस होमम के सफलतापूर्वक संपन्न होने पर उसकी विजय निश्चित हो जाती है। हमें होमम को पूरा नहीं होने देना चाहिए। राम, आप विश्राम कीजिए और लक्ष्मण को मेरे साथ भेजिए। मुझे पूरा विश्वास है कि आपका भाई इंद्रजीत को संभाल लेगा, आप चिंता न करें।”

राम विभीषण की बातें सुनकर प्रसन्न हुए और उन्होंने लक्ष्मण और अपनी सेना को उनके साथ भेज दिया।

अंतिम युद्ध भाग 8

विभीषण, लक्ष्मण, सुग्रीव और हनुमान ने अपने सैनिकों के साथ मेरे पुत्र इंद्रजीत और उसकी सेना से युद्ध करने के लिए स्वयं को तैयार किया। राम के शिविर से निकलने से पहले विभीषण राम के पास गए और बोले, "राम, निश्चिंत रहिए, विजय निश्चित है। मैं आपको एक और रहस्य बताता हूँ: ब्रह्मा ने इंद्रजीत को वरदान देते हुए यह भी कहा था कि जो भी होमम पूरा करने में बाधा डालेगा, उसी के हाथों इंद्रजीत की मृत्यु होगी। अब आपका भाई ही होमम में बाधा डालने वाला है, दूसरे शब्दों में, लक्ष्मण जल्द ही इंद्रजीत को मार डालेंगे।" इतना कहकर वे सैनिकों के साथ इंद्रजीत से युद्ध करने के लिए चल पड़े।

इंद्रजीत ने होमम शुरू कर दिया था और हजारों सैनिक चारों ओर से उनकी सुरक्षा कर रहे थे। विभीषण ने सुझाव दिया कि लक्ष्मण वानर सेना को इंद्रजीत की सेना पर यथासंभव आक्रमण करने के लिए भेजें। जैसे ही इंद्रजीत की सुरक्षा कर रही सेना कमजोर पड़ जाएगी, इंद्रजीत के पास होमम के बीच में उठकर लक्ष्मण और उनकी सेना से लड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा।

लक्ष्मण ने विभीषण के निर्देश का पालन किया। इसके फलस्वरूप इंद्रजीत और लक्ष्मण की सेनाओं के बीच भीषण युद्ध छिड़ गया। देखते ही देखते इंद्रजीत के कई सैनिक मारे गए और इंद्रजीत घिर गया। कोई और विकल्प न देखकर इंद्रजीत ने होमम रोक दिया और अपने रथ पर सवार हो गया।

हनुमान ने अपना आकार बहुत बढ़ा लिया और इंद्रजीत के हजारों सैनिकों को मारना शुरू कर दिया। इंद्रजीत की स्थिति तेजी से बिगड़ती जा रही थी और उसके पास बहुत कम सैनिक बचे थे। इंद्रजीत ने अपना धनुष उठाया, बाण चढ़ाए और दूर से हनुमान पर निशाना साधा। उसका हमला भयंकर था और हनुमान के शरीर पर कई जगह घाव हो गए। उन्होंने इंद्रजीत को चुनौती देते हुए कहा, "इंद्रजीत, मैंने तुम्हारे पिता को खून की उल्टी करवाई थी! अगर हिम्मत है तो आमने-सामने आकर मुझसे लड़ो। दूर से लड़ना तुम्हारे जैसे योद्धा के लिए शोभा नहीं देता। आओ! देखते हैं कौन ज्यादा ताकतवर है।"

हनुमान के बुरी तरह घायल होने के कारण विभीषण ने लक्ष्मण को इंद्रजीत से युद्ध शुरू करने का निर्देश दिया। लक्ष्मण और इंद्रजीत के बीच युद्ध शुरू हुआ; दोनों ने ही धनुर्विद्या में अपनी दक्षता का प्रदर्शन किया। विभीषण लक्ष्मण को लगातार निर्देश देते रहे और उनके निर्देशानुसार लक्ष्मण धीरे-धीरे निकुंबिला की ओर बढ़े और होमम स्थल पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया। इस दौरान इंद्रजीत लक्ष्मण के बाणों और मिसाइलों का मुकाबला करने में पूरी तरह व्यस्त थे और विभीषण के लक्ष्मण को दिए गए निर्देशों और लक्ष्मण के निकुंबिला की ओर बढ़ते कदमों पर ध्यान नहीं दे पाए।

लक्ष्मण को निकुंबिला स्थल पर नियंत्रण करते देख इंद्रजीत लक्ष्मण से कुछ कह नहीं सके, लेकिन वे स्पष्ट रूप से समझ गए कि यह विभीषण का निर्देश था। उन्होंने विभीषण की ओर मुड़कर कहा, "मैं समझ गया हूँ कि लक्ष्मण को आपने ही निर्देश दिया था और यह भी समझ गया हूँ कि आपने ही लक्ष्मण को

युद्ध के लिए उकसाया था। आप लंका के सभी रहस्य जानते हैं और आपका मेरे और मेरे पिता के विरुद्ध लड़ना उचित नहीं है।"

विभीषण ने उत्तर दिया, "प्रिय बालक, तुम मेरे भाई के पुत्र हो। मैंने ही तुम्हारा पालन-पोषण किया है। याद रखो, युद्ध के जिन तरीकों का तुम अभी उपयोग कर रहे हो, उनमें से कुछ मैंने ही तुम्हें सिखाए हैं। तुम मेरे बच्चे के समान हो। मैं तुम्हें मारना या तुम्हारा अंत देखना नहीं चाहता। मैं केवल न्याय के लिए खड़ा हूँ। परिस्थिति ऐसी बन गई है कि मुझे अपने सैनिकों या धर्म में से किसी एक को चुनना है। मेरी शिक्षाओं ने मुझे धर्म के लिए खड़ा होने का मार्ग दिखाया है। इंद्रजीत, यह मैं नहीं था, बल्कि तुम्हारे पिता थे जो बार-बार विनती करने के बावजूद सीता को राम को सौंपने की मेरी बात नहीं समझ पाए। मैं आज भी उनके ज्ञान और प्रशासन की प्रशंसा करता हूँ। याद रखो, मैं ही हर समय उनके साथ था। हम बचपन से साथ रहे हैं; हम साथ-साथ पले-बढ़े हैं। विश्वास करो, मुझे तुमसे अपने भाई की महानता के बारे में सुनने की आवश्यकता नहीं है। तुम अभी युवा हो और स्वाभाविक रूप से अति उत्साही हो। तुम्हारी सोच केवल युद्ध जीतने तक सीमित है। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे अपने सैनिकों की चिंता है। मैं रावण का समर्थन नहीं कर सकता और न ही करूँगा क्योंकि वह जो कर रहा है वह अधर्म है। (अन्याय)। अगर मैं अभी इसकी निंदा नहीं करता, तो मुझे कुंभकर्ण जैसी स्थिति का सामना करना पड़ेगा। इंद्रजीत, तुम अभी बहुत छोटे हो और इन सब बातों को समझने की क्षमता नहीं रखते। इसीलिए तुमने माया सीता की हत्या करके राम, लक्ष्मण और उनकी सेना का अपमान किया। तुम्हें जीने का कोई अधिकार नहीं है। चलो अब बहस बंद करें और कार्रवाई करें।

इंद्रजीत ने अपना रथ लक्ष्मण की ओर मोड़ा। ऐसा करते ही हनुमान ने झुककर लक्ष्मण को अपनी पीठ पर बिठा लिया ताकि उनकी ऊँचाई इंद्रजीत के बराबर हो जाए। अब दोनों बराबर के बल पर थे। इंद्रजीत ने कहा, "लक्ष्मण, क्या तुम भूल गए कि तुम इंद्रजीत से लड़ने आए हो, जिसने तुम्हें और तुम्हारे भाई को पिछली बार बेहोश कर दिया था?" इस पर लक्ष्मण ने उत्तर दिया, "बस करो इंद्रजीत, तुमने कभी राजसी युद्ध नहीं लड़ा। तुम युद्ध के दौरान हमेशा अदृश्य रहे। यही तुम्हारी बहादुरी का प्रमाण है। अब प्रकट हो जाओ और अपनी किस्मत आजमाओ।" लक्ष्मण की बातों से इंद्रजीत क्रोधित हो गया। प्रकट होकर वह युद्ध के मैदान में लड़ने लगा।

इंद्रजीत और लक्ष्मण का युद्ध बहुत देर तक चलता रहा। दोनों ओर से बाण और मिसाइलें आकाश में उड़ती रहीं और एक-दूसरे पर प्रहार करती रहीं। युद्ध अंतहीन प्रतीत हो रहा था, क्योंकि दोनों पक्ष बराबर की ताकत से लड़ रहे थे। विभीषण ने लक्ष्मण से कहा, "लक्ष्मण, युद्ध अच्छा चल रहा है। मुझे इंद्रजीत के चेहरे पर भय दिखाई दे रहा है। इसी तरह लड़ते रहो।" फिर वानरों की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, "प्रिय वानरों, मैं भी इंद्रजीत की सेना को मारने में तुम्हारा साथ दूंगा। मैं इंद्रजीत को लक्ष्मण के हवाले करता हूं, क्योंकि वह मेरे भाई का पुत्र है और मैंने ही उसका पालन-पोषण किया है।"

इसके बाद विभीषण ने इंद्रजीत के सारथी को मार डाला। इंद्रजीत रथ की देखभाल करने और लक्ष्मण से युद्ध करने में एक साथ संघर्ष कर रहे थे। विभीषण ने इंद्रजीत के घोड़ों को मार डाला और रथ के पहिए तोड़ दिए। इंद्रजीत नीचे गिर पड़े। फिर भी, वह निडर योद्धा जमीन पर खड़े रहे और लड़ते रहे। उन्होंने अपने सैनिकों को उन्हें ढँकने और लक्ष्मण और विभीषण से कुछ देर तक लड़ने का आदेश दिया। फिर किसी को पता चले बिना वे तेजी से दरबार में गए और एक और शक्तिशाली रथ और घोड़ों के साथ वापस आए। लक्ष्मण और विभीषण प्रभावित हुए और इंद्रजीत की फुर्तीली चालों की प्रशंसा की।

लक्ष्मण और इंद्रजीत के बीच युद्ध लंबे समय तक चला। वानर सेना और विभीषण ने इंद्रजीत की सेना के सभी सैनिकों को मार डाला, फिर लक्ष्मण ने इंद्रजीत के नए सारथी को मार डाला, जबकि विभीषण ने

एक बार फिर नए घोड़ों को गिरा दिया। अंत में, लक्ष्मण के शक्तिशाली अस्त्रम (बाण) ने इंद्रजीत के हृदय को भेद दिया और उनकी अंतिम सांस ले ली।

विभीषण और वानर खुशी से उछल पड़े और चिल्लाने लगे। वे राम की ओर दौड़े। विजय की खबर सुनकर राम ने लक्ष्मण और विभीषण को गले लगा लिया। वानरों की सेना के सुसेना ने उन सभी के घावों का उपचार किया।

मेरी अंतिम समीक्षा

मैं अपनी बालकनी में अकेला खड़ा सूर्यास्त और केसरिया आकाश को देख रहा था। आकाश का रंग और उसका प्रतिबिंब धरती पर चारों ओर धर्म की स्थापना का संकेत दे रहा था। लाल सूर्य राम के साथ मेरे महायुद्ध का प्रतीक था और क्षितिज में उसका अस्त होना मेरी हार का संकेत दे रहा था।

जब मैं वहाँ खड़े होकर अपने सामने की सुंदरता का ध्यान कर रहा था, तभी मुझे इंद्रजीत के बारे में संदेश मिला। मैंने उस संदेश पर ज़्यादा प्रतिक्रिया नहीं दी, क्योंकि मुझे इसकी उम्मीद थी। मेरी तरफ से लगभग सभी महान योद्धा मारे गए थे और केवल कुछ सैनिक और तीन सेनापति—महापार्श्व, महोदरा और विरुपाक्ष—बचे थे। इन तीनों को उनकी सेना के साथ राम के पास भेजने से पहले, मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि बचे हुए सभी लोग सीता की देखभाल करने के योग्य हैं या नहीं। एक बार जब मैं युद्ध के मैदान में पहुँच जाऊँगा, तो महल और अशोक वनम में मेरे लोगों को यह बुरी खबर मिल सकती है। क्या होगा अगर वे मेरी मृत्यु के बाद राम या विभीषण के सीता के पास आने से पहले ही हताशा में उन्हें चोट पहुँचाएँ या मार डालें? मैं ऐसा नहीं होने दे सकता। युद्ध के अगले चरण में, मुझे युद्ध के मैदान में प्रवेश करने से पहले अपना महल, रानियाँ और सब कुछ पीछे छोड़ना होगा। मुझे यकीन नहीं है कि मैं महल लौट पाऊँगा। जब तक मैं युद्ध के मैदान में जीवित हूँ, सीता यहाँ सुरक्षित हैं। लेकिन मुझे यकीन था कि किसी न किसी समय मैं गिर जाऊँगा। इससे पहले कि ऐसा हो, मुझे यह सुनिश्चित करना था कि सीता राम या विभीषण की शरण में चली जाए और मेरी मृत्यु के दौरान भी सुरक्षित रहे। अगर मेरे किसी आदमी या औरत ने उसे चोट पहुँचाई या मार डाला तो क्या होगा? यह एक बहुत बड़ी संभावना थी और इसका समाधान करना ज़रूरी था।

मैंने कुछ देर इस संभावित समस्या पर विचार किया और फिर अपने सैनिकों की परीक्षा लेने का फैसला किया। मैं दिखावटी क्रोध में अशोक वन गया। मुझे देखकर सीता समेत सभी को लगा कि मैं उसे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। लेकिन तभी सुपार्वु ने मुझे रोकते हुए कहा, “हे स्वामी, मुझे रोकने के लिए क्षमा करें। राम के विरुद्ध युद्ध अच्छा हो या बुरा, समस्या यह बिल्कुल नहीं है। युद्ध जीतने के बाद सब कुछ भुला दिया जाएगा और केवल विजय ही याद रहेगी। लेकिन अब, यदि आप सीता को मारकर युद्ध में विजयी होकर लौटते हैं, तो इससे उद्देश्य ही विफल हो जाएगा। वासना के लिए एक स्त्री की हत्या करने के लिए आप पर कलंक लगेगा और यह आप पर हमेशा के लिए एक काला धब्बा होगा।” मैंने मन ही मन मुस्कुराते हुए उसकी बात सुनी। मुझे वह व्यक्ति मिल गया था जिसकी मुझे तलाश थी। सुपार्वु के इन शब्दों ने मुझे विश्वास दिलाया कि मेरे अंतिम प्रस्थान के बाद सीता को सुरक्षित रूप से राम को सौंप दिया जाएगा। मैंने महिला रक्षकों को निर्देश दिया कि युद्ध समाप्त होने तक सीता को सुरक्षा के लिहाज से स्ट्रिपुरा ले जाया जाए, जहाँ महिलाओं की संख्या अधिक थी। मैंने सुपार्वु के कंधे पर हल्का सा हाथ रखा और अपने महल लौट गया।

अब मेरा एकमात्र ध्यान युद्ध की तैयारी पर था। राम के साथ युद्ध, वह युद्ध जो इतिहास में सर्वकालिक महानतम युद्ध के रूप में दर्ज होगा; वह युद्ध जिसकी चर्चा ब्रह्मांड के अंत तक होगी और - इससे भी महत्वपूर्ण बात - वह युद्ध जो यह सिद्ध करेगा कि अच्छाई की हमेशा जीत होती है।

मेरे चारों ओर बहुत अधिक नकारात्मकता फैली हुई थी क्योंकि मेरे कई सैनिक और बेटे मारे जा चुके थे। घर पर सभी अपने परिवार के सदस्यों के बेजान शरीर देखकर रो रहे थे। मुझे थोड़ा आराम चाहिए था, कुछ समय चाहिए था। मैंने सैनिकों को संदेश भेजा कि वे वानरों से लड़ते रहें ताकि मैं ध्यान और शिव प्रार्थना कर सकूँ। मैंने शेष तीन सेनापतियों से भी कहा कि वे मेरी प्रार्थना पूरी होने तक वहीं रुकें।

फिर मैंने गर्म पानी से स्नान किया, नए और साफ कपड़े पहने और शिव से प्रार्थना शुरू की। मुझे एक शांत और सकारात्मक मन चाहिए था। सबसे भयंकर युद्ध के लिए सबसे शांत मन की आवश्यकता होती है। मैंने प्रार्थना की और प्रौद्योगिकी, युद्ध और ध्यान के देवता को समर्पित अपना गीत गाया।

खैर, चूंकि यह विषय सामने आया है, तो मैं इस गीत के बारे में भी कुछ जानकारी साझा करना चाहूंगा। मैंने इस गीत का नाम 'शिव तांडव स्तोत्रम्' रखा है और यह आज भी शिव मंदिरों और पूजाओं में शिव की स्तुति में गाया जाता है। मेरी रचना इतनी प्रभावशाली है कि यह गीत सदियों से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चला आ रहा है। इस गीत की यादें मुझे अभी इसे गाने के लिए प्रेरित करती हैं। मुझे यकीन है कि आपके आधुनिक इंटरनेट पर यह उपलब्ध होगा... आप इसे आसानी से ढूंढ लेंगे। किसी शांत और एकांत स्थान पर बैठें, अपनी आंखें बंद करें और 'शिव तांडव स्तोत्रम्' सुनें। जब आप इसे सुनेंगे, तो आप शिव की शक्ति और मेरी रचना की गहराई को महसूस करेंगे। क्या आप इसे सीखना चाहते हैं? लीजिए, यह रहा।

|| Om Namah Sivaya ||

|| Om Namah Sivaya ||

|| Om Namah Sivaya ||

jatātavī-galajjala-pravāha-pāvita-sthale

gale 'valambya lambitām bhujaṅga-tuṅga-mālikām |

ḍamaḍ ḍamaḍ ḍamaḍ ḍaman ninād a-vaḍḍa-marvayaṃ

cakāra chaṇḍa-tāṇḍavaṃ tanotu naḥ Sivaḥ Sivam

|| 1 ||

अर्थ: घने जंगल में आपस में गुंथे हुए वृक्षों के समान आपके बालों से पवित्र गंगा इस धरती पर निकली और इसे पवित्र किया। आप उसी पवित्र धरती पर नृत्य कर रहे हैं। आपके गले में भयंकर नागों की सुंदर मालाएं हैं। आपके दमरुकम के धम्म, धम्म, धम्म की लय से पूरी धरती स्पंदित हो रही है। ऐसे वातावरण में आप असीम प्रसन्नता से नृत्य कर रहे हैं। हे परमेश्वर! इसी प्रकार हमारी आत्माओं में भी नृत्य कीजिए।

jaṭā-kaṭā-hasambhrama-bhraman nilimpa-nirjharī

vilola-vīci-vallarī-virāja-māna-mūrdhani |

dhagad dhagad dhagaj jvalal lalāṭa-paṭṭa-pāvake

kiśora-candraśekhare ratiḥ pratikṣaṇaṃ mama

|| 2 ||

अर्थ: हे शिव, आपके घने जंगल जैसे बाल गंगा नदी के भंवर की तरह घूम रहे हैं। आपसे बहने वाली गंगा भी उतनी ही तीव्रता से घूम रही है। आपके मोहक नृत्य के परिणामस्वरूप नीचे लटके हुए लताओं जैसे खुले बाल समुद्र की लहरों जैसे लग रहे हैं। आपकी अग्नि से प्रज्वलित तीसरी आंख आपके माथे को रोशन कर रही है, जहां से प्रज्वलित प्रकाश भग... भग की ध्वनि उत्पन्न कर रहा है। आपके सिर में अर्धचंद्र चमक रहा है। हे परमेश्वर! आपका आनंदमय नृत्य मेरे भीतर आनंद की लहरें उत्पन्न कर रहा है।

dharādharendra-nandinī-vilāsa-bandhu-bandhura-

sphurad diganta-santati-pramoda-māna-mānase |

kṛpā-kaṭākṣa-dhoraṇī-niruddha-durdharāpadi

kvacid digambare (kvacic cidambare) mano vinodametu vastuni

|| 3 |

अर्थ: आपके अप्रतिरोध्य और भव्य नृत्य से प्रेरित होकर, पृथ्वी की रानी और पर्वतों की राजकुमारी पार्वती ने आपका साथ दिया। उन्होंने नृत्य के हर क्षण में आपका सुंदर साथ दिया। नृत्य की वह सशक्त शैली धीरे-धीरे हर प्राणी के मन और आत्मा में समा जाती है, जिससे आनंद और प्रसन्नता की लहरें उत्पन्न होती हैं। नृत्य करते हुए शिव की तिरछी दृष्टि किसी भी प्रकार की विपत्ति को दूर करने की शक्ति रखती है। आकाश वस्त्र पहने, सब कुछ से विरक्त शिव का कभी-कभार नृत्य में रुचि लेना आश्चर्यजनक है।

jaṭā bhujaṅga piṅgalasphurat phaṇāmaṇiprabhā
kadamba kuṅkuma drava pralip tadig vadhū mukhe |
madāndha sindhuras phurat tvagut tarīyame dure
mano vinodamadbhutaṃ bibhartu bhūta bhartari
|| 4 ||

अर्थ: उसके बालों में लिपटे लाल-भूरे रंग के सांप अपने फन फैलाकर फुफकार रहे हैं। उनकी फुफकार से केसरिया रंग चारों ओर फैल रहा है और आकाश लाल रंग की दुल्हन की तरह लग रहा है। उसकी कमर के चारों ओर लहराती हाथी की खाल किसी भयंकर जीवित हाथी जैसी प्रतीत हो रही है। मैं उस शानदार आनंदमय नृत्य का सुख और आनंद महसूस कर पा रहा हूँ। मैं इस धरती पर संपूर्ण जीवन की देखभाल करने वाले के उस अद्भुत नृत्य में खो गया हूँ।

sahasralocana prabhṛtya śeṣalekha śekhara
prasūna dhūli dhoraṇī vidhūsarāṅghri pīṭhabhūḥ |
bhujaṅga rājamālayā nibaddha jāṭajūṭaka
śriyai cirāya jāyatāṃ cakora bandhuśekharaḥ
|| 5 ||

अर्थ: हजार नेत्रों वाले इंद्र और अन्य सभी देवता एवं देवत्व प्राप्त लोग शिव को नृत्य करते देखने आए हैं। चारों ओर केवल उनके सिर ही दिखाई दे रहे हैं। शिव के निरंतर तीव्र नृत्य से उड़ने वाली राख की धूल से सभी देवताओं के चेहरों पर एक पतली परत का मेकअप चढ़ गया है। उनके पैर की उंगलियां और टांगें उड़ती हुई धूल के रंग में रंग गई हैं और यह भूमि पवित्र हो गई है। चमकीले रंग के सर्प उनके बालों में फूलों की तरह सजे हैं। उनके सिर पर अर्धचंद्र है, जो और भी अधिक चमक रहा है और अपना प्रकाश फैला रहा है।

lalāṭa ca tvara jvalad dhanañjaya sphuliṅgabhā
nipītapañca sāyakaṃ naman nilim panāyakam |
sudhā mayū khale khayā virāja mānaśekharaṃ
mahākapā lisam padeśi rojaṭā lamastu naḥ
|| 6 ||

अर्थ: उनके माथे पर स्थित तीसरी आंख अग्नि के गोले के समान है, जो अपना प्रकाश चारों दिशाओं में फैलाती है। यह कोई सामान्य अग्नि नहीं है; यह वह अग्नि है जो सभी कामवासनाओं का नाश करती है। उनके सिर पर रमणीय अर्धचंद्र है। उस चंद्रमा की रमणीयता और अपने भीतर की कामवासनाओं को पराजित करने की परिपक्वता जैसे गुण हम सभी में फैलने चाहिए।

karā labhāla paṭ ṭikā dhagad dhagad dhagaj jvalad
dhanañjayā hutī kṛta pracaṇḍa pañca sāyake |
dharā dharendra nandinī kucā graci tra patraka
prakalpanaika śilpini trilocane ratirmama
|| 7 ||

अर्थ: उनके माथे पर जलती अग्नि भग भग की ध्वनि से प्रज्वलित है। वह अग्नि जो कामवासना को राख में बदल देती है। उनके नृत्य ने इस धरती पर अनगिनत कलात्मक आकृतियाँ बनाई हैं जो इस पृथ्वी पर सुंदर परिदृश्यों में समाहित हो जाती हैं। वे कितने महान कलाकार हैं! इस शिव तांडव ने मुझे असीम आनंद दिया है।

navīna megha maṇḍalī niruddha dur dharasphurat
kuhū niśīthinī tamaḥ prabandha baddha kandharaḥ |
nilim panir jharī dharas tanotu kṛt tisindhuraḥ
kalā nidhāna bandhuraḥ śriyaṃ jagad dhuraṃ dharaḥ
|| 8 ||

अर्थ: उनके भव्य नृत्य से सभी काले बादल आकर्षित होकर उनके गले में एक दुपट्टा बन गए। हे प्रभु, जिन्होंने गंगा, हाथी की खाल और अर्धचंद्र को आभूषण के रूप में धारण किया है, और हे प्रभु, जिन्होंने इस संसार और हम सभी को धारण किया है, अपने नृत्य से प्राप्त उस आंतरिक धन को हमारे साथ साझा करें।

praphul lanī lapaṅkaja prapañcakā lima prabhā-
-valam bikaṇṭha kandalī ruci prabaddha kandharam |
smarac chidaṃ puracchidaṃ bhavacchidaṃ
makhacchidaṃ
gajacchidāṃ dhakachidaṃ tamaṃ takac chidaṃ bhaje
|| 9 ||

अर्थ: संसार का सारा अंधकार उनके गले में समाहित है, जिससे उनके गले पर नीला रंग आ गया है। उनके गले का नीलापन खिले हुए नीले कमल के समान दिखता है। हे प्रभु, आपने दक्ष, त्रिपुरा, अंधक और अनेक अन्य राक्षसों का नाश किया। जीवन और मृत्यु पर आपका ही अधिकार है। अब मेरी भौतिक आसक्तियों का नाश कीजिए।

akharva sarvamaṅgalā kalā kadaṃba mañjarī

rasa pravā hamā dhurī vijṛṇbhaṇā madhu vratam |

smarāntakaṃ purāntakaṃ bhavāntakaṃ makhāntakaṃ

gajān takān dhakān takaṃ taman takān takaṃ bhaje

|| 10 ||

अर्थ: मैं उस भगवान की आराधना कर रहा हूँ जो इस संसार में अनंत महिमा फैला सकते हैं और जो समस्त ज्ञान से परिपूर्ण हैं। उनका भाव शहद के समान मधुर है और वे अपने नृत्य के द्वारा अमृत के समान इस संसार में विलीन हो रहे हैं। हे मेरे प्रभु, आपने मनमधा को राख में बदल दिया। हे मेरे प्रभु, आपने गजासुर का अंत किया। हे मेरे प्रभु, आपने अंधक का अंत किया। हे मेरे प्रभु, अब आप मेरे भौतिक संबंधों और आसक्ति का अंत करें।

jaya tvada bhravi bhrama bhramad bhujaṅga maśvasa

dvinir gamat kramasphurat karā labhāla ha vyavāṭ |

dhimid dhimid dhimi dhvanan mṛdaṅga tuṅga maṅgala

dhvani krama pravartita pracaṇḍa tāṇḍavaḥ Sivaḥ

|| 11||

अर्थ: उनकी भौहें लगातार ऊपर-नीचे हो रही हैं और प्रत्येक गति एक संसार पर उनकी पकड़ का प्रतीक है, इस प्रकार वे समस्त लोकों के स्वामी हैं। वे भव्यता से नृत्य कर रहे हैं। उनके गले में लिपटे साँप फुफकार रहे हैं। उनके माथे पर जलती अग्नि लयबद्ध रूप से बढ़ और घट रही है। उनके ढोल धिमी धिमी की ध्वनि कर रहे हैं। हे प्रभु, वे नृत्य कर रहे हैं, नृत्य कर रहे हैं और नृत्य कर रहे हैं।

dṛṣa dvici tratal payor bhujaṅga mauktikasrajor-
gariṣṭha ratna loṣṭhayoḥ suhṛ dvi pakṣa pakṣayoḥ |
tṛṇā ravinda cakṣuṣoḥ prajā mahī mahendrayoḥ
samapravṛ tikaḥ kadā sadāSivaṃ bhajamyaham
|| 12 ||

अर्थ: हे मेरे प्रभु, मैं इस कठोर भूमि को कब अपने लिए आरामदायक बिस्तर समझ पाऊँगा? हे मेरे प्रभु, मैं इन साँपों को अपने गले में मोतियों की माला कब समझ पाऊँगा? मैं रत्नों और रेत को कब एक समान देख पाऊँगा? मैं मित्र और शत्रु को कब एक समान देख पाऊँगा? मैं घास और कमल को कब एक समान देख पाऊँगा? मैं एक आम आदमी और सम्राट को कब एक समान देख पाऊँगा? मुझे समानता का दर्शन कब प्राप्त होगा? और मैं आपको कब देख पाऊँगा, हे मेरे प्रभु? मुझे यह समानता प्रदान कीजिए, हे मेरे प्रभु।

kadā nilim panir jharī nikuñja koṭare vasan
vimukta durmatiḥ sadā śiraḥstha mañjaliṃ vahan |
vilola lola locano lalā mabhāla lagna kaḥ
śiveti mantra muccaran kadā sukhī bhavā myaham
|| 13 ||

अर्थ: मैं गंगा के किनारे घने जंगलों में गुफा में बैठकर तपस्या कब करूँगा? मैं इन सभी मिथकों और कृत्रिमताओं से कब मुक्त होऊंगा? मेरे माथे पर पवित्र राख कब लगेगी और मैं आपके लिए तपस्या कब करूँगा? मैं कब आपके नाम का जाप करने और शाश्वत सुख प्राप्त करने में लीन हो जाऊंगा?

imaṃ hi nityamevamuktamuttamottamaṃ stavaṃ
paṭhansmaranbruvannaro viśuddhimetisaṃtatam |
hare gurau subhaktimāśu yāti nānyathā gatiṃ
vimohanaṃ hi dehināṃ suśaṅkarasya cintanam
|| 14 ||

अर्थ: आपने परम पवित्र शिव तांडव स्तोत्रम को पढ़ और समझ लिया है। निस्वार्थ और शांत मन से, जब आप इस स्तोत्रम का नियमित रूप से दिव्य भाव से पाठ करेंगे, तो आपको शीघ्र ही गुरु शिव का आशीर्वाद प्राप्त होगा। आवश्यकता पड़ने पर आपको सहायता के लिए इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं होगी। इस ध्यान के माध्यम से आप सभी भ्रमों और नकारात्मकता से मुक्त हो जाएंगे।

pūjāvasāna samaye daśavaktragītaṃ
yaḥ śaṁbhupūjanaparaṃ paṭhati pradoṣe |
tasya sthirāṃ rathagajendra turaṅgayuktāṃ
lakṣmīṃ sadaiva sumukhiṃ pradadāti śaṁbhuḥ
|| 15 ||

अर्थ: इस स्तोत्र को अपनी दैनिक प्रार्थनाओं में शामिल करें या सूर्यास्त के समय मेरे द्वारा रचित इस स्तोत्र का पाठ करें, जिसे दस सिर वाले रावण के समान माना जाता है। इस स्तोत्र का नियमित और दृढ़तापूर्वक पाठ करने से आपको लक्ष्मी (समृद्धि) की प्राप्ति होगी और आपकी सभी मनोकामनाएँ पूरी होंगी। परमेश्वर निश्चित रूप से आप पर यह वरदान बरसाएँगे।

iti śrī rāvaṇa-kṛtam,

Sivatāṇḍava stotraṃ,

Sampūrnam

अर्थ: श्री रावण द्वारा लिखित शिव-तांडव स्तोत्र का यहीं समापन होता है।
क्या यह प्रभावशाली नहीं है? बिल्कुल है।

इसी बीच, मुझे अपने साथियों से खबर मिली कि भीषण रक्तपात देखकर और अपनी मृत्यु के भय से मेरी माताजी ने भी उसी शिव की पूजा की और अपना शरीर त्याग कर शाश्वत प्राप्ति की। इससे उनके अंतिम संस्कार को विधिपूर्वक पूरा करने का एक और महत्वपूर्ण कार्य जुड़ गया है। रावण के रूप में इस पवित्र भूमि पर मुझे जन्म देने वाली माताजी के प्रति पूर्ण आदर के साथ अंतिम संस्कार करने के लिए मुझे सात अलग-अलग नदियों के जल की आवश्यकता है। कठिनाई यह है कि आसपास की सभी नदियों का जल मांस और रक्त से मिश्रित है, जिससे वे अनुष्ठान के लिए अनुपयोगी हो जाती हैं। तब मैंने अपनी पवित्र शक्तियों का प्रयोग करके सात विशेष कुएँ बनाए जिनसे पवित्र नदियों के जल के समान जल निकलता

है। ये जल आज भी गर्म हैं। ये कुएँ आज भी द्वीप में नग्न आँखों से दिखाई देते हैं। द्वीप के कुछ नागरिकों ने अब इन कुओं का उपयोग अपने जीवन में विभिन्न अनुष्ठानों के लिए करना एक रिवाज बना लिया है।

अंतिम युद्ध भाग 9

मैं तैयार हूँ...
इस धरती पर मैंने अपने सभी कर्तव्य पूरे कर लिए हैं।
मैं टाइटन के साथ टकराव के लिए तैयार हूं।
मुझे सूचना मिली कि मेरे सैनिक वानरों द्वारा मारे जा रहे हैं। मैंने तुरंत संकेत दिया, अपने स्वर्ण रथ को बुलाया और घातक मिसाइलों से लैस अपने विशेष रथ, ढालधारी घोड़ों और लहराते झंडे के साथ युद्ध के मैदान में निकल पड़ा। महापार्श्व, महोदरा और विरुपाक्ष अपने दल के साथ ढोल-नगाड़ों और सायरनों की गड़गड़ाहट के बीच युद्ध के मैदान में मेरे साथ शामिल हो गए।
हमारे प्रवेश का तरीका देखकर वानरों में दहशत फैल गई। हम इतने बलवान और शक्तिशाली दिख रहे थे। जब मैंने युद्धक्षेत्र में प्रवेश किया, तो मेरे सैनिक और राम के सैनिक आपस में लगातार लड़ रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो यह लड़ाई कभी खत्म न हो। हर कोई लड़ रहा था, लेकिन कोई भी गिर नहीं रहा था। इससे युद्धक्षेत्र में मौजूद सभी को स्पष्ट संदेश मिल गया कि यह लड़ाई कम से कम अगले दो दिनों तक नहीं रुकने वाली है। मैंने अपने घातक हथियारों का प्रयोग किया और कई वानरों को मार गिराया और राम की ओर बढ़ने लगा। सुग्रीव ने अपने सैनिकों को मरते देखा और मेरे सैनिकों पर बड़े-बड़े पत्थर फेंकने लगा। पत्थरों की इस बौछार से सुग्रीव ने मेरे कई सैनिकों को मार डाला।
विरुपाक्ष रथ से उतरकर हाथी पर सवार हो गया और सुग्रीव से युद्ध करने लगा। विरुपाक्ष और सुग्रीव के दल के बीच काफी देर तक लड़ाई चली और अंत में सुग्रीव ने हाथी और विरुपाक्ष दोनों को मार डाला। महोदरा ने विरुपाक्ष का पीछा किया और वही परिणाम दोहराया गया।
महापार्सवु अंगधा पर कूद पड़े। दोनों के बीच काफी देर तक लड़ाई चली और बड़ी मुश्किल से अंगधा ने महापार्सवु को पराजित किया। अब सभी सेनापति मारे जा चुके थे।
मैंने अपने प्रिय शत्रु से युद्ध करना शुरू किया। राम मुझ पर अनेक बाण और मिसाइलें चला रहे थे और मैं उन सबका जवाब दे रहा था। इसी प्रकार, राम ने मेरी सभी मिसाइलों का जवाब दिया। आकाश में बिजली कड़कने जैसी स्थिति थी। हमारा एक भी बाण दूसरी ओर नहीं पहुँच पाया। सभी बाण बीच में ही रोक दिए गए। जब हमारा युद्ध चल रहा था, वानरों ने मेरे घोड़ों को मार डाला और लक्ष्मण ने मेरे धनुष और ध्वज पर तीर चला दिया। मैं रथ से उतरा और राम से युद्ध करने लगा। लक्ष्मण से युद्ध करते हुए मुझे अहसास हुआ कि वह राम के समान ही महान योद्धा थे। मुझे मिसाइलों की शक्ति एक-एक करके बढ़ानी पड़ी। लक्ष्मण मेरी सभी मिसाइलों का सफलतापूर्वक जवाब देने में सक्षम थे। काफी समय बीत चुका था और सूर्य अस्त होने वाला था। लक्ष्मण से लड़ते-लड़ते मैं थक गया था क्योंकि मेरा निशाना उनका भाई था। मैंने एक शक्तिशाली बाण निकाला; ऐसा बाण जिसकी लक्ष्मण को मुझसे उम्मीद नहीं थी। बस! मेरा बाण चला और लक्ष्मण की छाती में जा लगा। वह गिर पड़े।

अपने भाई को मरते देख राम क्रोधित हो उठे और बिजली की गति से बाण बरसाने लगे। न तो मैं और न ही वहाँ मौजूद कोई भी राम के हाथ देख पा रहा था। उनके हाथ इतनी तेज़ी से चल रहे थे कि हमें केवल राम के बाणों का ही आभास हो रहा था। मेरे लिए उन सभी बाणों का सामना करना मुश्किल हो गया। राम बहुत क्रोधित थे! हालाँकि मैं मरने को तैयार था, पर इतनी जल्दी हार मानने को तैयार नहीं था। कुछ देर तक राम के बाणों का सामना करते हुए, मैं अंततः अपने महल की ओर लौट गया।

सूर्य अस्त हो चुका था और राम के शिविर में सन्नाटा छा गया। लक्ष्मण मरणासन्न अवस्था में थे। तभी राम के दल के सुसेना ने लक्ष्मण की नब्ज़ और आँखों की जाँच की, राम की ओर मुड़कर कहा, “राम, लक्ष्मण बेहोश हो गए हैं। लेकिन उन्हें होश में लाना मुश्किल है क्योंकि उन्हें गंभीर चोट लगी है। हमें औषधि पर्वत से तुरंत मृत संजीवनी बूटी लानी होगी। यही एकमात्र आशा है। लेकिन इसे लगाने के लिए हमारे पास ज़्यादा समय नहीं है। सूर्योदय से पहले इसे यहाँ लाना होगा।”

सुसेना की बात सुनकर हनुमान तुरंत वायु में उड़कर हिमालय के औषधि पर्वत पर पहुँच गए। वहाँ भी उन्हें वांछित पौधा पहचानने में कठिनाई हुई, इसलिए उन्होंने फिर से पर्वत उखाड़ दिया और उसे लेकर लंका लौट आए।

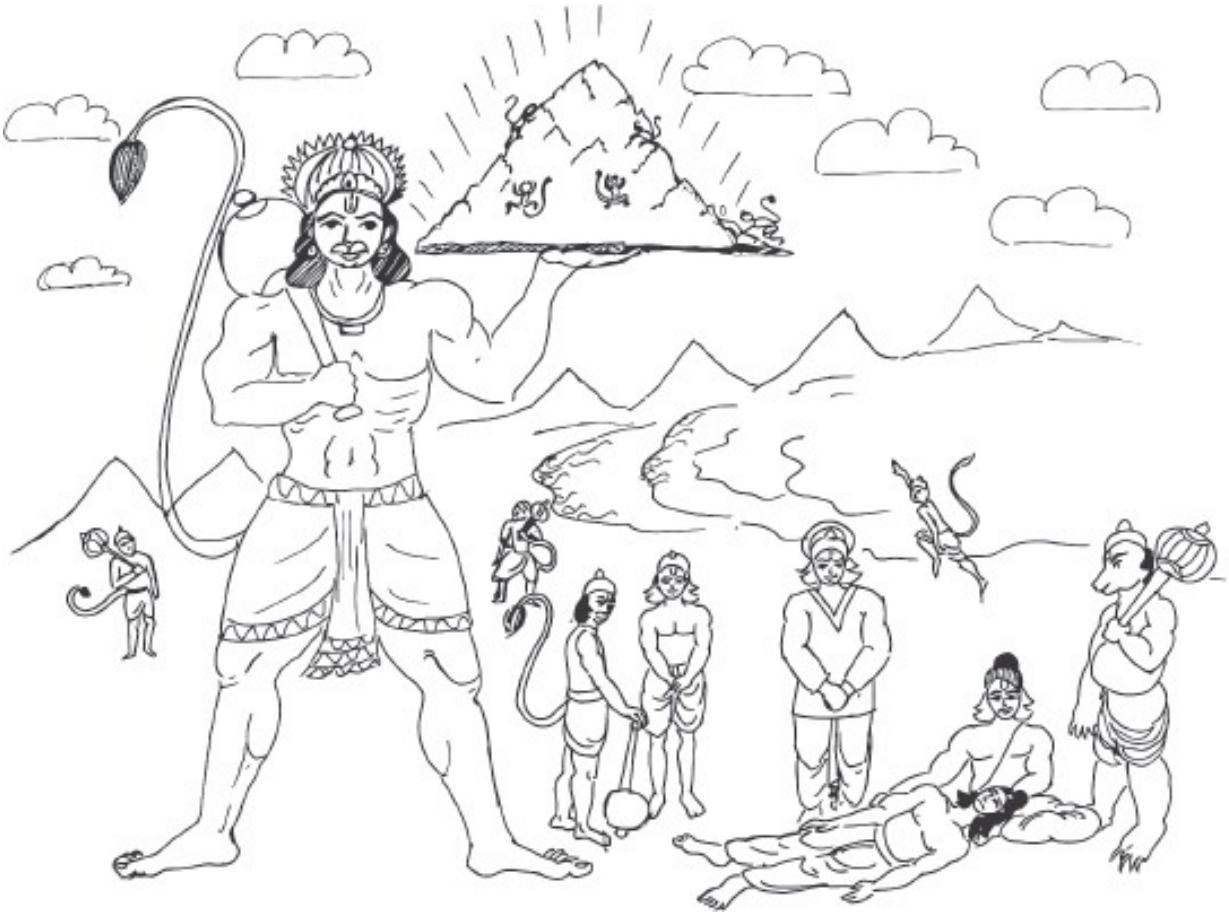

समय कम होता जा रहा था। लक्ष्मण ठंड से कांपते जा रहे थे। उनका शरीर नीला पड़ने लगा था। हनुमान को अपना वाहन नीचे रखने में कठिनाई हो रही थी, तभी सुशेना उड़कर आए और मनचाही औषधि लेकर लक्ष्मण को खतरे से बाहर ले आए। राम ने लक्ष्मण को गले लगाया और कहा, “आप लगभग मर ही गए थे। हनुमान और सुशेना ने ही आपको जीवनदान दिया है। अगर मैं आपको खो देता तो मैं कैसे जी पाता?” लक्ष्मण ने उत्तर दिया, “भाई, ये सब भूल जाइए। देखिए, सूर्य उदय होने वाला है। युद्ध का समय आ गया है। ये सब सोचना बंद कीजिए, रावण पर ध्यान केंद्रित कीजिए। विजय हमारी है और हमें रावण को अपनी शक्ति दिखानी होगी। सीता को तुरंत मुक्त कराना होगा।”

सूरज उग चुका था और हनुमा के पास अपने वाहन को वापस उसकी मूल जगह पर रखने का ज़्यादा समय नहीं था। चूंकि वह उसे कहीं भी नहीं रख सका, इसलिए उसने वाहन को टुकड़ों में तोड़ दिया और द्वीप पर किसी भी जीव को नुकसान पहुंचाए बिना, प्रत्येक टुकड़े को सावधानीपूर्वक जहाँ भी संभव हो, गिरा दिया।

अंतिम युद्ध भाग 10

जैसे ही युद्ध के मैदान पर सूर्य की किरणें पड़ीं, दोनों ओर से सायरन बजने लगे। इस बार दो सेनाएँ नहीं, बल्कि केवल राम और मैं ही आमने-सामने थे। मैं अपने स्वर्ण रथ पर सवार था और राम धरती पर खड़े थे। इंद्र, जो पहले मेरे परिवार से पराजित हो चुके थे, ने अपना रथ, घोड़े, ढाल, विशेष शस्त्र, धनुष, बाण और अपने सारथी माथली को राम के पास भेजा। माथली ने अत्यंत विनम्रता और आदर के साथ अपने आगमन का कारण बताते हुए कहा, "प्रिय राम, रावण के विरुद्ध आपका यह युद्ध केवल आपका व्यक्तिगत नहीं है। यह न्याय की लड़ाई है और इस पृथ्वी पर अच्छाई की स्थापना के लिए है। कृपया इंद्र की ये भेंट स्वीकार करें और यदि आप चाहें तो मैं आपका सारथी बनकर सम्मानित महसूस करूँगा।" राम ने आदरपूर्वक इंद्र का प्रस्ताव स्वीकार किया और माथली को अपना सारथी बनने की अनुमति दी।

अब हम दोनों बराबर के थे और दिखने में भी समान रूप से शक्तिशाली थे। हम दोनों के पास शक्तिशाली रथ और प्रशिक्षित रथ चालक, घोड़े और हथियार थे—ये सभी एक भीषण युद्ध के स्पष्ट संकेत थे।

राम ने अपने और इंद्र के हथियारों का संयुक्त प्रयोग शुरू किया और मैंने उनका प्रतिकार किया। इसी प्रकार, राम ने भी मेरे द्वारा चलाए गए हथियारों का प्रतिकार किया।

कुछ देर बाद राम ने लगातार और बिना रुके भारी संख्या में बाण बरसाना शुरू कर दिया। मैंने उनका जवाब दिया, लेकिन उनकी ताकत और संख्या ने मुझे भ्रमित और स्तब्ध कर दिया। मेरे सारथी ने मेरी घबराहट देखी और रथ को युद्धक्षेत्र से बाहर ले जाकर थोड़ी देर आराम देने की कोशिश की। मैंने मना कर दिया और कहा कि सब ठीक है और लड़ाई जारी रखी।

राम और मैं दिनभर बाणों और मिसाइलों से लड़ते रहे। सूरज डूबने के बाद भी हममें से कोई पीछे हटने या रुकने को तैयार नहीं था। इसलिए दिनभर लड़ने के बावजूद, रात में भी हमारी लड़ाई जारी रही। दोनों तरफ से मिसाइलें और भी शक्तिशाली होती गईं। हमारी लड़ाई की खबर सभी लोकों में फैल गई। कई ऋषि-मुनि और देवता हमारी लड़ाई देखने के लिए तमाशबीन बनकर आए। अगस्त्य, इंद्र, शिव, मेरे दादा ब्रह्मा और कई अन्य लोग भी उपस्थित थे।

हमारा संघर्ष जारी रहा, लेकिन हम दोनों थक चुके थे। अगस्त्य ने राम को थकते हुए देखा और आदित्य हृदयम स्तोत्र सुनाकर उनकी ऊर्जा बढ़ाई। बढ़ी हुई ऊर्जा से राम ने माथली को रथ को और अधिक कुशलता से चलाने का निर्देश दिया। माथली ने रथ को गोलाकार दिशा में घुमाया, जिससे मुझ पर और मेरे घोड़ों पर धूल उड़ने लगी।

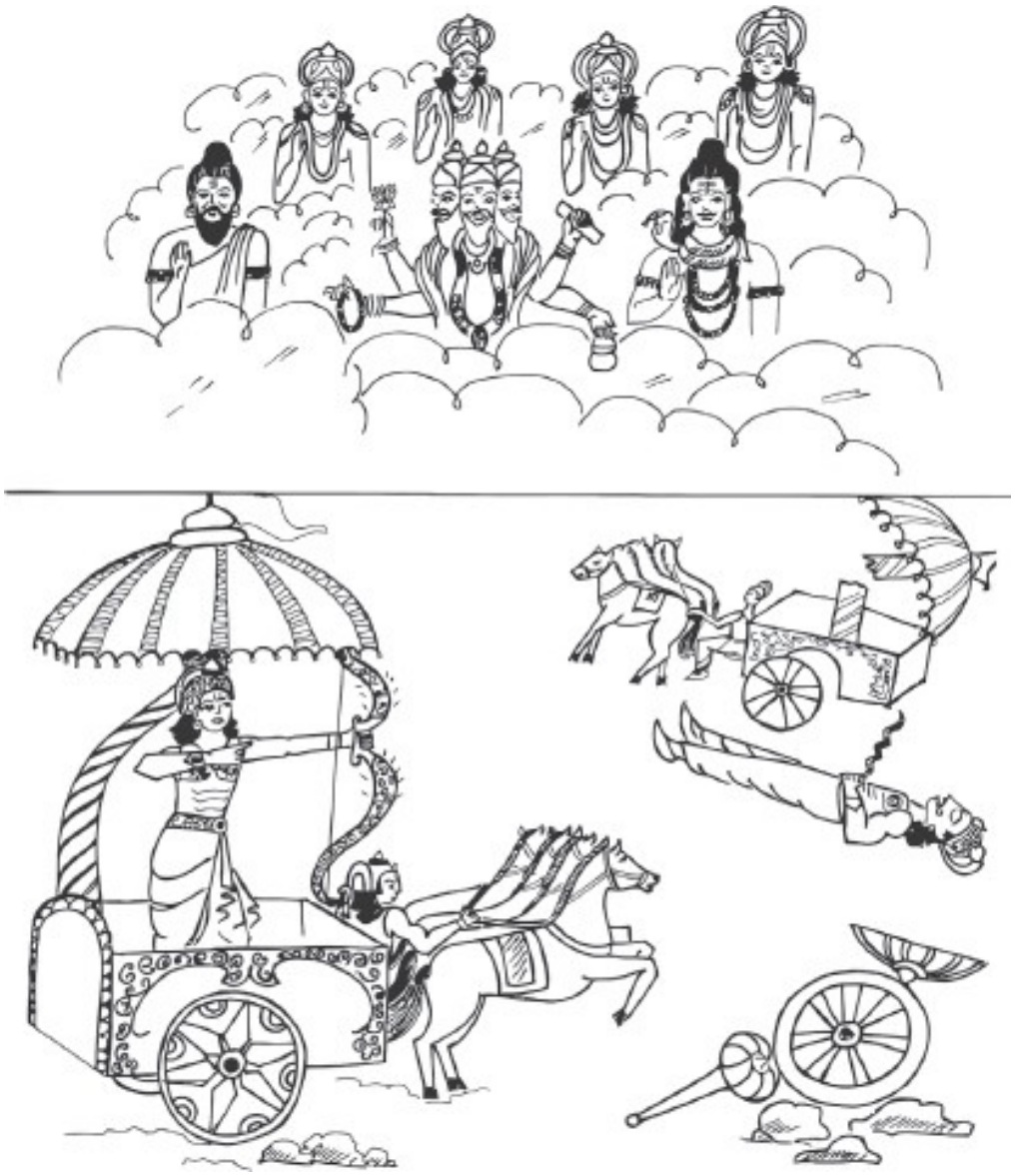

हम दोनों ने हर संभव मिसाइल और मिसाइल संयोजन का प्रयोग करते हुए अपनी लड़ाई जारी रखी। जब हम दोनों इतनी ज़ोरदार लड़ाई लड़ रहे थे, तभी राम ने एक विशेष हथियार छोड़ा जिससे मेरा सिर धड़ से अलग हो गया। वानर खुशी से उछल पड़े, लेकिन यह खुशी ज़्यादा देर तक नहीं टिकी। राम और वानर अपनी संकटकालीन स्थितियों में औधाधि पर्वत पर निर्भर थे और यह पर्वत मेरे इस तरफ था। इसलिए मेरे पास उन्नत चिकित्सा तकनीक थी, जिससे मुझे पल भर में नया सिर मिल गया। इसे और अच्छे से समझाने के लिए, यह कुछ वैसा ही था जैसे कटी हुई पूंछ वाली छिपकली की पूंछ फिर से उग आती है। इसी चिकित्सा तकनीक के करीब वह तकनीक है जिस पर आज मानव जाति स्टेम सेल थेरेपी और स्टेम सेल बैंकिंग के क्षेत्र में कड़ी मेहनत और शोध कर रही है।

युद्ध सात रातों और सात दिनों तक बिना रुके चलता रहा। राम ने सौ से अधिक बार मेरा सिर काटने का प्रयास किया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मेरी इस उन्नत चिकित्सा ने राम और सभी वानरों को आश्चर्यचकित कर दिया। राम समझ नहीं पा रहे थे कि मेरे विरुद्ध कौन सा हथियार इस्तेमाल करें। अंत में मैथिली ने राम से ब्रह्म अस्त्र का प्रयोग करने का अनुरोध किया। राम ने एक विशाल सर्प के आकार का ब्रह्म अस्त्र निकाला। मेरे पास उसका कोई प्रतिकार नहीं था। ब्रह्म अस्त्र मेरे सीने को भेदकर दूसरी ओर से निकल गया। इसने मेरे शरीर के अधिकांश अंगों को नष्ट कर दिया और मेरी चिकित्सा शक्ति उसका मुकाबला नहीं कर सकी। मैं गिर पड़ा। मैंने रावण के रूप में अंतिम सांस ली।

मिशन पूरा हुआ

मेरा मिशन पूरा हुआ... मैं जया के रूप में आनंदपूर्वक स्वर्ग की ओर रवाना हुई।

विभीषण रो पड़ा। वह मेरा भाई था, फिर भी उसने सत्य के लिए संघर्ष किया। और फिर भी... जीतने के बावजूद वह नीरस था। राम ने विभीषण से कहा, "जीतना या हारना हमारे हाथ में नहीं है, हमारे हाथ में है अपने विश्वासों के लिए खड़े रहना: न्याय, अच्छाई और सत्य। बाकी सब हमें परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए। तुम्हारा भाई रावण साधारण मनुष्य नहीं था। वह स्वर्ग के मार्ग पर है। उसने निडर होकर युद्ध किया। वह एक योद्धा की तरह शहीद हुआ और वह एक भव्य विदाई का पात्र था।" इतना कहकर उन्होंने उसे मेरे पार्थिव शरीर के अंतिम संस्कार करने के लिए भेजा। बाद में राम ने लक्ष्मण के माध्यम से विभीषण को लंका का राजा बनाया।

जया के रूप में, मैं प्रसन्न थी। मैं आनंदपूर्वक स्वर्ग की ओर चल पड़ी। रास्ते में मैंने वैकुंठ में श्री देवी और श्री हरि को लंका में एक भव्य लीला करते देखा। लगभग एक वर्ष तक मेरे देश में, मेरी हिरासत में (अर्थात भाड़ की हिरासत में) रहने के बावजूद, सीता देवी ने अपनी पवित्रता को संसार के समक्ष सिद्ध करने के लिए अग्नि परीक्षा दी और स्वयं को शुद्ध सिद्ध किया। अब इस पर मेरे दृष्टिकोण से विचार कीजिए: यदि सीता देवी की अग्नि परीक्षा ने उनकी पवित्रता सिद्ध की, तो क्या यह उनके प्रति मेरी निष्ठा को भी सिद्ध नहीं करती?

फिर शिव और ब्रह्मा समेत सभी देवता श्री राम के पास आए और उनके जन्म का रहस्य बताया। उन्होंने कहा कि वे श्री महा विष्णु के अवतार हैं और आगे उन्हें निर्देश दिया, “राम, रावण की मृत्यु के साथ ही पृथ्वी पर बुराई का अंत हो गया है। इस अवतार में आपका कर्तव्य है कि आप कृपा करके इस संसार के हर कोने में अच्छाई फैलाएं और वैकुंठ में महा विष्णु के पास लौट जाएं।”

यह रामयानम या रामायणम (राम की यात्रा) में रावणयानम (रावण की यात्रा) है। और याद रखना, मेरा नाम रावण है।

श्रीलंका में रामायण यात्रा

(लेखक द्वारा वर्णन)

आशा है कि आपको रावण की कहानी उन्हीं के शब्दों में पसंद आई और समझ में आई। मैं श्रीलंका में रामायण यात्रा के बारे में कुछ जानकारी साझा करना चाहूंगा और हिंद महासागर के मोती कहे जाने वाले श्रीलंका में उपलब्ध विभिन्न स्थलों और स्थानों की सैर कराना चाहूंगा।

इस यात्रा को समझने के लिए पौराणिक कथाओं, सनातन धर्म, रामायण, ऐतिहासिकता, भूगोल आदि विषयों का ज्ञान होना आवश्यक है। मैं इसे यथासंभव संक्षिप्त रखने का प्रयास करूंगा और आपको संक्षेप में उन स्थानों के बारे में बताऊंगा जहां आप आज रामायण से संबंधित द्वीप पर जा सकते हैं।

पौराणिक कथा:

प्राचीन वैदिक भूमि, जहाँ उपनिषद, वेद, शास्त्र जैसे अनेक विज्ञान और दर्शन का जन्म हुआ, आज अफगानिस्तान, पाकिस्तान, तिब्बत (अब चीन में), भारत, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार, लाओस, थाईलैंड, वियतनाम, कंबोडिया, मलेशिया, सिंगापुर, श्रीलंका, इंडोनेशिया और पापुआ न्यू गिनी में फैली हुई है। इस विस्तृत वैदिक भूमि की पौराणिक कथाओं के अनुसार, श्री महा विष्णु या श्री हरि वह सर्वोच्च शक्ति हैं जो संपूर्ण ब्रह्मांड को संचालित करती हैं। सरल शब्दों में कहें तो, इस सर्वोच्च शक्ति को हमारे प्राचीन वैज्ञानिकों, जिन्हें अक्सर ऋषि कहा जाता है, ने मानवरूप दिया। संपूर्ण ब्रह्मांड और उसमें विद्यमान हर वस्तु, जिसमें आकाशगंगाएँ, ग्रह मंडल, सजीव और निर्जीव शामिल हैं, को अपने-अपने निर्धारित धर्म या नियम का पालन करना होता है। जब भी ब्रह्मांड में कहीं भी यह धर्म विचलित होता है, तो सर्वोच्च शक्ति उस स्थान पर प्रतिस्थापन शक्ति भेजकर उसे ठीक करती है। सर्वोच्च शक्ति द्वारा पृथ्वी पर भेजी गई यह प्रतिस्थापन शक्ति या ऊर्जा, जो चीजों को पुनः व्यवस्थित करती है, को ही सर्वोच्च का अवतार या श्री महा विष्णु कहा जाता है। आवश्यक सुधार के प्रकार के आधार पर, ये अवतार हमारे ग्रह के लिए सबसे उपयुक्त रूप धारण करते हैं। ऐसा ही एक अवतार राम थे और इस अवतार के लिए परमेश्वर द्वारा निर्मित सहायक तत्व रावण था। इस अवतार के दौरान जिस तत्व का सुधार हुआ, वह था पृथ्वी पर जीवन को अच्छे और बुरे के बीच अंतर समझाना, साथ ही बेहतर जीवन स्तर स्थापित करना ताकि पृथ्वी एक बेहतर रहने योग्य स्थान बन सके। सनातन ग्रंथों में ऐसे दस अवतारों का वर्णन है और उनके नाम मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि हैं।

सनातन धर्म:

सनातन धर्म या धर्म, भौतिकी, विधि, जीव विज्ञान, मनोविज्ञान आदि विभिन्न विज्ञानों का मिश्रण है। धर्म प्रत्येक व्यक्ति और समय के साथ बदलता रहता है। ब्रह्मांड में किसी भी वस्तु का अस्तित्व या उसकी निरंतरता बनाए रखने के लिए, उसे संबंधित धर्म की सीमाओं के भीतर रहना आवश्यक है। धर्म आम

आदमी के लिए समझना बहुत जटिल होने के कारण, हमारे प्राचीन ऋषियों ने धर्मों की रचना की। धर्म वह है जो किसी व्यक्ति या लोगों के समूह के विचारों से उत्पन्न होता है। संस्कृत शब्द 'मथि' जिसका अर्थ है मन और 'मथम' जिसका अर्थ है धर्म, से यह शब्द बना है। उन महान ऋषियों द्वारा धर्मों की रचना का पूरा उद्देश्य हमें धर्म का पालन कराना था, चाहे हम वास्तव में जटिल धर्म को समझें या न समझें। ऐसे धर्म शिव, वैष्णव, बौद्ध धर्म, जैन आदि हैं।

रामायण, ऐतिहासिकता और भूगोल:

रामायण, इसका ऐतिहासिक महत्व और इससे संबंधित भूगोल, इन सभी विषयों पर एक साथ चर्चा करने से बेहतर समझ विकसित हो सकती है। सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है कि रामायण कोई धार्मिक ग्रंथ नहीं है। यह एक ऐतिहासिक ग्रंथ है जिसमें पृथ्वी पर घटित तथ्यों का दस्तावेजीकरण किया गया है। सनातन या वैदिक धर्म से संबंधित अनेक ग्रंथों में रामायण को 'इतिहास' या 'इतिहास' के रूप में उद्धृत किया गया है। 'इतिहास' शब्द 'इति-हा-आसा' से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है "इस प्रकार घटित हुआ"। इससे स्पष्ट होता है कि रामायण पृथ्वी पर घटित इतिहास है, इसलिए इसे मिथक या पौराणिक कथा नहीं माना जाना चाहिए। रामायण और इसके पात्रों का उल्लेख शिव, वैष्णव, बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म जैसे विभिन्न धर्मों में मिलता है, जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि रामायण किसी धर्म की सीमाओं से परे है।
महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण सबसे व्यापक रूप से प्रचलित और व्यापक रूप से पढ़ी जाने वाली रचना है। हालांकि, सच्चाई यह है कि रामायण की रचना केवल महर्षि वाल्मीकि ने ही नहीं की, बल्कि सदियों से अनेक लेखकों ने की है। लेखक चाहे कोई भी हो, हर कहानी में पात्र, उनके नाम और विभिन्न स्थानों जैसे जनक राज्य (अब नेपाल में), अयोध्या (अब उत्तरी भारत में), किष्किंधा (अब दक्षिणी भारत में) और लंका (श्रीलंका) का उल्लेख समान रहा है। मुख्य कथानक में दशरथ के पुत्र राजकुमार राम का अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वनवास जाना; लंका के राजा रावण द्वारा सीता का अपहरण; राम का सुग्रीव, हनुमान और उनके साथियों की सहायता से लंका में युद्ध करना; रावण का वध करना, विभीषण को लंका का अगला राजा बनाना और सीता के साथ अयोध्या लौटना - ये सभी बातें समान हैं। अनेक लेखकों द्वारा समान क्रम, संबंध, पात्रों का निर्माण और समान भौगोलिक स्थानों का उल्लेख, इस निष्कर्ष को पुष्ट करता है कि रामायण इस वैदिक भूमि का इतिहास है, न कि केवल एक व्यक्ति के मन की उपज। कम्बन द्वारा लिखित रामावतारम्, जिसे कंबा रामायणम के नाम से जाना जाता है, गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखित श्री रामचरितमानस, जिसे तुलसीदास की रामायणम के नाम से जाना जाता है, रामायणम पर दो अन्य लोकप्रिय ग्रंथ थे।

चलिए अब श्रीलंका चलते हैं:

इस द्वीप पर आज भी कुछ स्थान ऐसे हैं जिनका नाम ऐतिहासिक ग्रंथ रामायण के पात्रों के नाम पर रखा गया है। आपकी जानकारी के लिए नीचे उनमें से कुछ दिए गए हैं।

श्रीलंका में एक स्थान का नाम	रामायण के किस ऐतिहासिक पात्र के नाम पर इस स्थान का नाम रखा गया है?
छह एलियाह	सीता देवी के नाम पर रखा गया
सिस्टर कॉटन	सीता देवी के नाम पर रखा गया
उनमें से छह	सीता देवी के नाम पर रखा गया
रावण एला जलप्रपात	राजा रावण के नाम पर रखा गया
रावण गुफा	राजा रावण के नाम पर रखा गया
Ravanaboda	राजा रावण के नाम पर रखा गया
रामबोडा	श्री राम के नाम पर नामित
बदसूरत घर	इसका नाम वानर सेना की रानी और राजा सुग्रीव की पत्नी रूमा के नाम पर रखा गया है।
रावण के गर्म कुएँ	राजा रावण के नाम पर रखा गया
राम सेतु या नल सेतु	इसका नाम श्री राम और नल (उक्त पुल के सिविल इंजीनियर) के नाम पर रखा गया है।
Maha Ravana	राजा रावण के नाम पर रखा गया
रावण का घर	राजा रावण के नाम पर रखा गया

आज, यानी 2017 ईस्वी तक, श्रीलंका में 50 से अधिक ऐसे स्थल हैं जिनका रामायण से संबंध विभिन्न आधारों पर माना जाता है। जैसे-जैसे और अधिक शोध जुड़ते जा रहे हैं, यह संख्या बढ़ती जा रही है। मैं अपने अगले पुस्तक में इस विषय पर किए गए शोध के आधार पर इन स्थलों पर चर्चा करूंगा। फिलहाल, मैं आपको उन स्थानों की सूची और संक्षिप्त जानकारी दूंगा, जिन्हें आप तीर्थयात्री, पर्यटक या विशेष रुचि रखने वाले व्यक्ति के रूप में श्रीलंका यात्रा के दौरान देख सकते हैं।

अब हम जिन स्थानों पर चर्चा करने जा रहे हैं, उन सभी को मिलाकर श्रीलंका में रामायण मार्ग कहा जा सकता है। श्रीलंका में रामायण मार्ग के अंतर्गत आने वाले स्थान वे हैं जो सुविधाजनक या अर्ध-सुविधाजनक स्थानों पर स्थित हैं और जहाँ आवास, अच्छी सड़कें, सुगम मार्ग, भोजन और चिकित्सा क्लीनिक जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं। नीचे दी गई सूची देखें।

कुरूप:

स्थान: श्रीलंका का दक्षिण पश्चिमी भाग।
यह नाम रूमा और मस्साला शब्दों से लिया गया है, जहां रूमा रामायण की ऐतिहासिक पात्र हैं - वानर सेना की रानी और राजा सुग्रीव की पत्नी - और मस्साला का अर्थ है बड़ी चट्टान।
ऐसा माना जाता है कि यह चट्टान औषधि पर्वत के टुकड़ों में से एक है जिसे हनुमान राम-रावण युद्ध के दौरान लंका लाए थे।

उस्सामगोडा:

स्थान: श्रीलंका के दक्षिणी तट पर।
माना जाता है कि यह वह भूमि है जहाँ राजा रावण के पाँच हवाई अड्डों में से एक स्थित था। इसे वह स्थान भी माना जाता है जहाँ राम-रावण युद्ध के दौरान घातक मिसाइलें गिरी थीं।

Kataragama:

स्थान: दक्षिण पूर्वी श्रीलंका।
यह एक प्रसिद्ध कार्तिकेय मंदिर है, जिससे कई किंवदंतियाँ जुड़ी हुई हैं। मंदिर से जुड़ी एक मान्यता यह है कि यहीं पर इंद्र ने कार्तिकेय से युद्ध के दौरान राम की सहायता करने का अनुरोध किया था।

रावण एला गुफा और सुरंगें:

स्थान: दक्षिण मध्य श्रीलंका।
जहां गुफाओं और सुरंगों के प्रवेश द्वार पाए जा सकते हैं, जिनकी अंदर की खोज अभी बाकी है और जिन्हें राजा रावण के भूमिगत सुरंग नेटवर्क के रूप में दृढ़ता से संदर्भित किया जाता है।

रावण एला जलप्रपात:

स्थान: दक्षिण मध्य श्रीलंका।
माना जाता है कि ये जलप्रपात पौराणिक रावण युग से अस्तित्व में हैं।

मैं आपको बताऊँगा:

स्थान: मध्य श्रीलंका।
वह स्थान जहाँ सीता देवी ने पौराणिक अग्निपरीक्षा ली थी, जैसा कि रामायण में बताया गया है।

हकगला उद्यान:

स्थान: मध्य श्रीलंका।
कभी अशोक वनम का हिस्सा माने जाने वाले हकगल उद्यान आज एक सरकारी वनस्पति उद्यान है।

छठा एलियाह:

स्थान: मध्य श्रीलंका।

सीता देवी, श्री राम, लक्ष्मण और हनुमान जी का एक मंदिर। इन मूर्तियों की स्थापना किसने और कब की, इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है। मंदिर के पीछे बहने वाली एक छोटी नदी को सीता जी का स्नान स्थल माना जाता है। यहां भगवान हनुमान जी के पदचिह्न देखे जा सकते हैं। इसे अशोक वनम का हिस्सा भी माना जाता है।

Gayatri Temple:

स्थान: मध्य श्रीलंका।
नवनिर्मित गायत्री मंदिर का स्थान रामायण में वर्णित निकुबिनी होमम स्थल के रूप में माना जाता है।

रामबोडा:

स्थान: मध्य श्रीलंका।
यह स्थान वह स्थल माना जाता है जहाँ हनुमान जी ने पहली बार सीता देवी के स्थान का पता लगाया था और यह स्थान युद्ध के दौरान राम की सेना के शिविर स्थलों में से एक माना जाता है। चिन्मय मिशन ने हाल ही में इस स्थान पर हनुमान मंदिर का निर्माण किया है।

Gurulapotha:

स्थान: मध्य श्रीलंका।
ऐसा माना जाता है कि इस स्थान पर राजा रावण का विमान मरम्मत और निर्माण केंद्र हुआ करता था।

सीता कॉटन:

स्थान: मध्य श्रीलंका।
यह वही स्थान है जहां राजा रावण ने सीता देवी के लिए एक महल बनवाया था, हालांकि सीता ने इसे अस्वीकार कर दिया था।

दुर्घटना:

स्थान: मध्य श्रीलंका।
स्त्री और पुरम शब्दों से मिलकर बना यह नाम, जिसका अर्थ है स्त्रियों की भूमि। इस स्थान का सुरंग मार्ग से जुड़ाव है और स्थानीय लोककथाओं के अनुसार, यह वह स्थान है जहाँ रावण ने युद्ध के भयंकर हो जाने पर एहतियात के तौर पर सीता को अस्थायी रूप से शरण दी थी।

कोनेस्वरम और शंकरी देवी शक्ति पीठम:

स्थान: उत्तर पूर्वी श्रीलंका।
आज कोनेस्वरम शिव मंदिर और शाकरी देवी शक्ति पीठम एक ही स्थान पर स्थित हैं। कोनेस्वरम को वह स्थान माना जाता है जहाँ राजा रावण ने भगवान शिव की तपस्या की थी। स्थानीय लोगों का मानना है

कि श्री राम ने ब्रह्महत्या दोष (रावण द्वारा ब्राह्मण की हत्या का पाप) से मुक्ति पाने के लिए चार लिंगों में से एक के रूप में यहाँ शिवलिंग स्थापित किया था। शाकरी देवी शक्ति पीठम को रावण के युग से भी पहले, अनादि काल से इस भूमि पर एक शक्तिशाली उपस्थिति माना जाता है।

रावण के गर्म कुएँ:

स्थान: उत्तर पूर्वी श्रीलंका।
यह वही स्थान था जहां राजा रावण ने अपनी माता के अंतिम संस्कार की रस्में निभाने के लिए कुएं खुदवाए थे।

राम सेतु या नल सेतु:

स्थान: उत्तर पश्चिमी श्रीलंका।
यह वह पौराणिक संरचना है जिसे वानर सेना ने समुद्र पार करने के लिए बनवाया था। प्राकृतिक आपदाओं और ग्लोबल वार्मिंग के कारण यह संरचना सन् 1400 ईस्वी के उत्तरार्ध में जलमग्न हो गई। आज भारत में धनुष कोटि और श्रीलंका में तलाई मन्नार के बीच 16 स्थानों पर यह संरचना रेत के टीलों के रूप में दिखाई देती है। इन स्थानों पर जाने के लिए विशेष अनुमति और सुरक्षा गार्ड की आवश्यकता होती है।

तिरुकोणेश्वरम:

स्थान: उत्तर पश्चिमी श्रीलंका।
स्थानीय लोककथाओं के अनुसार, यह श्री राम द्वारा स्थापित चार लिंगमों में से एक और स्थान है।

Manavari:

स्थान: पश्चिमी श्रीलंका
स्थानीय लोककथाओं के अनुसार, यह श्री राम द्वारा स्थापित चार लिंगमों में से पहला है और यहाँ स्थित इस लिंगम को राम लिंगम कहा जाता है। अंतिम और चौथा लिंगम रामेश्वरम का माना जाता है, जो वर्तमान में दक्षिण भारत में स्थित है।

मुन्नेस्वरम:

स्थान: पश्चिमी श्रीलंका।
ऐसा माना जाता है कि यह मंदिर राम के लंका आने से भी पहले से अस्तित्व में था। ऐसा माना जाता है कि भगवान शिव ने मुन्नेस्वरम की अपनी यात्रा के दौरान भगवान राम को शिवलिंग स्थापित करने का सुझाव दिया था। स्थानीय लोगों का यह भी मानना है कि मुन्नेस्वरम नाम भगवान राम ने ही इस मंदिर को दिया था।

केलानिया विभीषण मंदिर:

स्थान: पश्चिमी श्रीलंका।

रावण युग के बाद, विभीषण ने राज्य पर अधिकार कर लिया और केलानिया को अपनी प्रशासनिक राजधानी बनाया। यहाँ विभीषण के सम्मान में निर्मित एक मंदिर देखा जा सकता है। यह भी दर्ज है कि भगवान बुद्ध ने श्रीलंका की अपनी पहली यात्रा के दौरान विभीषण मंदिर के दर्शन अवश्य किए थे।

रामायण पथ/रामायण यात्रा की पवित्रता

श्रीलंका में:

श्रीलंका में रामायण यात्रा या रामायण पथ उन सभी लोगों के लिए एक अनिवार्य अनुभव है जो रामायण और सनातन धर्म में विश्वास रखते हैं। धर्म की परवाह किए बिना, हर किसी को जीवन में कम से कम एक बार इस पथ पर अवश्य जाना चाहिए, क्योंकि यह हमें मानव जाति के अब तक ज्ञात और प्रलेखित सबसे प्राचीन इतिहास से रूबरू कराता है।

पुस्तक में नामों की सूची

1. श्री राम / राम
    1.1. विष्णु
    1.2. Maha Vishnu
    1.3. Sri Maha Vishnu
    1.4. श्री हरि
    1.5. प्रभाव
    1.6. Brahmanda Nayaka
2. सीता देवी / सीता
    2.1. श्री देवी
3. रावण
    3.1. जया
    3.2. लंकादेश्वर
    3.3. हिरण्यकश्यप
    3.4. शिशुपाल
4. Kumbhakarna
    4.1. विजया
    4.2. Hiranyaksha
    4.3. Dantavaktra
5. हनुमान
    5.1. अंजनेय
6. Mandodari
7. नागतलपा (सांप से बना एक पलंग जिस पर श्री हरि निवास करते थे)
8. सनक (हमारे कुमार)
9. सनत कुमार (हमारे कुमार)
10. सनंदन (कुमारों में से)
11. सनातन (कुमारों में)
12. ब्रह्मा
13. Sri Vishrava Maharshi / Vishrava Mahamuni
14. Kaikasi

15. Vibhishana
16. Mandakini
17. क्योंकि
18. शिव / भगवान शिव
    18.1. परमेश्वर
19. Meghanath
    19.1. इंद्रजीत
20. इंद्र
    20.1. देवेंद्र
21. सूर्पनखा
22. कारा
23. दुशाना
24. लक्ष्मण
25. मारिचा
26. Mandodhari
27. Jataayu
28. सुपार्वा
29. Sampathi
30. कदंबा
31. सुग्रीव
32. चुनाव
33. रूमा देवी / रूमा
34. Jambavanta
35. दें
36. महाबला
37. नाला
38. Gavaksha
39. उल्कामुका
40. आशा
41. मदना
42. Amgadha

43. लंकानी
44. जंबुमाली
45. Virupaksha
46. यापाक्ष्यु
47. धूरदारा
48. रेलवे की ओर
49. बसाकारा
50. Akshya
51. प्रहस्त
52. Dushmukha
53. Vajradanushta
54. Yamasatra
55. मैं खो गया हूँ।
56. सरधू
57. सारा
58. वे
59. Swathada
60. Kumudha
61. संकेत
62. Sarabha
63. Mohodhara
64. Vidyujihna
65. सरमा
66. अविग्धा
67. Malyavantha
68. प्रहस्त
69. Mahaparvyu
70. Mahodara
71. आदत
72. मेरी
73. Prajunga

74. कीट
75. सरेनु
76. विद्युन्माली
77. तीन हथियार
78. सुज़ाना
79. गरुड़
80. Dhumraksha
81. अकम्पा (रामव का पुत्र)
82. अकंपा (सेना-पति: प्रमुख कमांडर)
83. उससे प्यार करना
84. Maindha
85. द्विवेद
86. Naranthaka
87. कुम्भा
88. महानाद्रा
89. सम्मुन्नथा
90. Durmuka
91. थारा
92. आपका नाम
93. Vedavathi
94. पार्वती
95. नुन्देश्वर
96. Rambha
97. Pumjikastala
98. Yupaaksha
99. द्विजिह्वू
100. ग्रीष्मकाल
101. Vitardhana
102. रुशाना
103. Dhumra
104. Dwividha

105. पानास
106. ट्राइसेराटॉप्स
107. अथिकाया
108. Devanthaka
109. Makaraksha
110. Maranthaka
111. दान्यामालिनी
112. Dvividha
113. Gandhamaadhana
114. अंगासा
115. Mahaparsu
116. Maathali
117. अगस्त्य

आभार

जब एक पिता अपने छोटे बच्चे के लिए फल लाता है, तो बच्चा बड़ी सहजता से फल की मिठास और अपने पिता के प्यार का आनंद लेता है। उतनी ही सहजता से बच्चा फल को उस तक पहुंचाने का श्रेय अपने पिता को देता है। लेकिन वास्तव में, मिट्टी से लेकर बारिश तक, किसान से लेकर व्यापारी तक, थोक विक्रेता से लेकर खुदरा विक्रेता तक, बच्चे के चेहरे पर उस मुस्कान को लाने में कई अनदेखे कारक शामिल होते हैं।

इसी प्रकार, आप सभी मुझे इस पुस्तक के लेखक के रूप में देख सकते हैं, लेकिन इस लेखक के लेखक बनने और इस साहित्य को लिखने के पीछे कई अदृश्य शक्तियाँ शामिल हैं। मैं उन सभी को धन्यवाद देना चाहता हूँ और उनमें से कुछ का नाम यहाँ लेना चाहूँगा।

मेरे माता-पिता श्री नागेश्वर राव संकुरात्री और श्रीमती प्रभावाती संकुरात्री ने मुझे बचपन में प्रेमपूर्ण, प्रेरणादायक पौराणिक कहानियाँ सुनाकर पाला-पोसा। हर रात सोने से पहले मैं अपने घर की छत पर तारों से ढके खूबसूरत आकाश में सो जाता था, जहाँ चाँद मेरी रात की रोशनी बन जाता था। मेरे पिता को किताबें इकट्ठा करने का शौक है; हमारा घर एक छोटी लाइब्रेरी है जिसमें लगभग पचास वर्षों में एकत्रित की गई कुछ दुर्लभ और उत्कृष्ट लिपियों का संग्रह है। निःसंदेह, उनके पुस्तक संग्रह ने मुझे इस पुस्तक को लिखते समय कई पहलुओं को तुरंत समझने में मदद की। मेरी माँ जन्मजात कलाकार हैं, लेकिन फिर भी खुद को आजीवन विद्यार्थी मानती हैं और समय-समय पर विभिन्न कलाकारों से अपनी कला को निखारने के लिए सीखती रहती हैं। इस पुस्तक के लिए चित्रकार की तलाश करते समय वे मेरी पहली मार्गदर्शक रही हैं।

मेरी पत्नी श्रीमती श्रीदेवी संकुरात्री को उनके प्रेम और अपार सहयोग के लिए धन्यवाद, जिन्होंने घर पर छोटे बच्चे के साथ व्यस्त रहने के बावजूद विभिन्न स्रोतों से एकत्रित सभी संदर्भों को पढ़कर मुझे सुनाया। उनके सहयोग से मुझे एकत्रित संदर्भों से कई महत्वपूर्ण बिंदुओं को नोट करने में मदद मिली और इससे मेरे लेखन में तेजी आई।

मेरी मित्र श्रीमती अनुषा दिलरुक्षी जयसेकरा हेट्टियाराचिगे डोन, या यूं कहें कि सिर्फ अनुषि, रावण और उसकी विरासत पर एक पुस्तक लिखने का विचार मेरे मन में जगाने के लिए विशेष धन्यवाद की पात्र हैं।

श्रीमती पद्मिनी भवरजू एक ऑनलाइन तेलुगु प्रकाशन, www.acchamgatelugu.com की संचालक हैं और सनातन धर्म से संबंधित भारतीय महाकाव्यों और ग्रंथों का चलता-फिरता ज्ञानकोश हैं। मेरे पिता के संग्रह के बाद, किसी भी संदर्भ की आवश्यकता होने पर मैं सबसे पहले उन्हीं से संपर्क करती हूँ। जब भी मुझे प्राचीन ग्रंथों से संबंधित कोई शंका होती है या संदर्भ की आवश्यकता होती है और खोजने में कठिनाई होती है, तो वे ही मेरी खोज का साधन होती हैं।

श्रीमती उषा रेखा पुट्टाचारी, आप उन्हें पुस्तक के प्रत्येक चित्र में देख सकते हैं। इन जीवंत चित्रों को इस युवा कलाकार के हाथों से सजीव बनाया गया है।

श्री रामबाबू इनाकोटी, एक युवा प्रतिभाशाली चैंपियन और कवर पेज के चित्रण के पीछे के व्यक्ति हैं।

श्री वीरा रमना रेड्डी पापिल्लुगारी, सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी, लेकिन दिल और आत्मा से युवा, मेरे शुभचिंतक जो मेरे पड़ोस में रहते हैं, एक और असाधारण सज्जन हैं जिन्होंने इस पुस्तक को लिखने में शुरू से ही मेरा प्रोत्साहन किया है। मेरे द्वारा लिखे गए प्रत्येक अध्याय के बाद, वे मेरे पहले समीक्षक होते हैं।

श्री नारायण मूर्ति पेडापुडी, जो सॉफ्टवेयर उद्योग में कार्यरत एक अच्छे मित्र और शुभचिंतक हैं, एक अन्य व्यक्ति हैं जिनसे बहुत प्रोत्साहन मिलता है।

श्री डॉ. सुब्रमण्यम अन्नदानम और श्री डॉ. विजया सारधि वड्डे, विद्वान और लेखक, उनके आशीर्वाद और मुझे दिए गए अपार सहयोग के लिए मैं उनका आभारी हूँ। पुस्तक लिखते समय कई बार जब मैं अटक गया और कलम आगे बढ़ाने में कठिनाई महसूस हुई, तब इन्हीं दोनों ने मुझे ऐसे सुझाव दिए जिनसे मेरी लेखन शैली विकसित हुई।

अंत में, मैं क्रॉसवर्ड बुकस्टोर्स लिमिटेड की "द राइट प्लेस" पहल की पूरी टीम को धन्यवाद देना चाहता हूं, जिसमें अनुप जेराजानी, इंदुर वासवानी, मनीष पुरोहित, विनीता रामचंदानी, नीना गुप्ता और कई अन्य लोग शामिल हैं, जिन्होंने इस पुस्तक को पेशेवर तरीके से प्रकाशित करने में अपना योगदान दिया।

आपका सदा,

बाला वेंकटेश्वर राव संकुरात्रि

संदेश

Isura Devapriya

श्री बाला वेंकटेश्वर राव संकुरात्री द्वारा रावण और उनके युग पर लिखे गए साहित्य को पढ़ने के बाद, मुझे यह संदेश भेजने में अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

यह साहित्यिक कृति उत्कृष्ट है और निःसंदेह इस पुस्तक में अपार संभावनाएं हैं। रावण द्वारा कथावाचन कराने का विचार कल्पना से परे है और इसे पढ़ते समय मैं प्राचीन काल में खो गया। रावण के पृथ्वी पर जन्म का उद्देश्य और किस प्रकार श्रीलंका ने रावण को मृत्यु के निकट लाने में सहायता करके इस ग्रह पर पवित्र भूमि का निर्माण किया, इसका सुंदर वर्णन किया गया है। कुबेर और रावण के काल में द्वीप की महिमा स्वर्णिम श्रीलंका के पुनर्निर्माण की प्रेरणा देती है। पुस्तक में विभीषण और श्री राम का सहभागिता सदियों से चले आ रहे पड़ोसी देशों के सहयोग को रेखांकित करता है। इस पुस्तक के माध्यम से मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि भारत-श्रीलंका के संबंध घनिष्ठ मित्रों से सदा के लिए सर्वश्रेष्ठ मित्रों में परिवर्तित होंगे।

मैं पूरी दुनिया को इस पुस्तक को पढ़ने और सबसे प्राचीन दस्तावेजी इतिहास की यादों को जानने के लिए रामायण मार्ग पर श्रीलंका की यात्रा करने की सलाह देता हूं।

माननीय. इसुरा देवप्रिया

मुख्यमंत्री

पश्चिमी प्रांत, श्रीलंका

संदेश

उदय नानायक्कारा

“मेरा नाम रावण है” नामक रचना में रावण के शासनकाल के दौरान और उससे पहले भी श्रीलंका की महानता का स्पष्ट वर्णन है। रावण के इस धरती पर आने और श्रीलंका को ईश्वर द्वारा सौंपे गए अपने कार्य को पूरा करने के लिए पवित्र भूमि के रूप में चुनने का कारण बखूबी लिखा गया है।

यह साहित्य निश्चित रूप से श्रीलंका और भारत दोनों देशों के बीच बेहतर सांस्कृतिक और पर्यटन संबंधों को मजबूत करने में सहायक होगा, जिससे प्रतिष्ठित "रावण" की महानता का बखान होगा और पाठकों को "रावण" के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने और श्रीलंका में मौजूद "रामायण मार्ग" का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकेगा।

Hon. Udaya Nanayakkara

Chairman,

Sri Lanka Tourism Promotion Bureau, Sri Lanka

तानिकेला का संदेश

तनिकेला भरानी

रामायण भारत की जैविक नस है और हर व्यक्ति के रक्त में बसी है। उसी प्राचीन ग्रंथ को इतने नए और ताजगी भरे अंदाज में दोबारा प्रस्तुत करना मुझे विस्मित कर गया।

किसी व्यक्ति के लिए प्राचीन ग्रंथ को इस नए दृष्टिकोण से पुनर्लेखन करना तभी संभव है जब उसके पास विषय के प्रति सर्वोच्च स्तर की रुचि, शोध और गहन अध्ययन के साथ-साथ असाधारण समर्पण भी हो। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह रामायण रावणब्रह्मा के दृष्टिकोण से लिखी गई है और इस पुस्तक को पढ़ते समय मैं कई बार आश्चर्यचकित हुआ। जिन प्रसंगों को हम पहले से जानते हैं, उन्हें पूरी तरह से अलग ढंग से प्रस्तुत करना, फिर भी मूल भाव को बनाए रखना, वास्तव में एक अद्भुत प्रतिभा है।

श्रीमद् रामायणम को पढ़ने की सहज प्रवृत्ति हमेशा से ही रही है और यह पुस्तक हमारे मन और चिंतन में एक नया अनुभव जोड़ेगी।

बाला वेंकटेश्वर राव धन्य हैं।

Sivoham

तनिकेला भरानी

भारतीय फिल्म अभिनेता,

लेखक और निर्देशक

******* समाप्त *******

sjeet

कॉपीराइट © 2017 बाला वेंकटेश्वर राव संकुरात्रि
सभी अधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी भाग का पुनरुत्पादन या किसी भी प्रकार से उपयोग नहीं किया जा सकता है, सिवाय पुस्तक समीक्षा में संक्षिप्त उद्धरणों के उपयोग के।
पहली बार 2017 में प्रकाशित
मुद्रित पुस्तक ISBN: 978-8-19342-992-1
प्रकाशन सुविधा: ऑथर्सअपफ्रंट

द राइट प्लेस
क्रॉसवर्ड बुकस्टोर्स लिमिटेड द्वारा एक प्रकाशन पहल।
उमंग टावर, दूसरी मंजिल, माइंडस्पेस, लिंक रोड के पास,
मलाड पश्चिम, मुंबई 400064, भारत।
वेबसाइट: www.TheWritePlace.in
फेसबुक: TheWritePlace.in
ट्विटर: @WritePlacePub
इंस्टाग्राम: @WritePlacePub

WORLDWIDE HINDU

A PRESTIGIOUS PROJECT ON ANCIENT TEMPLES, ARCHITECTURE AND HERITAGE LOCATIONS OUTSIDE INDIA

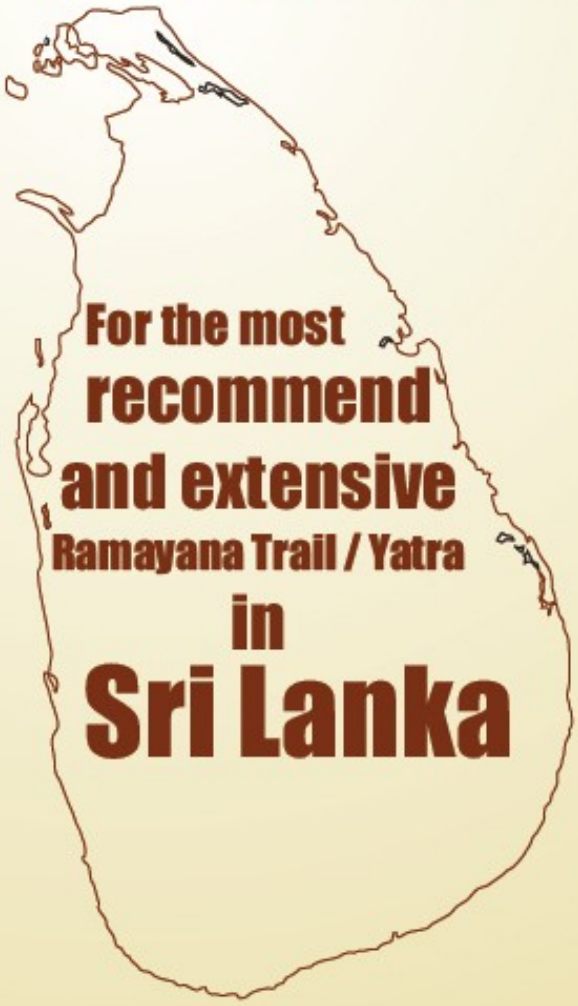

For the most
recommend
and extensive
Ramayana Trail / Yatra
in
Sri Lanka

Contact:
Phone: +91 8121 000 999
worldwidehindu@gmail.com
www.worldwidehindu.com